

# यूनियन धारा Union Dhara

जिल्द 41, सं. 4 Vol. XXXXI, No.4, मुंबई

अक्टूबर - दिसंबर, 2016



'सतर्कता अपनाओ,  
संस्था आगे बढ़ाओ'

"Be Alert,  
Create Value"

# अनुक्रमणिका Contents

महाप्रबंधक (मा.सं.)

आर. आर. मोहंती

General Manager (HR)

**R. R. Mohanty**

संपादक

सविता शर्मा

Editor

**Savita Sharma**

संपादकीय सलाहकार

देबज्योति गुप्ता

एच.एन. सक्सेना

केशव बैजल

राम गोपाल सागर

Editorial Advisors

**Debjyoti Gupta**

**H. N. Saxena**

**Keshav Baijal**

**Ram Gopal Sagar**

**Printed and published by Savita Sharma  
on behalf of Union Bank of India  
and printed at SAP Print Solutions Pvt. Ltd.  
Lower Parel, Mumbai-400013**

**and published at Union Bank Bhavan,  
239, Vidhan Bhawan Marg,  
Nariman Point, Mumbai-400021.**

**Editor -Savita Sharma.**

**E-mail: savita.sharma@unionbankofindia.com**

**Our Address : Union Dhara,**

**11th Floor, Union Bank Bhavan,**

**239, Vidhan Bhavan Marg,**

**Nariman Point, Mumbai - 400 021.**

**E-mail: uniondhara@unionbankofindia.com**

**Mob. No. 9920037916**

**Tel.: 22020853 / 22896545 / 22896590**

यूनियन धारा UNION DHARA  
अक्टूबर - दिसंबर, 2016 OCT - DEC, 2016

प्रकाशन तिथि : 08.12.2016

मुख्य सतर्कता अधिकारी का संदेश .....	4	Vigilance:	
Editorial.....	7	A Neural Activity .....	44
हाथों में हाथ दो(कविता) .....	8	DO's and DON'Ts .....	45
वैश्विक परिदृश्य.....	9	Cyber Crime .....	46
Why Vigilance? .....	12	डिजिटल बैंकिंग में बरती	
साहित्य जगत से .....	15	जाने वाली सावधानियाँ.....	48
राष्ट्र की प्रगति(कविता) .....	17	मन की बातें.....	50
विद्यालयों में सतर्कता.....	18	Spirited .....	51
Vigilance issues		बैंक का स्थापना दिवस.....	52
encountered .....	20	Integrity.....	54
Project Utkarsh .....	22	शिखर की ओर .....	55
सतर्कता -एक जीवन शैली .....	23	बधाई .....	55
सतर्कता सुरक्षा की जननी है.....	24	आजादी(कविता) .....	55
Uni One Diary .....	26	Machineries Of Vigilance.....	56
The Capital Conundrum .....	27	Keeping Eyes and Ears Open.....	58
सतर्कता & मेडिकल इंश्योरेंस .....	28	सतर्कता -सावधानी से .....	59
शुभमस्तु.....	29	भ्रष्टाचार और दैनिक जीवन	
ग्राम सभाओं में बैंक द्वारा सतर्कता .....	30	में सतर्कता .....	60
What's New .....	32	व्यंजन .....	61
Legally Speaking.....	34	जिंदगी(कविता) .....	61
Online Whistle Blowing		पुरस्कार और सम्मान.....	62
Mechanism.....	35	Bal Pratibha .....	63
दैनिक जीवन में भ्रष्टाचार निवारण में		Face in the Union Bank	
हमारी भूमिका.....	36	Crowd .....	64
हमें गर्व है.....	37	समाचार दीर्घा .....	66
हमारी योजनाएँ .....	37	Banking Crossword.....	70
चीं चीं करती आई चिड़िया .....	38	परिपत्रों की सूची .....	71
सेवा निवृत्त जीवन से .....	40	Banking Quiz .....	72
भावबोध बनाम मुक्तिबोध .....	41	हेल्थ टिप्स और चरक का कोना .....	74
ग्रामीण परिवेश .....	42	आपकी पाती.....	75

SPECIAL FEATURE ON  
**VIGILANCE**



इस पत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

Designed and Printed at SAP Print Solutions Pvt. Ltd., Lower Parel, Mumbai - 400 013.

# परिदृश्य

## PERSPECTIVE



प्रिय यूनियनाइट साथियो,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि यूनियन धारा द्वारा सतर्कता संबंधी मामलों में समग्र रूप से जागरूकता लाने के लिए सतर्कता विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है. यह प्रयास पूर्णतः समसामयिक और प्रासंगिक है.

जीवन में सदैव सतर्क रहना महत्वपूर्ण है तथापि, वित्तीय क्षेत्र में यह सतर्कता और भी गंभीर हो जाती है. बैंक आम जनता के धन के ट्रस्टी होते हैं. इसी कारण से अपने कार्यों के प्रति जनता का विश्वास बनाए रखना आवश्यक है. इस दृष्टि से निवारक सतर्कता कारगर होती है. निवारक सतर्कता के लिए दैनंदिन कार्यों में उच्च स्तरीय चौकसी, जागरूकता तथा सत्यनिष्ठा की आवश्यकता होती है. यहाँ तक कि अपने सहकर्मियों तथा परिजनों से व्यवहार करते समय भी सतर्क रहने की आवश्यकता होती है.

निवारक सतर्कता को प्रोत्साहन देने, कार्य संस्कृति का हिस्सा बनाने तथा स्टाफ सदस्यों को इस आशय के प्रति समझ विकसित करने के लिए कि, 'सतर्कता उनके स्वयं के लिए ही हितकारी है', यूनियन बैंक ने कई नवोन्मेषी प्रयास किए हैं. हमारे लिए ये उपयोगी भी सबित हुए हैं. हमारे इन प्रयासों को सराहा भी गया है. हमारे बैंक को सजग बैंकर होने तथा सतर्कता संबंधी श्रेष्ठ प्रणालियों को अपनाने के उपलक्ष्य में प्राप्त कई पुरस्कार इसका प्रमाण हैं.

आज, जब यूनियन धारा का यह अंक आपके समक्ष है. आइये, हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए भरसक प्रयास करने की शपथ को याद करें. हम एक पारदर्शी तथा सत्यनिष्ठ युग की शुरुआत करें ताकि एक स्वस्थ समाज और स्वस्थ अर्थव्यवस्था का निर्माण कर सकें.

मुझे अपने यूनियनाइट साथियों पर गर्व तथा अकथनीय संतोष है कि उन्होंने कठिन अवसरों पर आई चुनौतियों का सामना सदैव सफलतापूर्वक किया है. मेरे स्टाफ सदस्यों ने विमुद्रीकरण के वर्तमान अवसर पर भी जनता को सेवार्ये प्रदान करते समय अपनी कर्तव्यनिष्ठा, समर्पण, धैर्य तथा सकारात्मक व्यवहार से अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है. इसके लिए मैं आप सभी की प्रशंसा करता हूँ.

आप सभी को मेरी ओर से क्रिसमस तथा नव वर्ष की मंगलकामनाएँ.

शुभकामनाओं सहित,

आपका

प्रतिकारी..

अरुण तिवारी

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

Dear Unionites,

I am happy to know that 'Union Dhara' is bringing a special issue on 'vigilance', to help raise awareness about vigilance matters holistically. The choice of theme is indeed timely.

Being vigilant is important in all walks of life; however, it becomes more critical in the financial sector. Banks are trustees of public money. Maintaining public trust, therefore, is essential for our working; and 'Preventive Vigilance' is an enabler in this direction. Preventive vigilance calls for high level of alertness, awareness and integrity in our day-to-day working, even covering the engagements with colleagues and family.

Union Bank has taken multiple initiatives over the years to promote and make preventive vigilance a part of work culture, deepening awareness among staff that 'vigilance is for our own benefit'. It has kept us in good stead. Our Bank's efforts are acknowledged with several awards for being conscientious bankers, following best practices in vigilance.

While this issue is in your hands, let us renew our pledge to work hard for the cause of eradicating corruption from all walks of life, and usher in an era of transparency and integrity, thereby building a healthier economy and society.

I take absolute pride and incredible satisfaction in the way Unionites have risen to the occasion, time and again. Unionites have set examples in the current de-monetisation affair too, with their sense of duty, devotion, patience, and resilience in delivering services to public. My compliments to each of you!

Wishing you all a very Happy New Year and Merry Christmas in advance!

With warm regards,

yours,

Arun Tiwari

Chairman & Managing Director

# मुख्य सतर्कता अधिकारी का संदेश

## अनुशासनिक कार्यवाही- मानवीय दृष्टिकोण

साथियो,

अक्सर ऐसे लोगों से मेरा सामना होता है, जो बैंकों में अनुशासन प्रबंधन की वर्तमान कार्य-प्रणाली को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। यद्यपि, वे यह मानते हैं कि अनुशासन से मानवीय मूल्यों का विकास होता है तथा किसी भी व्यावसायिक या अन्य प्रकार की संस्था के समुचित संचालन हेतु उक्त संस्था में अनुशासन का होना आवश्यक है; तथापि, वे इसके परिणामों की गलत ढंग से व्याख्या करते हुए विरोधी रुख अपनाते हैं। मेरा मानना है कि औद्योगिक स्तर पर व्याप्त इस प्रकार की अस्पष्टता की भ्रांति से शीघ्र निपटने की आवश्यकता है। वर्तमान बैंकिंग स्थिति में हम कम से कम अपने बैंक में अनुशासन प्रबंधन की अनिवार्यता के बारे में ईमानदारी से वार्तालाप की शुरुआत कर सकते हैं, जो एक सार्थक प्रयास होगा। तथापि, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि किसी विशेष धारणा या व्यवहार के विषय में कहना एक अलग बात है तथा उस पर विश्वास करना, अमल करना और दूसरों को भी उसके प्रति विश्वास दिलाना अलग बात। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि आज हम बैंकिंग के जिस दौर से गुजर रहे हैं, उसमें सामान्य व निरूत्साही रुख से बात नहीं बनने वाली है, जब तक वह एक मजबूत मानवीय दृष्टिकोण के साथ स्पष्ट, निष्कपट व आत्मीयतापूर्ण न हो। पिछले तीन वर्षों के दौरान हमारे बैंक में परिणामों के प्रबंधन का आधार मानवतापूर्ण रहा है, जिसके अनेक सजीव व प्रेरणादायक प्रसंग उपलब्ध हैं, जो इस संदेश को सार्थक सिद्ध करते हैं। याद रहे कि कथनी की अपेक्षा करनी अधिक महत्वपूर्ण होती है।

इस परिदृश्य के विषय में मैं कुछ कहना चाहता हूं। आप सभी जानते हैं कि एक स्वस्थ संगठनात्मक वातावरण के लिए अन्य बातों के साथ-साथ अनुशासित प्रशासन तंत्र की आवश्यकता होती है; जो प्राकृतिक न्याय की अवधारणा को सार्थक कर सके। हमारे बैंक में अनुशासनिक कार्यवाही की सम्पूर्ण प्रक्रिया निम्नलिखित दो मौलिक अवधारणाओं पर आधारित है:-



- (ए) जहां कहीं भी यह प्रमाणित हो जाता है कि संबंधित व्यक्ति धोखाधड़ी की गतिविधियों में लिप्त था या बाहरी पक्षों की मिलीभगत से उसने बैंक से धोखाधड़ी की है, अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए अपने प्राधिकारों का दुरुपयोग किया है या किसी अन्य पक्ष को अनुचित आर्थिक लाभ पहुंचाया है, जिससे बैंक को भारी नुकसान हुआ है, तो संस्था के व्यापक हितों की रक्षा एवं सतर्कता की दृष्टि से इस प्रकार के मामलों से निपटने में हमारा दृष्टिकोण गंभीर व कठोर दंड का होता है। ईमानदारी की कमी व दुर्भावनापूर्ण इरादे वाले प्रमाणित मामलों में दोषी व्यक्ति की बर्खास्तगी/सेवा से निष्कासन/अनिवार्य सेवानिवृत्ति के माध्यम से उससे संबंध समाप्त करने का दृष्टिकोण भी अपनाया जाता है, ताकि बैंक में उसके बने रहने से संस्थागत हितों को हानि न पहुंचे। इससे अन्य सदस्यों को एक कठोर संदेश भी मिलता है।
- (बी) जब कोई व्यक्ति कार्यप्रणाली और प्रक्रियागत अज्ञानता, मानवीय भूल, लापरवाही, परिस्थितिजन्य स्थिति या विशेष लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अति उत्साह के कारण अनुशासनिक जाल में फंस जाता है, तो हमारा दृष्टिकोण सावधानी के साथ मामले की जांच कर यह तय करना होना चाहिए कि इसमें कोई सतर्कता दृष्टिकोण शामिल है या नहीं। ऐसे मामलों में, यदि कोई दुर्भावना शामिल नहीं है और व्यक्ति की सत्यनिष्ठा पर संदेह नहीं है, तो यह सोच हो सकती है कि ऐसे व्यक्ति के बने रहने से संस्था को हानि नहीं होगी, ऐसी स्थिति में उसे कुछ सजा के साथ सेवा में बहाल रखा जा सकता है, क्योंकि उसमें अभी भी संस्थागत लक्ष्यों

के लिए योगदान करने की क्षमता और इच्छा है। ऐसे मामलों में चूक की प्रकृति के अनुरूप दंड की सजा व्यक्ति को अनुशासन सिखाने के लिए होती है, न कि इस प्रक्रिया में उसे बर्बाद करने के लिए। ऐसी चूकों की अनुशासनिक प्रक्रिया अन्य अधिकारियों को भी सबक सिखाने का काम करती है।

अतः, मैं यह बताना चाहता हूँ कि हमारे अधिकांश अनुशासनिक मामले दूसरी श्रेणी में ही आते हैं और इसी प्रकार के मामलों में लोग फँसते हैं, जिस पर तत्काल ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है; ताकि वे संस्था में बने रहें। कम से कम हमारे बैंक में इस प्रकार के मामलों में अनुशासनिक कार्यवाही को लंबे समय तक चलने वाली प्रक्रिया नहीं बनने दिया जाता है। हम इस तथ्य से भली-भाँति अवगत हैं कि कलंक लगने की वजह से अनुशासनिक कार्यवाही का सामना कर रहे व्यक्ति को सामान्यतः जबरदस्त मानसिक पीड़ा सहन करनी पड़ती है और जब मामला लंबे समय तक चलता है, तो यह न केवल उसी व्यक्ति को, वरन् उसके नजदीकी लोगों को भी मानसिक पीड़ा पहुंचाती है। चूंकि अनुशासन, नियंत्रकों की भूमिका का एक अनिवार्य अंग है, अतः ऐसे मामले सतत् सावधानी एवं सहानुभूति के साथ निपटाए जाने चाहिए; अन्यथा इससे कर्मचारियों में गलत संदेश जा सकता है तथा जबाबदेही प्रक्रिया के प्रति कर्मचारियों, विशेषकर अधिकारियों में डर की भावना पैदा हो सकती है। साथ ही लंबे समय तक कार्यवाही का सामना करने के भय से उत्साह कम होने के साथ निर्णय लेने की क्षमता भी प्रभावित होने की आशंका रहती है। मैंने ऐसा महसूस किया है कि आप सब इस मुद्दे से प्रभावी ढंग से निपटने में सफल रहे हैं; तथापि अभी भी यह कमी महसूस की जा रही है कि बैंक में विभिन्न संवर्गों में इस व्यावहारिक प्रक्रिया के प्रति पूरी जानकारी नहीं है। अतः इस प्रक्रिया से सभी को अच्छी तरह से अवगत कराये जाने की आवश्यकता है।

मेरा मानना है कि उपर्युक्त तथ्यों के मद्देनजर, स्थिति पर अपना नियंत्रण बनाये रखने की दृष्टि से निम्नलिखित बिन्दुओं पर नियमित आत्म-मंथन की आवश्यकता है :-

ए) अनुशासनिक प्राधिकारी के रूप में मामले की प्रकृति पर निर्णय लेते समय क्या हम उन मामलों में भी उचित समय देकर सतर्कता बरत रहे हैं, जिनमें बैंक के मुख्य सतर्कता अधिकारी (सीवीओ) ने एक अलग दृष्टिकोण अपनाया है? क्या ऐसे मामलों में हमने सीवीओ के साथ चर्चा करने की कोशिश की है? क्या हम जांच के नतीजों की पहले ही कल्पना कर उसके अनुसार स्थिति का अनुमान लगा रहे हैं या उक्त मामले में उपलब्ध तथ्यों से निर्देशित हो रहे हैं? क्या आप इस बात से सहमत नहीं होंगे कि इस स्तर पर एक गलत निर्णय/चूक संबंधित व्यक्ति के लिए विनाशकारी साबित हो सकती है।

बी) क्या मामले की गहन जांच की जा रही है और वह भी शीघ्रता से? जांच का मूल उद्देश्य तथ्यों का पता लगाने की प्रक्रिया है, जिसमें

अनुशासनिक प्राधिकारी को किसी कर्मचारी या अन्य के खिलाफ अनुशासनिक कार्यवाही करने का निर्णय लेने से पहले मामले के सभी तथ्यों की सम्यक् जानकारी लेनी चाहिए।

सी) जांच का कार्य पूरा होने के बाद क्या एक अनुशासनिक प्राधिकारी के रूप में हम सभी रिपोर्टों का अध्ययन करने और न्यायोचित एवं विवेकपूर्ण ढंग से आरोप तय करने के लिए अपना पर्याप्त समय और ऊर्जा लगा रहे हैं? कोई अन्याय न हो या कोई निर्दोष कर्मचारी दंडित न हो, यह सुनिश्चित करने के लिए क्या आरोपों को साबित करने हेतु प्रदत्त साक्ष्यों, प्रमाणित आरोपों की प्रकृति और प्रभाव, चूक होने के समय मौजूद कारणों/परिस्थितियों, उस व्यक्ति की ईमानदारी, निष्ठा और समर्पण भावना आदि की जांच के लिए व्यक्ति के पिछले रिकार्ड, यदि कोई हो, को ध्यान में रखा जाता है? किसी निश्चित आरोप को सिद्ध करने के लिए यदि संतोषजनक सबूत उपलब्ध न हों, तो क्या हम यह सुनिश्चित करते हैं कि कोई आरोप नहीं लगाया जाए?

डी) यहां तक कि किसी को निलंबित करते समय यह ध्यान रखा जाए कि इस प्रकार का निर्णय काफी सोच-समझकर लिया गया है, न कि अनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा अपने को बचाने मात्र के लिए। किसी आरोपित कर्मचारी को निलंबित करने का निर्णय पर्याप्त एवं ठोस सबूतों के आधार पर ही लिया जाना चाहिए, क्योंकि वास्तविक निर्णय होने से पहले ही उक्त कार्मिक के लिए यह एक बड़ी सजा हो जाती है और उससे काम लिए बिना बैंक को बहुत बड़ी राशि का भुगतान करना पड़ता है (कर्मचारी से काम लिए बिना निलंबन की तारीख से पूरी निलंबन अवधि के लिए सभी भुगतान पूर्व प्रभाव से बैंक द्वारा किये जाने होते हैं) और अंत में उसकी नौकरी में बहाली भी हो सकती है। ऐसे मामलों में सबसे गलत तो यह होता है कि अनुचित निलंबन के बाद वह व्यक्ति पूरे मनोयोग से संगठन की सेवा नहीं कर पाता है।

ई) अनुशासनिक कार्यवाही का निर्णय उपयुक्त पाये जाने पर क्या कार्यवाही पूरी करने के लिए प्रत्येक स्तर पर निर्धारित समय सीमा का कड़ाई से पालन किया जा रहा है? इसका उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि न्याय में देरी होना, न्याय से वंचित होने के समान है। अनुशासनिक कार्यवाही के दौरान विभिन्न चरणों की प्रक्रियाओं को पूरा होने में बहुत अधिक अनावश्यक विलंब होता है। एक छोटे उदाहरण के तौर पर, कोई भी अधिकारी जब अपने ऊपर लगे आरोपों के सापेक्ष स्पष्टीकरण प्रस्तुत करता है; तब भी वह उसके परिणामों के प्रति चिंतित रहता है। स्वाभाविक है कि अनुशासनिक कार्यवाही शुरू होने के बाद से कार्यवाही पूरी होने तक और अंतिम निर्णय लिये जाने तक आरोपित कार्मिक भारी तनाव और पीड़ा में रहता है। संभवतः यह ऐसा पहलू है, जिसे यदि और सुव्यवस्थित किया जाए, तो इसमें शामिल व्यक्तियों की पीड़ा को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

एफ) सतर्कता या गैर-सतर्कता से संबंधित मामलों में संवेदनशील दृष्टिकोण से दंड दिया जाना चाहिए. क्या हम इस निर्णय से उस व्यक्ति, उसके परिवार पर पड़ने वाले सामाजिक प्रभावों के प्रति संवेदनशील हैं? विशेषकर, गैर-सतर्कता के मामलों में, जहां उक्त दृष्टिकोण व्यक्ति के पक्ष में होता है, कार्यवाही में शीघ्रता के लिए कौन से उपाय किए जा रहे हैं? ऐसे लोगों को हतोत्साहित किए बिना मुख्य धारा में लाने के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं? कोई कर्मचारी बिना किसी बेईमानी के इरादे से यदि अनुशासनिक कार्यवाही में फंस जाता है और बाद में निर्दोष भी साबित हो जाता है, तो भी अक्सर संगठन के लिए नुकसान ही होता है. क्योंकि, निर्दोष होने के बावजूद वह इस अवधि में अपने लोगों और समाज में दोषी की तरह माना जाता है और समाज से दूर होता जाता है. ऐसे लोगों को बचाया जाना चाहिए तथा समुचित परामर्श कर उन्हें मुख्य धारा में वापस लाया जाना चाहिए. भले ही, ऐसे कर्मचारियों का प्रतिशत नगण्य होता है, परंतु संगठन के विकास को उनकी कुंठा और विरक्ति से हानि होती है. उन्हें मानसिक आघात और नकारात्मक भावनाओं से बाहर लाने और उनकी उत्पादकता को वापस लाने में सावधानीपूर्वक उनकी सहायता की जानी चाहिए. मैंने यह भी देखा है कि निलंबन/आरोपों के समाचार जहां बड़ी तेजी से फैलते हैं, वहीं निर्दोष साबित होने/पुनः बहाल होने/सजा कम होने के समाचार उक्त गति से नहीं फैलते हैं. क्या हम ऐसे मामलों में सजगतापूर्वक कुछ कार्य कर रहे हैं?

जी) ऋणों की विफलता के मामलों की जांच के समय एक नियंत्रक प्राधिकारी के रूप में हमें स्टाफ के उत्तरदायित्व एवं विशेष चूक के मामलों में अतिरिक्त सजग रहने की आवश्यकता है. यह एक सामान्य व्यक्ति द्वारा किया गया कार्य है. जब कभी ऋण के कागजात हमारे पास प्रस्तुत किये जाते हैं या हमारे स्तर से गुजरते हैं, तो क्या हम निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान से देखते हैं? :

1. हानि कैसे हुई तथा हानि के असली कारण क्या थे ?
2. क्या उक्त हानि, स्टाफ की लापरवाही, भूल-चूक जैसे कृत्य से हुई या परिस्थितियां उसके नियंत्रण में नहीं थीं? यदि यह लापरवाही संबंधी कृत्य था, तो लापरवाही की यथार्थ प्रकृति क्या थी? यह जान-बूझ कर या अनजाने में किया गया कृत्य था?
3. क्या कथित लापरवाही की जांच स्टाफ को सौंपे गए कार्य एवं निर्धारित मानदंडों व प्रक्रियाओं के साथ समुचित समय में की गई है? उससे संबंधित कौन से कार्य उसके द्वारा नहीं किए गए हैं तथा उसने कौन से ऐसे कार्य किए हैं, जो उसके द्वारा नहीं किये जाने चाहिए थे?
4. क्या यह सुनिश्चित किया गया है कि कथित भूल-चूक के मामले की

अनुपस्थिति में बैंक को होने वाली हानि को टाला/रोका जा सकता था? भूल-चूक को हानि के कारणों के परिप्रेक्ष्य में देखना महत्वपूर्ण है अन्यथा सारी कार्यवाही निर्धारित मानदंडों से विचलन के विवरण के रूप में तथा हानि के कारणों को इंगित किए बिना और भूल-चूक की तह तक गये बिना व्यर्थ हो सकती है.

उपर्युक्त बिन्दुओं के अंतर्गत मैंने अपनी संस्था, जो काफी सुदृढ़ तथा गतिशील है और जोखिम संबंधी कारोबार में संलग्न है, के नियंत्रक या अनुशासनिक प्राधिकारी के रूप में अनुशासनिक प्रक्रियाओं/उत्तरदायित्वों से संबंधित सिद्धांतों की व्याख्या करने का प्रयास किया है. एक बार पुनः मैं यह उल्लेख करने से अपने को रोक नहीं पा रहा हूँ कि यदि हम निष्पक्ष रूप से स्टाफ की जवाबदेही की जांच करते हैं, तो निश्चित रूप से आंतरिक मनोवैज्ञानिक संदर्भों तथा स्टाफ की जवाबदेही के जोखिम को कम करने में सफल रहेंगे, जो अक्सर ऋणों से संबंधित महत्वपूर्ण मामलों में निर्णय लेने के समय संशय में डाल देता है.

ये संवेदनशील मुद्दे काफी समय से मेरे मन में थे पर अब आप सभी के साथ इन मुद्दों को साझा कर रहा हूँ. यदि आप स्वयं इन बातों पर मनन करें; तो निश्चित रूप से इसके प्रथम पैरा में उल्लिखित अनिश्चित अवस्था की भ्रांति को अपने मन से निकाल देंगे. ऐसा करने से आप अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे सकेंगे तथा साथ ही अपने आस-पास के लोगों को भी प्रेरित करेंगे. इसके साथ ही बैंक को भी स्पष्ट, विश्वसनीय तथा जोखिम लेने योग्य वातावरण मिलेगा, जिसके परिणामस्वरूप बैंक के कारोबार में वृद्धि होगी.

शुभकामनाओं सहित,

आपका,

  
अतुल कुमार



# संपादकीय Editorial

मित्रो,

यूनियन धारा का यह अंक सतर्कता विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है. अब तक हर अंक के मेरे संपादकीय में बहुत से मुद्दों पर चर्चा की जाती रही है. लेकिन इस बार मुझे अपने संवाददाताओं और रचनाधर्मी स्टाफ सदस्यों से अपनी बात कहनी है, जो कभी अपनी लेखनी से, तो कभी अपने कैमरे से मुझे दायित्वों का निर्वहन करने में भरपूर सहयोग देते रहे हैं. एक ओर संवाददाताओं, रचनाधर्मी स्टाफ सदस्यों ने अत्यल्प सूचना-अवधि के भीतर अति विशिष्ट विषयवस्तु से संबंधित आलेखों, कविताओं तथा फोटो के रूप में सहयोग किया है, तो दूसरी ओर मेरे सक्षम और प्रबुद्ध वरिष्ठ कार्यपालकों ने कठिन परिस्थितियों में मुझे बहुमूल्य मार्गदर्शन और संबल प्रदान किया है.

मुझे कहते हुए गर्व है कि यूनियन धारा को विषय-वस्तु की कमी कभी नहीं महसूस हुई. संपादक के रूप में स्वयं को भाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे संस्था के लेखकों, कवियों, फोटोग्राफरों तथा वरिष्ठों का सहयोग बिना किसी शर्त के प्राप्त हुआ. इस सहयोग के अभाव में यूनियन धारा जैसी गुणवत्तापूर्ण द्विभाषी पत्रिका, जिसने भारतीय रिजर्व बैंक से तीन वर्षों तक लगातार प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया, के प्रकाशन का कार्य मेरे लिए चुनौतीपूर्ण होता.

यूनियन धारा की यह उपलब्धि इसके 40 वर्षों के इतिहास में एक मील का पत्थर है. इसका श्रेय मेरे प्रबुद्ध लेखकों, कवियों और फोटोग्राफर स्टाफ सदस्यों को जाता है. साथ ही साथ, अपने उन पाठकों के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करना चाहती हूँ, जिन्होंने अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अगगत कराया और हमारा हौसला बढ़ाया.

पत्रिका का संपादकीय सलाहकार मंडल नींव के पत्थर की तरह अपनी विशिष्ट महत्ता रखता है. मंडल के सभी सदस्यों के प्रति उनके द्वारा दिये गये मार्गदर्शन हेतु मैं हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ तथा विश्वास करती हूँ कि यह मार्गदर्शन एवं संबल मुझे भविष्य में भी मिलता रहेगा.

शुभकामनाओं सहित, With Best Wishes

  
सविता शर्मा Savita Sharma

Dear friends,

The Issue in your hand is with the special feature of vigilance. A good many topics have been discussed by me in my previous editorials, but this time I want to address my contributors, who have pulled all their efforts together to make me perform my duties as an editor. Where as writers and photographers have contributed in their own way, even sometimes within very short notice period, my competent and intellectual seniors have contributed by way of their valuable guidance and support in tough situations.

I proudly underline that Union Dhara never experienced crunch of qualitative and theme-based write-ups and photographs. I feel privileged as an editor having unconditional support of my seniors, writers, poets and photographers without which it would have been a challenging task to publish a qualitative bilingual magazine like Union Dhara which bagged first prize from RBI for three consecutive years.

This achievement itself is a milestone in 40 years of history of Union Dhara. The credit goes to all the dexterous writers, poets and photographers. I would also like to extend my gratitude to readers who provided us with reviews and helped us to improve.

The editorial board can be synonymized with the foundation of skyscrapers. I am grateful for the counsel provided by all the members of editorial board and believe that the same will be bestowed upon me in future as well.



# हाथ में हाथ दो, भ्रष्टाचार को मात दो

देशवासियो अब जग जाओ, हुआ नव विहान है,  
भ्रष्टाचारमुक्त हो भारत, हर नागरिक का काम है,  
सतर्क भारत, सशक्त भारत, नौजवानों का स्वर्णिम भारत,  
हल हो हर समस्या का, जीवन को नया आयाम है,  
चल पड़ी है मुहिम अब तो, मिलजुल कर साथ दो,  
हाथ में हाथ दो, भ्रष्टाचार को मात दो.



हर काम को मंजिल मिले, हर सपने को नई उड़ान,  
सभी इच्छाएँ पूर्ण हों सबकी, हर हाथ को मिले काम,  
सतयुग फिर से आ जाए देश में, ऊंच-नीच का भेद तमाम,  
कोई नहीं कमजोर रहे, देश हो जाए समृद्ध, बलवान,  
ऐसी मंशा हो हम सबकी, आगे बढ़ आवाज दो,  
हाथ में हाथ दो, भ्रष्टाचार को मात दो.

नई सोच से नई पहल हो, नए प्रयोग की हो शुरुआत,  
नई पीढ़ी संग नई योजनाएं, नए दौर की हो अब बात,  
भ्रष्टाचार का अंत हो, उपजें ऐसे नए विचार,  
नई ऊर्जा, नई उमंग, नया प्रवाह, नया आगाज,  
सामर्थ्यवान हों, निष्ठावान हों, ऐसी अब सौगात दो,  
हाथ में हाथ दो, भ्रष्टाचार को मात दो.

सत्यनिष्ठा से काम करके, पूरा सबका अरमान हो,  
रहे न कोई वंचित यहां, व्यवहार एक समान हो,  
भाईचारा प्रगाढ़ हो और सुदृढ़ भारतीय समाज हो,  
चरित्रवान बने हर कोई, हर रास्ता आसान हो,  
विश्व में भारत छा जाए, ऐसा नव प्रभात दो,  
हाथ में हाथ दो, भ्रष्टाचार को मात दो.

विकास की धारा बहे, हर चेहरे पर मुस्कान हो,  
शिक्षा, स्वास्थ्य उत्तम दर्जे के, खुशहाल हर इंसान हो,  
कदम से कदम मिलते रहें, देश निरंतर आगे बढ़े,  
आपस में मिलजुल कर जिएं, एक दूसरे का ध्यान हो,  
आशाएं अंगड़ाई लें, आगे बढ़ आवाज दो  
हाथ में हाथ दो, भ्रष्टाचार को मात दो.

विजय कुमार पाण्डेय  
क्षे.का., पटना





# वैश्विक परिदृश्य

## सत्यनिष्ठा प्रोत्साहन एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनसहभागिता

भ्रष्टाचार की ऐसी कोई मानक परिभाषा नहीं है, जिसे हर देश में समान रूप से स्वीकार किया जाता हो। हालांकि, विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा भ्रष्टाचार की संभव परिभाषा पर कई वर्षों से चर्चा की गई है। "सक्रिय" एवं 'निष्क्रिय' भ्रष्टाचार की परिभाषा पर सहमति भी व्यक्त की गई है। आज, अनेक राष्ट्र इस बात से सहमत हैं कि कुछ राजनीतिक या वाणिज्यिक व्यवस्थाएं ही भ्रष्ट हैं और भ्रष्टाचार को रोकने तथा इससे लड़ने के उपायों को प्रतिबंधित करती हैं। जहां तक भ्रष्टाचार से लड़ने में अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई की बात है, सरकारी संगठनों जैसे आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (ओईसीडी), संयुक्त राष्ट्र अमरीकी राज्य संगठन (ओएएफ), यूरोपीय परिषद, जिसके द्वारा भ्रष्टाचार के खिलाफ राज्यों के समूह (जीआरईसीओ) का गठन किया गया है। एशियाई विकास बैंक (एडीबी), अफ्रीकी संघ (एयू) और गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ) जैसे विश्व आर्थिक मंच (डबल्यूईएफ) और ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल (टीआई) तथा सेंटर फॉर पब्लिक इंटीग्रिटी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हाल के वर्षों में, दोनों प्रकार के संगठनों द्वारा एक दूसरे के सहयोग में वृद्धि हुई है और सामूहिक वैश्विक प्रयासों से भ्रष्टाचार के बारे में अभूतपूर्व जागरूकता आई है, जिससे नागरिक और अन्य हितधारक इसके विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए प्रेरित हुए हैं। ओईसीडी/ एडीबी, यूरोपीय परिषद और संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में कई प्रभावी अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ हुई हैं। यह सच है कि भ्रष्टाचार को पूरी तरह से समाप्त करना मुश्किल है, परंतु समन्वित प्रयासों को जारी रखकर निश्चित रूप से इस वैश्विक संकट को दूर किया जा सकता है। यह संकट न केवल विकास में बाधक है, बल्कि असमानता को भी बढ़ाता है, गरीबी लाता है और मानवीय पीड़ा का कारण बनता है। यह आतंकवाद

[भ्रष्टाचार हमें परेशान कर रहा है। लोग आक्रोशित हैं। मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि हम भ्रष्टाचार से लड़ेंगे और उन लोगों के साथ काम करेंगे, जो इसके खिलाफ हैं। भ्रष्टाचार ने देश को बर्बाद कर दिया है। मैं आपसे वादा करता हूँ कि हम पूरी ताकत के साथ भ्रष्टाचार से लड़ेंगे।]

—प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी]

और संगठित अपराध के खिलाफ लड़ाई को कमजोर करता है और विश्व स्तर पर देश की छवि को धूमिल करता है।

### ‘दुनिया का कोई भी देश भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं है’:

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल का भ्रष्टाचार अवधारणा सूचकांक, सार्वजनिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार के कथित स्तरों पर तथा सम्पूर्ण विश्व के विशेषज्ञों की राय पर आधारित है। 2015 के सूचकांक में किए गए 168 देशों के मूल्यांकन में किसी भी देश को पूरे अंक प्राप्त नहीं हुए और दो तिहाई देशों के अंक 50 से नीचे रहे, यह मूल्यांकन 0 (अत्यधिक भ्रष्ट) से 100 (अत्यंत स्वच्छ) के पैरामीटर पर किया गया। जी-20 के आधे देश इसमें शामिल हैं। विश्व के 68 फीसदी देशों में भ्रष्टाचार एक गंभीर समस्या है। लगभग छः अरब लोग भ्रष्टाचार की गंभीर समस्या से त्रस्त देशों में रहते हैं।

सार्वजनिक भागीदारी के माध्यम से भ्रष्टाचार की रोकथाम हेतु वैश्विक कार्यप्रणाली का आविर्भाव:

ऐसे विकट परिदृश्य में भ्रष्टाचार के विरुद्ध कोई भी रणनीति तब तक सफल नहीं हो सकती, जब तक वह समावेशी और सहभागितापूर्ण न हो और जिसमें जनसामान्य, समाज, मीडिया, सिविल समिति संगठनों, राजनीतिक नेताओं, सरकारी एजेंसियों और निजी क्षेत्रों सहित समाज के सभी हितधारक सम्मिलित न हों। भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई मात्र कानून बनाना और संस्थाएं बनाना ही नहीं है, बल्कि इसमें व्यक्ति के गहरे मानवीय मूल्य और नैतिकता भी निहित हैं। भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई नागरिकों की सहयोगात्मक और सभी संबंधित पक्षों की सक्रिय सतर्कता के बिना नहीं जीती जा सकती। प्रत्येक नागरिक को भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता पैदा करने के लिए जिम्मेदारी साझा करनी होगी और साथ ही यह शपथ लेनी होगी कि वह कोई अनैतिक या भ्रष्ट कार्य नहीं करेगा। जनता को सक्रिय, जागरूक, संयुक्त और सशक्त बनाना विश्व भर में भ्रष्टाचार विरोधी प्रयासों की मूल रणनीति रही है और इन वर्षों में विश्व भर में कई निर्देशित पहलें भी की गई हैं। सीमा पार से भ्रष्टाचार समाप्त करने का प्रथम प्रयास वाटरगेट व लॉकहीड घोटालों के बाद सन् 1977 में विदेशी भ्रष्ट व्यवहार अधिनियम (फॉरेन करप्ट प्रैक्टिस एक्ट) के साथ आरंभ हुआ। 1990 के दशक के मध्य में भ्रष्टाचार के खिलाफ अमेरिकी सरकार, बहुराष्ट्रीय निगमों, बहुपक्षीय उधारदाताओं और ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल जैसे गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रेरित एक वैश्विक एजेंडा से उभर कर सामने आया। सर्वेक्षणों व अर्थमितीय शोधों द्वारा ज्ञात इस वैश्विक अभियान ने अनेक परियोजनाओं को प्रायोजित किया, जिससे मीडिया का ध्यान आकर्षित हुआ। परिणामस्वरूप, विश्व बैंक व अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण प्राप्त करने हेतु भ्रष्टाचार से लड़ाई एक अनिवार्य शर्त बन गई। अक्टूबर 2003 में संयुक्त राष्ट्र ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक कन्वेंशन (यूएनसीएसी) को अपनाया। वर्ष 1996 में इसने सरकारी अधिकारियों के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय आचार संहिता' नामक एक कोड का भी प्रकाशन किया। यूएनसीएसी ने संयुक्त राष्ट्र भ्रष्टाचार निरोधक इकाई (एसीयू) को शामिल किया, जिसका कार्य भ्रष्टाचार के विरुद्ध वैश्विक कार्यक्रम

(ग्लोबल प्रोग्राम अगेंस्ट करप्शन- जीपीएसी) को लागू करना था. इसके बाद, अंतर्राष्ट्रीय कारोबारी लेनदेनों में विदेशी सरकारी अधिकारियों की रिश्वत से निजात पाने हेतु ओईसीडी कन्वेंशन(ओईसीडी रिश्वत विरोधी कन्वेंशन) आया. आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) ने भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी पर विश्व के सबसे बड़े सूचना केंद्रों में से एक ऑनलाइन ओईसीडी एंटी करप्शन रिग (<http://www.oecd.org/daf/nocorruption/>) बनाया. इस साइट पर 3000 से अधिक पुस्तकों, पत्रिकाओं, कागजातों व अन्य लेखों के साथ-साथ भ्रष्टाचार विरोधी प्रलेखन तथा कानूनों, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों तथा भ्रष्टाचार विरोधी रणनीतियों आदि के संदर्भ उपलब्ध हैं. एशिया में भ्रष्टाचार से निपटने हेतु ओईसीडी, विश्व बैंक के पूर्वी एशिया-प्रशांत क्षेत्रीय ब्यूरो के वैश्विक दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों में सहयोग करता है. यह कार्यक्रम सरकारी अधिकारियों के साथ-साथ सिविल सोसाइटी के लोगों की सहभागिता के लिए खुला है. इसकी गतिविधियों से सरकारी अधिकारियों और सिविल सोसाइटी के लोगों के बीच आपसी सहयोग को प्रोत्साहन मिलता है, जिससे गैर-सरकारी लोगों में एक सुदृढ़ नेटवर्क बनता है. इनिशिएटिव्स वेब-साइटों में शामिल देशों की मुख्य सरकारों, सिविल सोसाइटियों व अंतर्राष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी लोगों के नाम तथा उनके संपर्क पते का डाटाबेस शामिल है. एशिया व प्रशांत क्षेत्र हेतु एडीबी/ओईसीडी भ्रष्टाचार विरोधी पहल वर्ष 2006 में आरंभ हुई, जिसमें आज जापान, ऑस्ट्रेलिया, चीन, हांगकांग, भूटान व नेपाल आदि सहित कुल 28 सदस्य देश शामिल हैं. यूरोप में, यूरोपीय संघ के सरकारी अधिकारियों अथवा सदस्य देशों में भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई पर 1997 में 'यूरोपीय संघ कन्वेंशन' अपनाया गया. भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई हेतु अपने सदस्यों की क्षमता बढ़ाने के लिए 1998 में ग्रीको (GRECO) की स्थापना की गई. वर्तमान में ग्रीको में कुल 46 सदस्य देश शामिल हैं.

**पीटर एगेन**, जिन्होंने भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने पर विश्व बैंक द्वारा प्रतिबंध लगाने से हताश होकर विश्व बैंक छोड़ दिया, के द्वारा 1993 में प्रमुख भ्रष्टाचार विरोधी एनजीओ-ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल (टीआई) की स्थापना की गई. विभिन्न देशों द्वारा ओईसीडी कन्वेंशन को अपनाने में ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल (टीआई) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल (टीआई) बहुचर्चित करप्शन परसेप्शन इंडेक्स (सीपीआई), ग्लोबल करप्शन बैरोमीटर (जीसीबी) व ब्राइब पेयर्स इंडेक्स (बीपीआई) जारी करता है. ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल ने दुनिया भर में वकालत व कानूनी सलाह केन्द्रों का भी गठन किया है, जहां भ्रष्टाचार के शिकार लोग कानूनी सहायता प्राप्त कर सकते हैं. अन्य गैर सरकारी संगठनों में 1971 में जेनेवा में स्थापित विश्व आर्थिक मंच (वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम) है, जो भ्रष्टाचार पर भी फोकस करता है. डब्ल्यूईएफ (WEF) द्वारा रचित वैश्विक प्रतिस्पर्धा सूचकांक के स्तंभों में से एक स्तंभ अर्थव्यवस्था में भ्रष्टाचार का घनत्व दर्शाता है. 1989 में वाशिंगटन डीसी में स्थापित एक अन्य प्रसिद्ध एनजीओ - सेंटर फॉर पब्लिक इंटीग्रिटी है. इसके द्वारा भी पब्लिक इंटीग्रिटी इंडेक्स प्रकाशित किया जाता है, जो व्यापक वैश्विक भ्रष्टाचार विरोधी रणनीति का एक अंग है.

वर्ष 2011 में संयुक्त राज्य अमेरिका में एक अन्य मंच-ओपन गवर्नमेंट पार्टनरशिप (ओजीपी) की स्थापना की गई, जो प्रतिबद्ध नागरिकों और घरेलू सुधारकों के लिए उनकी सरकारों को अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और उत्तरदायी बनाने हेतु एक अंतर्राष्ट्रीय मंच प्रदान करता है. 'ओजीपी' की शुरुआत 8 देशों से हुई थी, जिसकी प्रतिभागिता बढ़कर आज 70 हो गई है. इन सभी देशों में सरकार और लोक समितियां साथ मिलकर विकास और महत्वाकांक्षी, पारदर्शी सरकारी सुधारों को लागू करने के लिए काम कर रहे हैं. इसी प्रकार, संयुक्त राज्य अमेरिका

में 1990 में स्थापित सार्वजनिक भागीदारी हेतु अंतर्राष्ट्रीय संगठन एक बहुद्देशीय प्रयास है, जो भ्रष्टाचार के विरुद्ध जनता की भागीदारी में बढ़ती वैश्विक रुचि को दर्शाता है. यह संगठन भ्रष्टाचार के विरुद्ध जनता की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है. इसे जनता की भागीदारी में 'आईएपी2' के बुनियादी मूल्यों के विकास के लिए जाना जाता है, जो भ्रष्टाचार के विरुद्ध निर्णय लेने की प्रक्रिया में नागरिकों की अर्धपूर्ण भागीदारी पर जोर देता है. संयुक्त राज्य अमेरिका में "अपनी सरकार से पूछिए" अभियान, एक अंतर्राष्ट्रीय-आयामी नागरिक अभियान है, जो 84 देशों से सरकारी बजट की सूचनाएँ एकत्र करता है और नागरिक ये सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं. इन सूचनाओं से नागरिक तथा संगठन सार्वजनिक निधियों के प्रयोग की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और भ्रष्टाचार का पता लगा सकते हैं.

### छोटे देशों में भ्रष्टाचार का मुकाबला करने में जनता की भागीदारी को बढ़ाना:

- **जॉर्जिया:** इसकी 'भ्रष्टाचार निरोधी परिषद' (एसीसी) में लोक समितियों से दस सदस्य और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का प्रतिनिधित्व करने वाले सात सदस्य शामिल हैं. एसीसी के कार्यकारी समूहों में गैर सरकारी संगठनों का भी प्रतिनिधित्व होता है.
- **आर्मेनिया:** वर्ष 2015 में भ्रष्टाचार-निरोधी रणनीति पर गैर सरकारी संगठनों, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल आर्मेनिया, आर्मेनियाई युवा वकील संघ, 'ग्रुप फॉर प्रोटेक्शन ऑफ राइट्स विदाउट बार्डर्स एंड फ्रीडम ऑफ इन्फार्मेशन' के द्वारा 50 से अधिक विचार विमर्श और सलाह कार्यक्रमों का आयोजन किया गया.
- **कजाकिस्तान:** वर्ष 2014 में कजाकिस्तान के राष्ट्रपति ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध 'संघर्ष आयोग' में लोक समिति के तीन सदस्यों को शामिल किया. कजाकिस्तान में कई लोक परिषदों और लोक प्राधिकरणों के बोर्ड में गैर सरकारी संगठन हैं.
- **किर्गिजस्तान:** किर्गिजस्तान में वर्ष 2013 में राष्ट्रीय भ्रष्टाचार निरोधी रणनीति के कार्यान्वयन पर एक कार्यकारी समूह बनाया गया, जिसमें स्वतंत्र विशेषज्ञ और लोक समिति के प्रतिनिधि शामिल हैं. वे भ्रष्टाचार जोखिम के अध्ययन और क्षेत्रीय भ्रष्टाचार निरोधी कार्रवाई की योजनाओं के विकास में भाग लेते हैं.
- कजाकिस्तान** द्वारा भ्रष्टाचार के स्तर का सूचकांक ऑनलाइन प्रकाशित किया जाता है, ताकि उनके क्षेत्रों, शाखाओं तथा विभागों के नैतिक व्यवहार की तुलना जनता कर सके. इसके साथ ही इस परियोजना में लक्षित राज्य के संस्थानों और शाखाओं को अपने व्यवहार को बदलने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है.
- **लातविया:** 'भ्रष्टाचार निवारण और मुकाबला ब्यूरो' में नागरिक समितियों के प्रतिनिधि शामिल हैं. कई बार नागरिक समितियों के प्रतिनिधि भ्रष्टाचार विरोधी काम करने में योगदान करते हैं.
- **मंगोलिया:** शिक्षा, नागरिक समिति, मास मीडिया, चैंबर ऑफ कॉमर्स, पर्यावरण संघ से जुड़े 15 सदस्यों को शामिल कर वर्ष 2014 में भ्रष्टाचार निरोधक कानून के तहत 'सार्वजनिक परिषद' की स्थापना की गई.
- **यूक्रेन:** नागरिक समिति के महत्वपूर्ण योगदान से भ्रष्टाचार निवारण रणनीति और कानून 2014-17 तैयार किया गया. समिति ने इसे अपनाने और कार्यान्वयन की सक्रिय रूप से वकालत की है. यूक्रेनियन भ्रष्टाचार निरोधक रणनीति 2014-2017, लोक समिति की भागीदारी की दृष्टि से बहुत समृद्ध है.

- **उज़्बेकिस्तान:** भ्रष्टाचार निरोधी रणनीति 2015 की व्यापक योजना में सिविल सोसायटी को शामिल किया गया है। (उदाहरणार्थ, भ्रष्टाचार विरोधी जागरूकता बढ़ाना)।
- हांगकांग, चीन और कोरिया की भ्रष्टाचार निरोधी एजेंसियों द्वारा भ्रष्टाचार के मुद्दों पर नियमित रूप से मीडिया अभियान चलाया जाता है।
- **इंडोनेशिया** में ऐसे अभियान गैर-सरकारी कलाकारों के सहयोग से चलाए जाते हैं, जिनमें निजी क्षेत्रों और अंतर्राष्ट्रीय लोक समितियों के प्रतिनिधियों को शामिल किया जाता है, ताकि इंडोनेशियाई आबादी में सरकार के सुशासन में सुधार की समझ और उसके प्रति सहयोग विकसित किया जा सके।
- सार्वजनिक और पारदर्शी भ्रष्टाचार निरोधी सिद्धांत के अनुपालन में **चीन** ने कार्रवाई प्रकटीकरण सूचित करने के लिए चैनलों का विस्तार किया है। कानूनी प्रावधानों के तहत जनता की भागीदारी और पर्यवेक्षण की खुली नीति को अपनाया है, ताकि जनता के सकारात्मक फीडबैक के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

उपर्युक्त के अलावा, कई देशों में स्कूल के छात्रों में जागरूकता पैदा करके भ्रष्टाचार निवारण हेतु दीर्घावधि उपाय किए जा रहे हैं। ऐसा देखा गया है कि कम उम्र के बच्चों में नैतिक व्यवहार और दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए कई देशों की शिक्षा प्रणाली में इसे विषय के रूप में शामिल किया गया है। उदाहरण के लिए, **कंबोडिया** के सार्वजनिक विद्यालयों में शिक्षा मंत्रालय के सहयोग से 'भ्रष्टाचार निरोधी शिक्षा' शुरू की गई है। इसी तरह की सहभागिता **मलेशिया** और **वानुआतु** के स्कूलों में भी शुरू हुई है। **फिजी द्वीप समूह, कजाकिस्तान, कोरिया** और **फिलीपींस** जैसे अन्य देशों में भी शिक्षकों को स्कूलों में और उच्च शिक्षा में नैतिकता के मुद्दों पर अपने छात्रों को शिक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

### ब्राजील और मेक्सिको में भ्रष्टाचार के विरुद्ध जनसहभागिता की सफलता:

सत्यनिष्ठा को प्रोत्साहित करने में जनसहभागिता के महत्व को ब्राजील के 'फिचालिम्पा' (FichaLimpa) अभियान की सफलता से जोड़ा जा सकता है। ब्राजील में 'Avaaz.org' ने फिचालिम्पा (FichaLimpa) अभियान की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए एक ऑनलाइन याचिका की शुरुआत की, जो ब्राजील के भ्रष्ट अधिकारियों को निशाना बनाती है और उन्हें जवाबदेह ठहराती है। इन प्रयासों से ही कांग्रेस में एक बिल पारित करने में मदद मिली है, जो आगामी चुनावों में राजनीतिक पदों के लिए 330 से अधिक उम्मीदवारों की संभावित अयोग्यता का कारण बना है। इसी प्रकार 2015 में मेक्सिको के नागरिक समूह के एक गठबंधन ने राजनीतिक अभिजात्य वर्ग को भ्रष्टाचार की समस्या के बारे में कुछ करने के लिए मजबूर कर दिया। 3for3 नाम से संचालित इस समूह ने ग्रीष्मकालीन मध्यावधि चुनाव में भाग लेने वाले नेताओं को उक्त पद हेतु पात्र होने से पहले स्वेच्छा से स्वयं के बारे में तीन वित्तीय जानकारियां अर्थात् अपने निजी धन, अपने वित्तीय और व्यापारिक हित और यह प्रमाण पत्र, कि उनके द्वारा पिछले साल अपने आयकर का भुगतान किया गया है, को सार्वजनिक करने को कहा गया। 3for3 आंदोलन, 2012 के एक संवैधानिक सुधार की मदद से कांग्रेस में एक कानून पेश करने में सक्षम हो पाया, जिसके अनुसार विधायिका को किसी भी ऐसी नागरिक याचिका पर विचार करना पड़ेगा, जिस पर 0.13 प्रतिशत मतदाताओं के हस्ताक्षर हों। एक अभूतपूर्व कदम के तहत, कांग्रेस के सदस्यों ने आंदोलन के नेताओं को विधायी सत्र में उनके साथ सीधे परामर्श करने के लिए आमंत्रित किया। बाद में एक संशोधित संस्करण दोनों कक्षों द्वारा अनुमोदित किया गया, जो प्रशासनिक

उत्तरदायित्व कानून (Law of Administrative Responsibilities) बना। आइए! न्यूजीलैंड, डेनमार्क, फिनलैंड और स्वीडन जैसे राष्ट्रों का उदाहरण लें, जो शीर्ष सीपीआई रैंकिंग वाले राष्ट्र हैं और सभी देशों में सबसे कम भ्रष्ट देश माने जाते हैं (ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा प्रकाशित सीपीआई, 2015 के अनुसार)। इन देशों में नागरिकों की सक्रिय और जागरूक भागीदारी के कारण भ्रष्टाचार निचले स्तर पर है। परिणामस्वरूप इन देशों में बहु पारदर्शिता तंत्र का संस्थानीकरण हुआ है और बदले में नागरिक भी सशक्त हुए हैं।

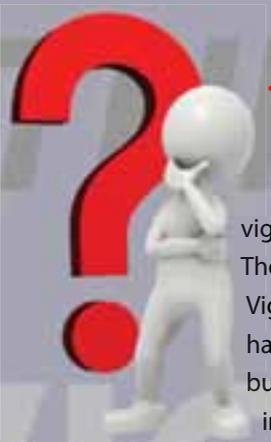
अंत में, यही कहा जा सकता है कि दुनिया के प्रत्येक देश में भ्रष्टाचार उन्मूलन, जनता व सरकार दोनों का साझा लक्ष्य होता है। मीडिया, नागरिक तथा व्यापार संघ, ट्रेड यूनियन एवं नागरिक तथा अन्य गैर-शासकीय संघटक भ्रष्टाचार की सार्वजनिक चर्चा को गति देने और भ्रष्टाचार के नकारात्मक प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदा करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे अपने दैनिक जीवन में और इस उद्देश्य के लिए चलाई गई अन्य औपचारिक व्यवस्थाओं के जरिये सरकारी कार्यों की जांच एवं संवीक्षा करते हुए सरकार के भ्रष्टाचार निवारण संबंधी प्रयासों के संबंध में जनता से सुझाव प्राप्त करने व उनके समन्वयन के जरिये भ्रष्टाचार की पहचान करने एवं उसके निवारण में उल्लेखनीय योगदान करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय अनुभवों से जाहिर होता है कि सीमाओं पर भ्रष्टाचार के विरुद्ध व्यापक जनसहभागिता से काफी प्रभाव पड़ा है तथा इससे लोक प्रशासन प्रणाली में पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा एवं जवाबदेही लाने में काफी मदद मिली है। आशा की जाती है कि डिजिटलीकरण एवं सोशल मीडिया मंचों के बढ़ते उपयोग से आने वाले दिनों में सत्यनिष्ठा प्रोत्साहन एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन में जन सहभागिता सुदृढ़ करने में मदद मिलेगी।

अतुल कुमार  
कें.का.,मुंबई



का  
टू  
न  
को  
ना





# WHY VIGILANCE?

Whenever we ruminate on the concept of vigilance, the famous quotation attributed to Thomas Jefferson flashes in our mind –“Eternal Vigilance is the price of liberty.” This might have been professed as a political thought, but the need of perpetual vigilance is of prime importance in every walk of human life.

Vigilance connotes a constant alertness and watchfulness.

## Vigilance in an Organization

Vigilance is an essential management function in the larger interest of any organization, specially the staff and the customers. It is a structure, system & process for increasing efficiency & transparency. It would be very apt to say that Vigilance can be used as a tool for Organizational excellence by inducing effectiveness in the three pillars of an Organization i.e. People, Process & Technology. It is possible only with an integrated approach in these three pillars with an active involvement of top management. An organization has a specific framework of policies, guidelines, systems and procedures to conduct its affairs and attain its objectives. Vigilance has emerged as a separate discipline to assist the operational heads who are busy in achieving business goals in the enforcement of vigilance framework.

For an institution, Vigilance means keeping a watchful eye on the activities of the employees to ensure integrity of its personnel and also on the activities of the customers with whom the institution has business dealings. It is to ensure that there is no economical and reputational loss to the institution due to lack of proper vigilance administration. Purpose of vigilance in an organization is:

- Vigilance is primarily a responsibility of all the stakeholders & Vigilance Administration is a very important risk management function. It helps in bringing out a higher order of morality as well as rationality in the conduct of affairs of public service.
- An organization protects itself from external dangers through creating security and posting manpower to guard against such threats.

- It is also to protect the organization from internal dangers which are more serious than external threats.
- It acts as a deterrent for increase of corrupt activities.
- It is required to protect honest employees & to discipline wrong doers.

Vigilance is, therefore, one of the main risk management function and also an integral part of management to ensure promoting highest level of integrity among employees for betterment and maintaining the health of the institution.

## Need of Vigilance Function in a Bank:

Competitive banking requires a sound banking system. A sound banking system should possess three basic characteristics to protect shareholder's interest and public faith. These are i. fraud free culture ii. A time tested Best Practices Code and iii. An in-house immediate remedial system.

Banks, being a financial institution and custodian of public money, are required to demonstrate utmost caution & integrity in all dealings. A gross negligence or malpractices or reckless decision of employees or failure of the systems of the Bank can cause financial and reputational loss to the bank.

On the other hand, Banking institutions are organizations where risk-taking forms an integral part of business and wrong decision may result in loss to the bank even if the decision is taken with a positive intention. Vigilance in Bank, therefore, is not a simple proposition, rather it has got a special significance as every loss caused to the Bank need not and should not become the subject matter of Vigilance enquiry.

Preventive vigilance is a facet of vigilance, which should be given more importance. It is a positive approach and aims to reduce possibilities of indulgence in corruption or malpractices by creating awareness among people about the virtues of probity in public service. An organization should strengthen preventive vigilance functions by inculcating a sense of honesty and integrity among its employees and establishing internal systems and controls, which would act as a defence against malafide activity. Preventive vigilance function is, perhaps the most crucial and yet, the most challenging aspect of vigilance. It is crucial because it has the potential

to prevent lapses from occurring by stemming the rot at the initial stages itself. However, it is challenging because it needs to be a continuous exercise across all levels of the organization and demands the focused attention of the management. This involves keeping close watch on the activity profile and the life style of the employees. The employees, who maintain a flashy life style without accounted means to support such life style, who rarely take leave, who do not share the finer points of work with fellow colleagues, who take extra interest in the work assigned to others, who are ever ready to help vendors dealing with the institution, who are under debt etc., need to be closely watched from a vigilance angle.

#### **A way forward:**

Vigilance as we all know is a mental state and hence should be applicable to rank or file. In general, vigilance stands for Awareness, watchfulness, foresightedness, exercising caution and prudence. It can be awareness on the part of the employee or the employers or society at large in their day-to-day activity. Unless an employee is vigilant, he cannot faithfully discharge his duties. To strengthen preventive vigilance function in any institution, involvement of all employees, management, all stakeholders irrespective of their position in the organization is very much required. Maximum emphasis should be laid on preventive vigilance aspect so that any wrong doings at initial stages could be eradicated.

#### **• Strengthening Vigilance**

Experience of working in vigilance set-ups over a long period has shown that every organization has certain 'points' or 'places' which enable corruption. Plugging of such points and procedures which enable deviance would go a long way in mitigating corruption. The internal vigilance set up can study the situations which give scope for corruption and introduce measures which would discourage/plug corruption in partnership with management.

#### **• Strengthening Systems & Procedures**

The sight of dishonest operators gloating over the fruits of their corruption must be a cause of concern to dedicated and honest employees. In every organization there are certain areas which are susceptible to corrupt practice. The system and procedures should therefore, be drawn up in manner that serves as a deterrent to financial malfunction.

#### **• Reaching the mass**

The fight against corruption cannot be won without citizens' support, participation and vigilance. The media, civic and business associations, trade unions and other non governmental organisations play a crucial role in fostering public discussion of corruption and increasing awareness about the negative impact of corruption. They also screen and scrutinize governmental action – both in their daily life and through formal arrangements institutionalized for this purpose – thereby contributing to the detection and prevention of corruption and the collection and channeling of input from citizens toward the government's anti-corruption efforts.

#### **• Public participation in eradication of corruption**

- Celebration of vigilance awareness activities through conduct of various programmes, competitions etc throughout the year in schools, colleges, club houses etc.
- Organization of activities like VIGITHON to create awareness against corruption in general public.

#### **• Catch them young/ Integrity club**

Adoption of school to inculcate moral values at young age in school children to create a Responsible and Corruption Free Society. These young children would be instrumental in propagating ethical values in families, neighbourhood, school, community and society at large to strengthen value based culture in the country.

#### **• Mahila Jagrukta Samiti**

The very foundation of this Mahila Jagrukta Samiti lies in the Self Help Group. Self Help Group is a homogeneous group of micro entrepreneurs with affinity among themselves, voluntarily formed to save whatever amount they can conveniently save out of their earnings and mutually agree to contribute to a common fund of the group from which small loans are given to the members for meeting their productive and emergent credit needs at such rate of interest, period of loan and other terms as the group may decide. Majority of successful SHGs are of women. Through this 3.50 cr poor women across the country will be providing a significant scope for our outreach.

- Formation of MJS which will act as torch bearers in eradication of corruption. Members should be selected from each active credit linked SHG and preferably President, Secretary, Treasurer of the said group (usually they are the active members of the group).
- Out of selected members one should be convener

be honest to implement the vigilance procedure effectively to make these Public sector banks function in an effective way so that they could safeguard the interest of the public and benefit the society at large ultimately contributing towards nation building.

Vigilance is not to be construed as an administrative chore. True vigilance acts proactively, aimed at preventive measures



or secretary who will have the responsibility for convening the meeting on monthly interval. They will be provided information about government schemes & can provided in co-ordination with R-Seti.

#### • Popularization of Whistle Blowing/ PIDPI

A transparent system functions without fear or fervour. Though, acts such as PIDPI and Whistle Blower mechanism are in place in our country, yet, one feels that they are still in their infancy. This is mostly due to ignorance, predominantly in the rural areas. Here, bankers have a huge role to play. Though, boards and posters regarding PIDPI/Whistleblower Acts are by and large displayed in the branches, it should be ensured that these acts should be discussed during the customers/staff meet in the branches.

#### Let's Start ....

The Indian Banking Industry has undergone tremendous growth since nationalization of banks. With the spread of banking and banks, frauds have been on constant increase. It could be a natural corollary to increase in the number of customers who are using bank these days. It may be said that all these systems and procedures can work well only if there is total commitment and honesty on the part of management in implementing them. Let us therefore dedicate ourselves to



rather than reacting to acts of corruption by way of detective and/or punitive acts. The success of vigilance functions in an organization is judged by the effectiveness in prevention of unhealthy practices rather than by number of cases detected and punished. Vigilance, therefore, is not simply a police function but is in a way management of human conduct.

Above all, it is imperative to fight against corruption through Participative and inclusive Vigilance. We must be vigilant prudent and proactive in our public dealings. Ensuring public participation in our personal and professional activities will ensure better self and corporate governance. Let us renew our pledge of working whole heartedly for rooting out corruption in all spheres of our activities and usher in an era of transparency and Integrity.

**Prashant Tiwari**  
Vig. Dept., C.O., Mumbai

## कालिदास

कालिदास संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे। कालिदास नाम का शाब्दिक अर्थ है, "काली का सेवक"। कालिदास शिव के भक्त थे। उन्होंने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएँ कीं। उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्व निरूपित हैं। कालिदास अपनी अलंकारयुक्त, सुंदर, सरल और मधुर भाषा के लिये विशेष रूप से जाने जाते हैं। उनके ऋतु वर्णन अद्वितीय हैं और उनकी उपमाएँ बेमिसाल। संगीत उनके साहित्य का प्रमुख अंग है और रस का सृजन करने में उनकी कोई बराबरी नहीं। उन्होंने अपने शृंगार-प्रधान साहित्य में भी साहित्यिक सौन्दर्य के साथ-साथ आदर्शवादी परंपरा और नैतिक मूल्यों का समुचित ध्यान रखा है। उनका नाम अमर है और उनका स्थान बाल्मीकि और व्यास की शृंखला में है। कालिदास राष्ट्र की समग्र चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते हैं और कुछ विद्वान उन्हें 'राष्ट्र कवि' का स्थान तक दे देते हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं:

**अभिज्ञानशाकुंतलम्** कालिदास की सबसे प्रसिद्ध रचना है। यह नाटक उन कुछ भारतीय साहित्यिक कृतियों में से है, जिनका अनुवाद सबसे पहले यूरोपीय भाषाओं में हुआ था। यह पूरे विश्व साहित्य में अग्रगण्य रचना मानी जाती है। **मेघदूतम्** कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है, जिसमें कवि की कल्पना शक्ति और अभिव्यंजना शक्ति सर्वोत्कृष्ट स्तर पर है। प्रकृति के मानवीकरण का अद्भुत उदाहरण इस खंडकाव्य में दिखता है। कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं। कालिदास के परवर्ती कवि बाणभट्ट ने उनकी सूक्तियों की विशेष रूप से प्रशंसा की है।

कथाओं और किंवदंतियों के अनुसार कालिदास शकल-सूरत से सुंदर थे और विक्रमादित्य के दरबार के नवरत्नों में से एक थे। कहा जाता है कि प्रारंभिक जीवन में कालिदास अनपढ़ और मूर्ख थे। कालिदास की शादी विद्योत्तमा नामक राजकुमारी से हुई। ऐसा कहा जाता है कि विद्योत्तमा ने प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई उसे शास्त्रार्थ में हरा देगा, वह उसी के साथ शादी करेगी। जब विद्योत्तमा ने शास्त्रार्थ में सभी विद्वानों को हरा दिया तो अपमान से दुखी कुछ विद्वानों ने कालिदास से उसका शास्त्रार्थ कराया। विद्योत्तमा मौन शब्दावली में गूढ़ प्रश्न पूछती थी, जिसे कालिदास अपनी बुद्धि से मौन संकेतों से ही उत्तर दे देते थे। विद्योत्तमा को लगता था कि कालिदास गूढ़ प्रश्न का गूढ़ जवाब दे रहे हैं। उदाहरण के लिए, विद्योत्तमा ने प्रश्न के रूप में खुला हाथ दिखाया, तो कालिदास को लगा कि वह थप्पड़ मारने की धमकी दे रही है। उसके जवाब में कालिदास ने घूंसा दिखाया, तो विद्योत्तमा को लगा कि वह कह रहा है कि पाँचों इन्द्रियाँ भले ही अलग हों, सभी एक मन के द्वारा संचालित हैं।

विद्योत्तमा और कालिदास का विवाह हो गया। तब विद्योत्तमा को सच्चाई का पता चला कि कालिदास अनपढ़ हैं, तो उसने कालिदास को धिक्कारा और यह कह कर घर से निकाल दिया कि सच्चे पंडित बने बिना घर वापिस नहीं आना। कालिदास ने सच्चे मन से काली देवी की आराधना की और उनके आशीर्वाद से वे ज्ञानी और धनवान बन गए। ज्ञान प्राप्ति के बाद जब वे घर लौटे, तो उन्होंने दरवाजा खड़का कर कहा - 'कपाटम् उद्घाट्य सुन्दरी' (दरवाजा खोलो, सुन्दरी)। विद्योत्तमा ने चकित होकर कहा - 'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः (कोई विद्वान लगता है)।

कालिदास ने विद्योत्तमा को अपना पथप्रदर्शक गुरु माना और उसके इस वाक्य को उन्होंने अपने काव्यों में स्थान दिया। **कुमारसंभवम्** का प्रारंभ होता है- 'अस्त्युत्तरस्याम् दिशि' से, **मेघदूतम्** का पहला शब्द है- 'कश्चित्कांता' और

**रघुवंशम्** की शुरुआत होती है- 'वागार्थविव' से।

छोटी-बड़ी कुल लगभग चालीस रचनाएँ हैं, जिन्हें अलग-अलग विद्वानों ने कालिदास द्वारा रचित सिद्ध करने का प्रयास किया है। इनमें से मात्र सात ही ऐसी हैं जो निर्विवाद रूप से कालिदासकृत मानी जाती हैं : तीन नाटक-**अभिज्ञान शाकुन्तलम्**, **विक्रमोर्वशीयम्** और **मालविकाग्निमित्रम्**; दो महाकाव्य:-**रघुवंशम्** और **कुमारसंभवम्**; और दो खण्डकाव्य-**मेघदूतम्** और **ऋतुसंहार**। इनमें भी **ऋतुसंहार** को प्रो. कीथ संदेह के साथ कालिदास की रचना स्वीकार करते हैं।

**मालविकाग्निमित्रम्** कालिदास की पहली रचना है, जिसमें राजा अग्निमित्र की कहानी है। अग्निमित्र, एक निर्वासित नौकर की बेटी मालविका के चित्र से प्रेम करने लगते हैं। जब अग्निमित्र की पत्नी को इस बात का पता चलता है तो वह मालविका को जेल में डलवा देती है, मगर संयोग से मालविका राजकुमारी साबित होती है और उनके प्रेम-संबंध को स्वीकार कर लिया जाता है।

**अभिज्ञान शाकुन्तलम्** कालिदास की दूसरी रचना है, जो उनकी प्रसिद्धि का कारण बनी। इस नाटक का अनुवाद अंग्रेजी और जर्मन के अलावा दुनिया की अनेक भाषाओं में हुआ है। इसमें राजा दुष्यंत की कहानी है, जो वन में एक ऋषि पुत्री शकुन्तला (विश्वामित्र और मेनका की बेटी) से प्रेम करने लगते हैं। दोनों जंगल में गंधर्व विवाह कर लेते हैं। राजा दुष्यंत अपनी राजधानी लौट आते हैं। इसी बीच ऋषि दुर्वासा शकुन्तला को श्राप दे देते हैं कि जिसके वियोग में उसने ऋषि का अपमान किया है, वही उसे भूल जाएगा। काफी क्षमा प्रार्थना के बाद ऋषि ने शाप को थोड़ा नरम करते हुए कहा कि राजा की अंगूठी दिखाते ही उन्हें सब कुछ याद आ जाएगा। लेकिन राजधानी जाते समय रास्ते में वह अंगूठी खो जाती है। स्थिति तब और गंभीर हो जाती है, जब शकुन्तला को पता चलता है कि वह गर्भवती है। शकुन्तला लाख गिड़गिड़ाई, लेकिन राजा ने उसे पहचानने से इन्कार कर दिया। जब एक मछुआरे ने वह अंगूठी दिखाई, तो राजा दुष्यंत को सब कुछ याद आ गया और राजा ने शकुन्तला को अपना लिया। **शकुन्तला** शृंगार रस से भरे सुंदर काव्यों का एक अनुपम नाटक है। कहा जाता है **काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला** (कविता के अनेक रूपों में अगर सबसे सुन्दर नाटक है तो नाटकों में सबसे अनुपम **शकुन्तला** है।)

**विक्रमोर्वशीयम्** रहस्यों भरा एक नाटक है। इसमें पुरुरवा, इंद्रलोक की अप्सरा उर्वशी से प्रेम करने लगते हैं। पुरुरवा के प्रेम को देखकर उर्वशी भी उनसे प्रेम करने लगती है। इंद्र की सभा में जब उर्वशी नृत्य करने जाती है, तो पुरुरवा से प्रेम के कारण वह वहां अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाती है। इससे इंद्र गुस्से में उसे शापित कर धरती पर भेज देते हैं, इस शर्त के साथ कि उसका प्रेमी अगर उससे होने वाले पुत्र को देख ले, तो वह फिर स्वर्ग लौट सकेगी। **विक्रमोर्वशीयम्** काव्यगत सौंदर्य और शिल्प से भरपूर है।



**कुमारसंभवम्** उनके महाकाव्य का नाम है। **रघुवंशम्** में सम्पूर्ण रघुवंश के राजाओं की गाथाएँ हैं, तो **कुमारसंभवम्** में शिव-पार्वती की प्रेमकथा और कार्तिकेय के जन्म की कहानी है। कुमारसंभव महाकवि कालिदास विरचित कार्तिकेय के जन्म से संबंधित महाकाव्य है, जिसकी गणना संस्कृत के पंच-महाकाव्यों में की जाती है। इस महाकाव्य में अनेक स्थलों पर स्मरणीय और मनोरम वर्णन हुआ है। हिमालय वर्णन, पार्वती की तपस्या, ब्रह्मचारी की शिवनिंदा, वसंत आगमन, शिव-पार्वती विवाह और रति-क्रिया वर्णन अद्भुत अनुभूति उत्पन्न करते हैं। कालिदास का 'बाला पार्वती', 'तपस्विनी पार्वती', 'विनयवती पार्वती' और 'प्रगल्भ पार्वती' आदि रूपों में नारी का चित्रण अद्भुत है। यह महाकाव्य 17 सर्गों में समाप्त हुआ है, किंतु लोक धारणा है कि केवल प्रथम सर्ग ही कालिदास द्वारा रचित है। बाद के अन्य नौ सर्ग अन्य कवि की रचना है। कुछ लोगों की धारणा है कि काव्य आठ सर्गों में ही शिव-पार्वती समागम के साथ कुमार के जन्म की पूर्वसूचना के साथ ही समाप्त हो जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि आठवें सर्ग में शिव-पार्वती के संभोग का वर्णन करने के कारण कालिदास को कुछ हो गया और वे लिख न सके। एक मत यह भी है कि उनका संभोगवर्णन जनमानस को रुचिकर नहीं लगा, इसलिए उन्होंने आगे नहीं लिखा।

**रघुवंशम्** कालिदास रचित महाकाव्य है। इस महाकाव्य में उन्नीस सर्गों में रघु कुल में उत्पन्न बीस राजाओं का वर्णन इक्कीस प्रकार के छन्दों का प्रयोग करते हुए किया गया है। इसमें दिलीप, रघु, दशरथ, राम, कुश और अतिथि का विशेष वर्णन किया गया है। वे सभी समाज में आदर्श स्थापित करने में सफल हुए। राम का इसमें विषद वर्णन किया गया है। उन्नीस में से छः सर्ग उनसे ही संबन्धित हैं।

आदिकवि वाल्मीकि ने **राम** को नायक बनाकर अपनी रामायण रची, जिसका अनुसरण विश्व के कई कवियों और लेखकों ने अपनी-अपनी भाषा में किया और राम की कथा को अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत किया। कालिदास ने यद्यपि राम की कथा रची, परंतु इस कथा में उन्होंने किसी एक पात्र को नायक के रूप में नहीं उभारा। उन्होंने अपनी कृति 'रघुवंश' में पूरे वंश की कथा रची, जो दिलीप से आरम्भ होती है और अग्रिवर्ण पर समाप्त होती है। अग्रिवर्ण के मरणोपरांत उसकी गर्भवती पत्नी के राज्याभिषेक के उपरान्त इस महाकाव्य की इतिश्री होती है।

**रघुवंश** पर सबसे प्राचीन उपलब्ध टीका 10वीं शताब्दी के काश्मीरी कवि वल्लभदेव की है, किन्तु सर्वाधिक प्रसिद्ध टीका मल्लिनाथ (1350 ई - 1450 ई) द्वारा रचित 'संजीवनी' है।

**मेघदूतम्** महाकवि कालिदास द्वारा रचित विख्यात दूतकाव्य है। इसमें एक यक्ष की कथा है जिसे कुबेर, अलकापुरी से निष्कासित कर देते हैं। निष्कासित यक्ष रामगिरि पर्वत पर निवास करता है। वर्षा ऋतु में उसे अपनी प्रेमिका की याद सताने लगती है। कामार्त यक्ष सोचता है कि किसी भी तरह से उसका अल्कापुरी लौटना संभव नहीं है, इसलिए वह प्रेमिका तक अपना संदेश दूत के माध्यम से भेजने का निश्चय करता है। अकेलेपन का जीवन गुजार रहे यक्ष को कोई संदेशवाहक भी नहीं मिलता है, इसलिए उसने मेघ के माध्यम से अपना संदेश विरहाकुल प्रेमिका तक भेजने की बात सोची। इस प्रकार 'आषाढ़ के प्रथम दिन' आकाश पर उमड़ते मेघों ने कालिदास की कल्पना के साथ मिलकर एक अनन्य कृति की रचना कर दी।

मेघदूत की लोकप्रियता भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से ही रही है। जहाँ एक ओर प्रसिद्ध टीकाकारों ने इस पर टीकाएँ लिखी हैं, वहीं अनेक संस्कृत कवियों ने इससे प्रेरित होकर अथवा इसको आधार बनाकर कई दूतकाव्य लिखे। भावना और कल्पना का जो उदात्त प्रसार मेघदूत में उपलब्ध है, वह भारतीय साहित्य में

अन्यत्र नहीं है। **नागार्जुन** ने मेघदूत के हिन्दी अनुवाद की भूमिका में इसे हिन्दी वांग्मय का अनुपम अंश बताया है।

**मेघदूतम्** काव्य दो खंडों में विभक्त है। पूर्वमेघ में यक्ष बादल को रामगिरि से अलकापुरी तक के रास्ते का विवरण देता है और उत्तरमेघ में यक्ष का वह प्रसिद्ध विरहदग्ध संदेश है, जिसमें कालिदास ने प्रेमी हृदय की भावना को उड़ेल दिया है। कुछ विद्वानों ने इस कृति को कवि की व्यक्तिव्यंजक (आत्मपरक) रचना माना है। "मेघदूत" में लगभग 115 पद्य हैं, यद्यपि अलग-अलग संस्करणों में इन पद्यों की संख्या हेर-फेर से कुछ अधिक भी मिलती है। डॉ. एस. के. दे के मतानुसार मूल "मेघदूत" में इससे भी कम 111 पद्य हैं, शेष बाद के प्रक्षेप जान पड़ते हैं।

**ऋतुसंहारम्** में सभी ऋतुओं में प्रकृति के विभिन्न रूपों का विस्तार से वर्णन किया गया है।

इनके अलावा कई छिटपुट रचनाओं का श्रेय कालिदास को दिया जाता है। उनके नाम हैं :- श्रुतबोधम्, शृंगार तिलकम्, शृंगार रसाशतम्, सेतुकाव्यम्, कर्पूरमंजरी, पुष्पबाण विलासम्, श्यामा डंडकम्, ज्योतिर्विद्याभरणम्।

लेकिन विद्वानों का मत है कि ये रचनाएं अन्य कवियों ने कालिदास के नाम से कीं। नाटककार और कवि के अलावा कालिदास ज्योतिष के भी विशेषज्ञ माने जाते हैं। **उत्तर कालामृतम्** नामक ज्योतिष पुस्तिका की रचना का श्रेय कालिदास को दिया जाता है। ऐसा माना जाता है कि काली देवी की पूजा से उन्हें ज्योतिष का ज्ञान मिला। इस पुस्तिका में की गई भविष्यवाणी सत्य साबित हुई।

कालिदास को 'कविकुलगुरु', 'कनिष्ठिकाधिष्ठित' और 'कविताकामिनीविलास' जैसी प्रशंसात्मक उपाधियाँ प्रदान की गई हैं जो उनके काव्यगत विशिष्टताओं से अभिभूत होकर ही दी गई हैं। कालिदास के काव्य की विशिष्टताओं का वर्णन निम्नवत् किया जा सकता है।

कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं और उन्होंने प्रसाद गुण से पूर्ण ललित शब्दयोजना का प्रयोग किया है। प्रसाद गुण का लक्षण है - "जो गुण मन में वैसे ही व्याप्त हो जाय जैसे सूखी ईंधन की लकड़ी में अग्नि सहसा प्रज्वलित हो उठती है" - कालिदास की भाषा की यही विशेषता है।

कालिदास की भाषा मधुर नाद सुन्दरी से युक्त है और समासों का अल्पप्रयोग, पदों का समुचित स्थान पर निवेश, शब्दालंकारों का स्वाभाविक प्रयोग इत्यादि गुणों के कारण उसमें प्रवाह और प्रांजलता विद्यमान है।

कालिदास ने शब्दालंकारों का स्वाभाविक प्रयोग किया है और उन्हें उपमा अलंकार के प्रयोग में सिद्धहस्त और उनकी उपमाओं को श्रेष्ठ माना जाता है। उदहारण के लिये:

**संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।**

**नरेन्द्रमार्गाद् इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपाल।[16]**

अर्थात् स्वयंवर में बारी-बारी से प्रत्येक राजा के सामने गमन करती हुई इन्दुमती राजाओं के सामने से चलती हुई दीपशिखा

की तरह लग रही थी जिसके आगे बढ़ जाने पर राजाओं का मुख विवर्ण (अस्वीकृत कर दिए जाने से अंधकारमय, मलिन) हो जाता था.

कालिदास की कविता की प्रमुख विशेषता है कि वह चित्रों के निर्माण में सब कुछ न कहकर भी अभिव्यंजना द्वारा पूरा चित्र खींच देते हैं. जैसे:

**एवं वादिनि देवशौं पार्श्वे पितुरधोमुखी.**

**लीला कमल पत्राणि गणयामास पार्वती.[17]**

अर्थात् देवर्षि के द्वारा ऐसी (पार्वती के विवाह प्रस्ताव की) बात करने पर, पिता के समीप बैठी पार्वती ने सिर झुका कर हाथ में लिये कमल की पंखुड़ियों को गिनना शुरू कर दिया.

**कूडियट्टम्** में संस्कृत आधारित नाटकों का एक रंगमंच है, जहां भास के नाटक खेले जाते हैं. महान कूडियट्टम् कलाकार और नाट्य शास्त्र के विद्वान स्वर्गीय नाट्याचार्य विदूषकरत्नम पद्मश्री गुरु **मणि माधव चक्यार** ने कालिदास के नाटकों के मंचन की शुरुआत की. कालिदास को लोकप्रिय बनाने में दक्षिण भारतीय भाषाओं की फिल्मों का भी काफी योगदान है. कन्नड़ भाषा की फिल्मों 'कविरत्न कालिदास' और 'महाकवि कालिदास' ने कालिदास के जीवन को काफी लोकप्रिय बनाया. इन फिल्मों में स्पेशल इफेक्ट और संगीत का बखूबी उपयोग किया गया. वी. शांताराम ने शकुंतला पर आधारित फिल्म बनाई. यह फिल्म इतनी प्रभावशाली थी कि इस पर आधारित अनेक भाषाओं में कई फिल्में बनाई गईं.

हिन्दी लेखक मोहन राकेश ने कालिदास के जीवन पर एक नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' की रचना की, जो कालिदास के संघर्षशील जीवन के विभिन्न पहलुओं को दिखाता है. 1976 में सुरेंद्र वर्मा ने एक नाटक लिखा, जिसमें इस बात का जिक्र किया गया है कि पार्वती के शाप के कारण कालिदास कुमारसंभव को पूरा नहीं कर पाए थे. शिव और पार्वती के गृहस्थ जीवन का अश्लीलतापूर्वक वर्णन करने के लिए पार्वती ने उन्हें यह शाप दिया था. इस नाटक में कालिदास को चंद्रगुप्त की अदालत का सामना करना पड़ा, जहां पंडितों और नैतिकतावादियों ने उन पर अनेक आरोप लगाए. इस नाटक में न सिर्फ एक लेखक के संघर्षशील जीवन को दिखाया गया है, बल्कि लेखक की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के महत्व को भी रेखांकित किया गया है.

**अस्ति कश्चित् वागर्थीयम्** नाम से डॉ कृष्ण कुमार ने 1984 में एक नाटक लिखा, यह नाटक कालिदास के विवाह की लोकप्रिय कथा पर आधारित है.\*\*\*

**श्वेता सिंह**

क्षे. का., हावड़ा



# राष्ट्र की प्रगति के लिए.

संपूर्ण देश में लहराती, एक विचारधारा,  
जो इंगित करती है, देशवासियों को,  
भ्रष्टाचार से मुक्ति के लिए.

प्रेरणा देती है,  
जीवन में सतर्क रहने के लिए.  
चाट रहा है, दीमक की तरह,  
देश की जड़ को,  
पंगु बना रहा है, व्यवस्था को,  
कुंठित कर रहा है, नौजवानों के सपनों को,  
जरूरत है आगे बढ़ने की.  
कदाचार को रोकने की.  
एक आवाज निकलती है,  
कदाचार से मुक्ति के लिए,

रहनुमाई करती है,  
हर व्यक्ति के लिए.

भ्रष्टाचारियों के आखाड़ों को तोड़ना है.  
इनके अरमानों को, मरोड़ना है,  
न खेल सकें, ये  
देशवासियों की भावनाओं से,  
पाप की मुंडेर पर बैठकर,  
नैतिकता की बातें कर,  
बदनाम करते पूरे देश को,  
एक आह जो पुकारे,  
हर जकड़न से मुक्ति के लिए.

सिसकियां आती हैं आत्मा से  
काले धन से मुक्ति के लिए.

तलवारें तन चुकी हैं, म्यान खाली है,  
हर जगह बेचैनी है, हड़कंप है,  
भ्रष्टाचारियों में विद्वेष है.  
इंतजार है, उन धन कुबेरों का,  
जो काले धन की मुंडेर पर,  
फन फैलाएं बैठे हैं,  
बेनकाब करें, उन्हें राष्ट्र की समृद्धि के लिए.

पर्दाफाश करें उनका,  
राष्ट्र की प्रगति के लिए.  
राष्ट्र की प्रगति के लिए.

**आशीष निश्चल**

क्षे. का., पटना





## विभिन्न विद्यालयों में सतर्कता जागरूकता में जन-सहभागिता





## गोता बढ़ाने हेतु बैंक द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की एक झलक



# Vigilance issues encountered by Banks & Suggested Preventive Measures

## A. CREDIT AREA

	Stages of Delivery	Suggested Preventive Measures
1. At the Time of Establishing Relationship	Know your Customer / Borrower:- Non compliance of KYC norms, Fake identification/ fake residence proofs such as Ration Card, Aadhaar Card, PAN Card, Driving License etc.	<ul style="list-style-type: none"> <li>• Conducting physical verification of place of residence &amp; business places.</li> </ul>
	Inspection for identification of Business Place:- Whether owned or rented, its verification, verification of payment of rent/ taxes, ascertain business activity etc.	<ul style="list-style-type: none"> <li>• Verification of the genuineness of the documents. (wherever online verification facility is available, it should be verified online).</li> </ul>
	Credit History of Borrower:- Fake/ fabricated Credit Report from other Banks/ FIs/ statement of Banks, exaggerated information about credit worthiness from reference parties, CIBIL records etc.	<ul style="list-style-type: none"> <li>• Sharing of credit information at frequent intervals among the lender Banks (Consortium as well as Multiple Banking Arrangement).</li> <li>• Verification from the available resources.</li> <li>• Obtain reports directly from Banks &amp; not through borrowers.</li> </ul>
2. Credit Appraisal	Analysis of Financials:- Fake/Fabricated Financial Statements (Role of CAs), Stake of Entrepreneurs, Sources of Funds, Unsecured Loans, Share Application Money, Contracts / Orders on Hand, Debtors / Creditors, Outstanding Statutory Dues, etc.	Conducting verification and analysis of financial & Economic Viability Study.
	<b>Non- creation/non- availability of securities:-</b> <b>a) Prime Security</b> – Availability / type & nature / value etc. of prime security <b>b) Collateral Security</b> – Minimum Stipulation for Collaterals, Type / Nature of Collateral Security, Landed Freehold / Leasehold property, Encumbrances, Free & Marketable Title (Role of Advocate on panel), Market Value (Role of Valuer on Panel), etc.	<ul style="list-style-type: none"> <li>• Conducting inspection of prime securities.</li> <li>• Inspection of the collaterals and critically analyzing opinion of advocate &amp; valuer</li> </ul>
3. Sanctioning	<b>Sanctioning:</b> Lack of due diligence at the sanctioning level.	All the parameters discussed above are needed to be studied before according sanction.
4. Pre Disbursement	<b>For credit facilities:</b> Execution of proper documents, adequate stamping and enforceability.	<ul style="list-style-type: none"> <li>• Proper documentation to be obtained /got executed from borrower/s by calling them in person as stipulated/required.</li> <li>• Overwriting / Alteration should be avoided.</li> <li>• Execution of documents should be supervised &amp; examined in person and thereafter got vetted through panel advocate for deficiencies, if any.</li> </ul>
	<b>Collateral Securities</b> Examining correctness of title to the collaterals / documents of collaterals, sanction stipulation, stamp duty, execution etc.	<ul style="list-style-type: none"> <li>• By physical inspection of the collateral properties and analysis of the advocates report.</li> <li>• Overwriting / Alteration should be avoided.</li> </ul>

	Stages of Delivery	Suggested Preventive Measures
5. Disbursements	To be made strictly as per the sanction stipulations. Most of the cases of diversion of funds take place at this stage. Ensuring margin before disbursements.	<ul style="list-style-type: none"> <li>• Certificate from the CA having paid advance as margin should be critically examined before making disbursements.</li> <li>• Change of name of supplier should not be permitted without sanction from sanctioning / competent authority.</li> <li>• Due diligence of suppliers while making disbursements.</li> <li>• KYC compliance in respect of the vendors from respective Banks (if not banking with us) before disbursement.</li> </ul>

## B. NON - CREDIT AREA

Issues	Suggested Preventive Measures
Monitoring operations in deposit account (New/inoperative accounts/impersonal accounts), fraudulent transactions, suspicious cash transactions.	Monitoring of transactions by Branch specially in new/inoperative accounts, Off-site surveillance of unusual transactions.
Issuance of cheque book & dealing with forged/fake instruments.	Sending cheque book at the address of the customers and CTS enabled clearing system.
Dealing with Cyber Frauds (credit card/debit card/payroll card/gift card/mobile banking/internet banking).	<ul style="list-style-type: none"> <li>• Assigning user levels and transaction rights as per norms.</li> <li>• Ensuring issuance of the cards to the customer.</li> <li>• Online /SMS Alerts, Offsite surveillance of unusual transactions.</li> </ul>

## C. Some of the other complex issues encountered by Banks

Issues	Suggested Preventive Measures
Consortium Advance/Multiple Banking: Difficult to ensure end use of funds by the other Banks in consortium for the amounts disbursed to the credit of escrow account.	Sharing of credit information at frequent intervals among the lender Banks (consortium as well as Multiple Banking Arrangement).
Take over Accounts: Bank who wants to get rid of sticky accounts, sometimes intentionally furnishes satisfactory credit report of the account.	Bank should analyze statement of accounts of the customers for taking decision.
Forex Trade: Bankers deal in only documents as per UCPDC rules and not in goods; however there are no tools in the hands of the banker to verify the genuineness of all the documents submitted by the parties as also prices of the goods imported/exported.	Verification of the documents should be mandatory & provision for online verification of the documents will be very useful.

**Kalyan Kumar**  
Vig. Dept., C.O., Mumbai



# Project Utkarsh



**Change Leader Forum:** The fourth batch of Change Leaders (CLs) under Project Utkarsh underwent comprehensive training on the revamped Union Xperience, ULP and SARAL models through the ob-boarding CL forum conducted at Staff College, Bengaluru from 23rd – 26th October 2016. The 18 CLs were trained on the effective use of various dashboards through different practical exercises. They were also given a demonstration of the newly developed and Bank's in-house online implementation application "Roll-out Buddy". The multiple Employee Engagement initiatives undertaken under Project Utkarsh as well as an Interaction Model with the now-expanded central BPT team were also explained.



The forum also focused on imparting useful soft skills to the participants with an exclusive session on Influencing Skills conducted by Ms. Sonia Mehta, a McKinsey Leadership Institute facilitator. A "sustainability" theme was introduced to the existing and new Change Leaders. The existing Change Leaders were extremely happy to know the appreciation from the Board for their impact and the platform provided to them to ideate & present their thoughts on improving sustainability. A barometer (feedback) was administered for the first time for the Change Leaders and an open forum was conducted by GM BPT Shri H. N. Saxena to discuss its results.

## Rangoli Competition:

A Rangoli competition was organized in the month of October as an Urja event (monthly employee engagement activity/event) which was conducted all over India. Branches and offices across the length & breadth of the country participated enthusiastically in the event and came up with elaborate & beautiful rangoli designs. The team work and effort of the employees was evident in the precision & neatness with which the rangolies were made! The top 10 rangolies were selected and certificates were issued to the winning teams.



## Online Festivals Quiz

With October being the month of festivities, an online Festivals Quiz was organized for all Unionites on 24th October 2016. Building upon the positive response received for the Sports Quiz conducted in September 2016, the reach of the quiz was expanded beyond Utkarsh units to enable all employees of the Bank to participate in it. The format continued to remain short & crisp and all questions & options were made available in both Hindi & English. The correct answers were shared with employees after the quiz through UBINET. More than 2000 employees participated in the quiz and the top 20 winners were announced based on accuracy & speed. The quiz received a rating of 4.7 out of 5.



**Aparna Kutumbale**

BPT,C.O. Mumbai



# सतर्कता - एक जीवन शैली

यह एक बहुत कठिन प्रश्न है कि सतर्कता हमारी जीवन शैली है या सतर्क रहने के लिए हमें प्रयास करने होते हैं। यदि इस खूबसूरत दुनिया में एक इंसान के पदार्पण से लेकर जीवन के सफर एवं विभिन्न पड़ावों का विश्लेषण करें, तो यह प्रतीत होता है कि हर क्रिया से पहले हम सतर्कता का ध्यान रखने का प्रयास करते हैं या यूँ कहें कि सतर्कता के पहलुओं का अवलोकन करते हैं। बच्चे का जन्म हो, उसका शारीरिक विकास हो, विद्यालय का चयन हो, शिक्षा का स्तर हो, पढ़ाई की व्यवस्था हो, करियर का चयन हो, इस तरह की सूची बहुत लंबी है। किन्तु एक बात, जो सारी क्रियाओं में समान है, वो है सतर्कता, जो हमारे लक्ष्य की प्राप्ति को सुनिश्चित करने में सहायक होती है। एक और समानता है, वो है लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमारी इच्छाशक्ति, जो सतर्कता के विभिन्न बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए लक्ष्य की ओर केन्द्रित रहती है। हमें सड़क पार करनी हो, तो स्वतः ही सड़क के दोनों तरफ से आने वाली गाड़ियों की संख्या, उनकी गति तथा हमसे उनकी दूरियों का विश्लेषण करते हैं तथा इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि सड़क कब, कैसे तथा किस गति से पार करनी है, जिससे सुरक्षित दूसरे छोर पर पहुँच पाएँ। इन सब चीजों को अपनी जीवन-शैली में ढालने के लिए हमें किसी प्रशिक्षण की जरूरत नहीं होती है, फिर हम सतर्कता का ध्यान क्यों रखते हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि उपर्युक्त सारी प्रक्रियाएँ, जो हमारे जीवन से सीधी तौर पर जुड़ी हुई हैं, उनमें सतर्क नहीं रहने पर होने वाले नुकसान का हमें अंदाजा होता है और इस नुकसान को सीधे तौर पर हमें ही झेलना होता है। जैसे-बिना हेलमेट पहने बाइक चलाना, बिना बेल्ट लगाए कार चलाना, ट्रैफिक नियम की अवहेलना करते हुए सड़क पार करना इत्यादि। ये नियमों की ऐसी अवहेलनाएँ हैं, जिससे होने वाले नुकसान का हमें अंदाजा होता है। फलस्वरूप, हम सतर्कता के नियमों का पालन करते हुए नुकसान से बचने का या उसे कम करने का प्रयास करते हैं।

फिर बैंक में काम करते हुए हम सतर्कता के प्रति इतने लापरवाह क्यों रहते हैं, कि हमें सतर्कता के प्रति जागरूक करना पड़ता है या सतर्कता जागरूकता के लिए विभिन्न क्रिया-कलापों को करना पड़ता है? फर्क सिर्फ इतना है कि किसी संस्था में कार्य करते हुए असतर्कता से होने वाले नुकसान और हमारे बीच हमारी संस्था होती है, जो हमें नुकसान का सीधा असर होने से बचाती है, या यूँ कहें, कि हमारी संस्था सीधे तौर पर नुकसान झेलती है तथा नुकसान का सीधा असर हम पर होने से बचाती है। लेकिन हमारी असतर्कता से हमारी संस्था कमजोर होती चली जाती है। हमारी संस्था, जहाँ हम काम करते हैं, जो हमारी जीविका का साधन है, जो हमारी सामाजिक पहचान का परिचायक है, उसके निरंतर कमजोर होने से हमारी असतर्कता का असर हम पर बढ़ता चला जाता है। ज्यों-ज्यों हमारी संस्था, हमारी गैर-जिम्मेदारी से एवं हमारी असतर्कता से कमजोर होती है, वह विलुमावस्था की ओर बढ़ती चली जाती है तथा हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। इसका जीवंत उदाहरण है-सिक्किम बैंक, जिसका विलय यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में हो गया तथा सिक्किम बैंक विलुप्त हो गया।

अब प्रश्न उठता है कि संस्था में इतने लोग काम करते हैं, सभी को वेतन मिलता है, तो मैं ही सतर्क क्यों रहूँ, या यूँ कहें, कि सिर्फ मेरे असतर्क रहने से, इतनी बड़ी संस्था पर क्यों असर पड़ेगा? यदि सभी ऐसी सोच रखेंगे, तो संस्था को विलुप्त होने से कोई नहीं बचा पाएगा। इससे संबन्धित एक छोटी कहानी याद आती है।

एक गाँव में निर्णय लिया गया कि गाँव का हर व्यक्ति, आज रात्रि के अंधेरे में, गाँव के तालाब में एक लोटा दूध डालेगा, जिससे अगले दिन सुबह दूध का तालाब दिखाई देगा। सबने जिम्मेदारीपूर्वक इस कार्य के लिए हामी भरी। जब अगले दिन सुबह-सुबह सारे लोग तालाब के किनारे इकट्ठा हुए तो तालाब को देखकर सारे आश्चर्य चकित हो गए। उनके आश्चर्यचकित होने का कारण बड़ा अजीब था। वास्तविकता यह थी कि तालाब में सिर्फ पानी ही पानी दिखाई दे रहा था, दूध का नामो-निशान नहीं था। यह सभी गाँव वालों के लिए आत्म-विश्लेषण का समय था। ऐसा क्यों हुआ कि सबने दूध की जगह पानी डाल दिया? क्योंकि सबकी यही सोच थी, कि जब सभी दूध डाल रहे हैं तो सिर्फ मेरे द्वारा पानी डालने से क्या फर्क पड़ेगा, या यूँ कहें, कि मेरे द्वारा पानी डालने से किसी को कहाँ पता चल पाएगा। लेकिन परिणाम क्या हुआ? सबने यही सोचा और परिणाम ऐसा निकला जिसकी किसी को उम्मीद नहीं थी। बहुत प्रसिद्ध कहावत है कि बूंद-बूंद से घड़ा भरता है इसका मतलब बूंद-बूंद की जरूरत है घड़े को भरने के लिए। अर्थात्, हर एक बूंद का महत्व है घड़े को भरने के लिए। किसी बदलाव के लिए या नियम के पालन करने के लिए हम दूसरों का इंतजार नहीं कर सकते। ये सारी चीजें हमसे शुरू होती हैं।

उपर्युक्त शब्दों का भावार्थ सतर्कता का महत्व दर्शाता है कि क्या हम अपनी संस्था में कार्यरत रहते हुए सतर्क हैं या फिर हम सिर्फ दूसरों से सतर्कता की अपेक्षा करते हैं? क्या हम अपने ग्राहकों से डिजिटल बैंकिंग के उपयोग से पहले सतर्कता के विभिन्न बिन्दुओं की चर्चा करते हैं? क्या हम किसी प्रकार का खाता खोलने से पहले केवाईसी नियमों का पालन करते हैं? क्या विभिन्न बैंकिंग प्रक्रियाओं में हम सतर्कता के नियमों का पालन करते हैं? क्या शाखा की सुरक्षा के लिए निर्धारित नियमों का ध्यान रखते हैं? संस्था में सतर्कता के ऐसे कई पहलू हैं जिन्हें हमें अपनी कार्यशैली में ढालने की जरूरत है, ठीक उसी तरह, जिस तरह जीवन से संबन्धित सतर्कता के पहलुओं को हम जीवन-शैली में ढालते हैं।

यदि हम संस्था में विभिन्न कार्य-कलापों को सतर्कता के साथ करते रहेंगे, तो हमारी संस्था स्वस्थ रहेगी तथा हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए सक्षम रहेगी।

पुष्कर कुमार सिन्हा  
स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भोपाल





# सतर्कता

## सुरक्षा की जननी है

सतर्कता बहुत ही व्यापक शब्द है। यह सृष्टि में सर्वत्र व्याप्त है। कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जीव-जगत के लिए प्रकृति की सबसे महत्वपूर्ण देन सतर्कता है और इसकी शुरुआत सृष्टि के प्रारम्भ के साथ ही हो गई थी। मनुष्य ही नहीं, सृष्टि का प्रत्येक जीव; यहां तक कि पेड़-पौधे भी बाहरी तत्वों के प्रति संवेदनशील होते हैं तथा हानि पहुंचाने वाले तत्वों के प्रति सदैव सजग व सतर्क रहते हैं। वस्तुतः यह सतर्कता ही उन्हें अपना अस्तित्व बनाये रखने में सहायक सिद्ध होती है; वरना इस संसार में, जहां सृष्टि का प्रत्येक जीव किसी अन्य के उपभोग योग्य है, सतर्क न रहने पर निर्बल का अस्तित्व मिटते देर नहीं लगती है। इसलिए न केवल मनुष्य; बल्कि जीव मात्र के लिए सतर्कता का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है; क्योंकि 'सतर्कता हटी, दुर्घटना घटी' सभी पर समान रूप से लागू होता है।

बुद्धिजीवी होने के कारण मनुष्य ने अपने को सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी सिद्ध किया है तथा अपनी बुद्धि का प्रयोग कर नित नई चीजों की खोज भी कर रहा है। अतः उसी अनुपात में उसकी सतर्कता का दायरा भी निरंतर बढ़ता जा रहा है। सृष्टि के अन्य जीव-जन्तु जहां केवल अपनी सुरक्षा के प्रति सतर्क रहते हैं; वहीं मनुष्य अपनी सुरक्षा के साथ-साथ परिवार, समाज से होते हुए संसारिक व्यवस्था एवं समग्र सृष्टि की रक्षा के प्रति भी सजग व सतर्क रहता है अर्थात् मनुष्य की सतर्कता का दायरा सम्पूर्ण सृष्टि की सुरक्षा तक व्यापक हो गया है।

यह तो रही व्यापक संदर्भों में सतर्कता की बात। अब यदि हम सीमित दायरे में आते हुए मनुष्य मात्र के लिए और उसमें भी आर्थिक जगत के तहत 'बैंकिंग क्षेत्र' में सतर्कता की चर्चा करें, तो पाते हैं कि यहाँ तो सतर्कता अत्यंत आवश्यक है; और हो भी क्यों न? बैंकिंग तो किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है। बल्कि विल रोजर्स के शब्दों में कहे तो सृष्टि के प्रारम्भ से अब तक जो तीन प्रमुख आविष्कार हुए हैं, उनमें अग्नि (Fire) और पहिया (Wheel) के बाद तीसरा प्रमुख आविष्कार बैंकिंग या केन्द्रीय बैंकिंग ही है। जनता से जमा राशि के रूप में धन स्वीकार करने तथा उसे जरूरतमंदों को उधार देने से शुरु हुआ बैंकिंग का कार्य निरंतर विस्तृत एवं जटिल होता जा रहा है। ऐसे में सतर्कता की आवश्यकता और अधिक बढ़ती जा रही है। सामान्य कार्य-निष्पादन के क्रम में गलतियां होने की संभावना तो रहती ही है, कभी-कभी लोगों द्वारा जान-बूझकर गलतियां करने की प्रवृत्ति भी देखने को मिलती है। बैंकिंग में वस्तुतः धन (मुद्रा) का ही लेन देन होता है और धन या मुद्रा जहां भी हो, वहां दबे पांव एक बुराई भी आ जाती है, जिसे भ्रष्टाचार के नाम से जाना जाता है।

अति प्राचीन काल से लेकर आज तक हर समय, हर जगह भ्रष्टाचार का अस्तित्व किसी न किसी रूप में मिलता है। कौटिल्य ने अपनी पुस्तक 'अर्थशास्त्र' (ईसा पूर्व तीसरी-चौथी शताब्दी में लिखित) में उल्लेख किया है कि जिस प्रकार जिह्वा के अग्र भाग पर रखे शहद या जहर का स्वाद मिल जाता है, ठीक उसी प्रकार



धन के साथ भ्रष्टाचार होने की संभावना रहती है। कौटिल्य ने भी स्वीकार किया है कि भ्रष्टाचार को रोकना कठिन है, लेकिन भ्रष्टाचार करने वालों पर नज़र रखने और भ्रष्टाचार करते हुए उन्हें पकड़ने के लिए विश्वसनीय जासूसों की नियुक्ति का सुझाव भी उन्होंने दिया है।

यद्यपि वर्तमान में सतर्कता का संबंध जासूसी से नहीं है; तथापि इसे भ्रष्टाचार निवारण की प्राथमिक कड़ी के रूप में देखा जा सकता है। भ्रष्टाचार शब्द का प्रयोग आमतौर पर किया जाता है; फिर भी इसकी अलग-अलग व्याख्या उपलब्ध होती है। सामान्य रूप से किसी जन प्रतिनिधि या जनसेवक द्वारा अपने पद या अधिकार का दुरुपयोग कर अनैतिक व स्वार्थपूर्ण कार्य करना भ्रष्टाचार कहलाता है। भ्रष्टाचार की जड़ें दिन प्रतिदिन गहरी होती जा रही हैं। इन्हें जड़ से खत्म करने का उपाय 'सतर्कता' ही है। इस प्रकार सतर्कता सक्रिय निगरानी की अवस्था है, जिसके तहत किसी भी प्रकार की अवैधानिक गतिविधि को रोकने के साथ-साथ खतरे या आपात् स्थिति से निपटने का निर्णय लिया जाता है।

जहां तक बैंकिंग व्यवस्था का प्रश्न है, इसके सही व समुचित संचालन के लिए सतत् सतर्कता अत्यंत आवश्यक है; क्योंकि जनता का विश्वास ही बैंकिंग व्यवस्था का मूल आधार है। अतः यह सुनिश्चित करना आवश्यक होगा कि कहीं भी, कभी भी कोई त्रुटि, चाहे वह जानबूझ कर या अनजाने में, न होने पाये और आम जनता का विश्वास बना रहे। जानबूझ कर की गई गलती को धोखाधड़ी कहा जाता है, जिसे रोकने के लिए बैंकों में लेखा-परीक्षा एवं निरीक्षण की एक सुव्यवस्थित प्रणाली विद्यमान है। इसके अतिरिक्त मुख्य सतर्कता अधिकारी के नेतृत्व में सतर्कता विभाग भी कार्यरत है, जो केन्द्रीय सतर्कता आयोग के नियंत्रण एवं निर्देशन में कार्य करता है। अतः एक स्वाभाविक प्रश्न यह उठता है कि बैंकिंग कार्य प्रणाली के सुचारु संचालन में सतर्कता की भूमिका क्या है?

### सतर्कता की भूमिका :

कहा गया है कि 'उपचार से बचाव बेहतर होता है'। अतः हमारा प्रयास होना चाहिए कि भ्रष्टाचार तथा धोखाधड़ी हो ही नहीं। इसके लिए निवारक सतर्कता अपनाई जानी आवश्यक है। बैंकों में इसे निम्न प्रकार सुनिश्चित किया जा सकता है:

- संवेदनशील शाखाओं का निरीक्षण सतर्कता अधिकारियों द्वारा समय-समय पर किया जाना चाहिए। ऐसी शाखाएं, जहाँ पर अचानक जमा राशियों अथवा व्यय में वृद्धि देखी जाए, उनका निरीक्षण करना भी सतर्कता के कार्य में आता है।

- सतर्कता अधिकारी द्वारा शाखा निरीक्षण के दौरान संपूर्ण व्यवस्था की समीक्षा की जानी चाहिए। विशेष रूप से नई योजनाओं के प्रचार-प्रसार की समीक्षा की जाए। साथ ही उच्च मूल्य के लेन-देन वाले संवेदनशील मामलों व आंतरिक रखरखाव की गतिविधियों की भी समीक्षा की जानी चाहिए।
- सतर्कता अधिकारी का एक महत्वपूर्ण कार्य है दस्तावेजों की जांच करना। इसमें सावधानी पूर्वक शाखा के रजिस्ट्रों, बहियों, खातों तथा नियंत्रक विवरणियों की जांच की जानी चाहिए। इससे यह पता चलता है कि शाखा द्वारा संबंधित कार्य प्रणालियों का अनुपालन किया जा रहा है अथवा नहीं।
- शाखाओं का औचक निरीक्षण व जांच करने से गिरवी अथवा दृष्टिबंधक रखे गए सामान की गुणवत्ता की जांच की जा सकती है। मामले के खुल जाने के भय से धोखाधड़ी के निवारण में सहायता मिलती है तथा अपराध करने की प्रवृत्ति पर रोक लगती है।
- अपने उपलब्ध साधनों से बेहतर जीवन शैली अपनाने वाले कर्मचारियों द्वारा भ्रष्टाचार किये जाने की संभावना बनी रहती है। ऐसे में कार्मिकों के संवर्ग पर ध्यान दिये बिना उन पर निगरानी रखी जानी चाहिए।
- सीबीआई अधिकारियों के साथ करीबी संबंध बनाए रखना तथा ऐसी शाखाओं का निरीक्षण करना, जहाँ पर उच्च स्तर तथा बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी हुई हो। इसके अतिरिक्त ऐसी शाखाओं की पहचान की जानी चाहिए जहाँ पर धोखाधड़ी की संभावनाएं हों।
- निवारक सतर्कता के तहत शाखाओं तथा कार्यालयों से प्राप्त शिकायतों को प्रधान कार्यालय तक पहुंचाकर इस विषय में समुचित कार्रवाई के निर्देश प्राप्त किये जाने चाहिए। इसके तहत जांच करना तथा धोखाधड़ी में शामिल कर्मचारियों के विषय में विस्तृत विवरण प्रधान कार्यालय को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत करना चाहिए।
- सतर्कता विभाग को मासिक विवरण प्रस्तुत करना तथा इससे जुड़ी गतिविधियों का अनुश्रवण कर इनकी जानकारी अनुशासनिक अधिकारियों तक पहुंचाना भी एक अनिवार्य अंग है।
- प्रत्येक माह की अंतिम तिथि को लंबित मामलों की जानकारी प्रधान कार्यालय को भेजी जानी चाहिए।

इसके अतिरिक्त सभी मामलों का रिकार्ड रखते हुए छानबीन करना तथा मामले से जुड़े प्रत्येक पहलू का विस्तृत विवरण रखा जाना भी आवश्यक है। मामले पर कार्रवाई करना तथा उसे समाप्त करने के विषय में रिपोर्ट प्रेषित करना और संबंधित सरकारी अधिकारियों के साथ इस पर अनुवर्ती कार्रवाई कराना भी निवारक सतर्कता हेतु आवश्यक है।

प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ व अर्थशास्त्री कौटिल्य ने अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र में लिखा है कि भ्रष्टाचार

को रोकने के लिए जासूसी आवश्यक है। अतः प्रश्न उठता है कि क्या सतर्कता अधिकारी में जासूसी के गुण होने चाहिए। तो इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि हां। सतर्कता अधिकारी में जासूसी के गुण होने पर वह सोने में सुहागा की उक्ति को चरितार्थ करते हुए स्वयं के कार्य में निखार ला सकता है। धोखाधड़ी की गतिविधियों के प्रकाश में आने से पहले ही यदि संदिग्ध कार्यों की जानकारी रखी जाए, तो अपराधों की संख्या एवं विस्तार को रोकना आसान हो जायेगा।

अतः सतर्कता अधिकारी को आवश्यक निगरानी करते रहना चाहिए। उसे अपने जाँच कौशल का प्रयोग करते हुए भ्रष्ट आचरण करने वाले कर्मचारियों तथा ऐसे कर्मचारियों, जो अपनी हैसियत से ऊँचा जीवन स्तर जीते हैं, के विषय में समय-समय पर अपेक्षित जानकारी इस प्रकार प्राप्त करनी चाहिए कि किसी को संदेह न हो। इतना ही नहीं, सतर्कता अधिकारियों को विभिन्न मीडिया रिपोर्टों पर भी ध्यान देना चाहिए तथा यह पता करना चाहिए कि अन्य स्थानों/ संस्थानों में किस तरह से निगरानी एवं जाँच का कार्य किया जा रहा है। जिन कर्मचारियों के पास बड़े आर्थिक उत्तरदायित्व हों, उन पर विशेष नजर रखी जानी चाहिए। इसके लिए धोखाधड़ी से जुड़े हुए क्षेत्रों की पहचान करना आवश्यक है। इसमें कई संवेदनशील क्षेत्रों को रखा जा सकता है और बैंकिंग से जुड़े प्रत्येक क्षेत्र को संवेदनशील ही मानना चाहिए।

यदि कोई कर्मचारी तय किये गए मानदंडों का उल्लंघन करते हुए पाया जाता है तो यह आवश्यक हो जाता है कि उस पर सतत निगरानी रखी जाए। निगरानी के दायरे में लापरवाह कर्मचारियों को भी सम्मिलित किया जा सकता है। इसी तरह अपने अधिकारों का दुरुपयोग करने वाले व्यक्तियों पर भी नजर रखकर संभावित खतरे को पहचाना जा सकता है। प्रसंगवश बैंकों में धोखाधड़ी तथा भ्रष्टाचार की रोकथाम हेतु गठित घोष समिति के कुछ महत्वपूर्ण संस्तुतियों का उल्लेख करना समीचीन होगा, जो निम्नानुसार हैं :-

- धोखाधड़ी के संभाव्य क्षेत्रों तथा शाखाओं का समय-समय पर आकस्मिक निरीक्षण किया जाए। निरीक्षण अनियमित प्रकृति का होना चाहिए; ताकि इसकी जानकारी संबंधितों को न हो।

- धोखाधड़ी को रोकने से संबंधित प्रक्रिया एवं कार्य-प्रणाली के विषय में शाखा स्टाफ में निरीक्षण के दौरान जागृति लाने पर जोर दिया जाए।

- ऐसी घटनाएं, जो धोखाधड़ी से जुड़ी हुई हैं तथा हाल ही में घटित हुई हैं, उनसे शाखा कर्मचारियों को अवगत कराया जाना चाहिए। साथ ही यदि कर्मचारियों की ओर से सुझाव प्राप्त हों, तो उन्हें भी रिपोर्ट में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बैंकों में सतर्कता बहुत ही महत्वपूर्ण है; क्योंकि बैंकिंग एक संवेदनशील क्षेत्र है। साथ ही इसमें विभिन्न आयामों का निरंतर विकास हो रहा है; जिसके साथ जोखिम भी उसी प्रकार बढ़ता जा रहा है। अतः बैंकिंग प्रणाली के व्यवस्थित संचालन में सतर्कता की अहम एवं अनिवार्य भूमिका है।



एस.एस. यादव  
रा.भा.का.वि.,के.का. मुंबई



जैसा कि हम जानते हैं- 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है'. इस समाज का निर्माण कई तरह के लोगों से मिलकर हुआ है . समाज के कई लोग बहुत परेशान, दुखी, अभावग्रस्त और गरीब हैं. उन सभी के लिए कुछ करने की भावना श्रीमती नम्रता तिवारी, अध्यक्ष, यूनि-वन के जहन में आई तो उन पीड़ित लोगों के लिए कुछ अच्छा करने के उद्देश्य से उन्होंने यूनि-वन की स्थापना 29 मई 2014 को की. आज इस संस्था को मानवता की सेवा करते हुए 2 वर्ष 6 महीने हो गए. इन ढाई वर्षों में इस संस्था ने काफी सराहनीय कार्य किया है तथा कई लोगों को सहायता प्रदान की है.

यूनि-वन के विभिन्न कार्यकलापों में रक्तदान शिविर का आयोजन, दिव्यांगों को आर्थिक सहायता शामिल है. यूनि-वन द्वारा दिवाली मेले का आयोजन भी किया गया, जिससे प्राप्त राशि का उपयोग जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए किया जाएगा.

इस संस्था की स्थापना के समय से मैं इन क्रिया-कलापों से जुड़ी हुई हूँ. इस दौरान मुझे गरीब, परेशान व अभावग्रस्त बच्चों की तकलीफ भरी जिंदगी को पास से देखने का मौका मिला. उनके कल्याण के लिए जो कुछ भी यूनि-वन द्वारा किया जा सका वह अपने आप में अनुकरणीय है. हम लोग भाग्यशाली हैं, जिन्हें भगवान ने सब कुछ दिया है. यदि हम अपने संसाधनों में से सामर्थ्य अनुसार थोड़ा भी जन-कल्याण के लिए दें सकें, तो यह दरिद्रनारायण की सच्ची सेवा होगी.

उस परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे हमारी संस्था 'यूनि-वन' को हमेशा सक्षम बनाते रहें, जिससे इस संस्था के माध्यम से हम मानवता की छोटी सी सेवा कर इसके उद्देश्य को सच्चे अर्थों में प्राप्त कर सकें.

अंत में चार लाइनें जो कि यूनि-वन की उपादेयता को उजागर करती हैं :-

**जिंदगी में आप कितने खुश हैं, यह महत्वपूर्ण नहीं है !  
बल्कि, महत्वपूर्ण यह है कि, आपके कारण कितने लोग खुश है !**

कल्पना जैन  
पत्नी श्री ए.के.जैन



# THE CAPITAL CONUNDRUM

Modi government to infuse ₹22,915 crore capital in 13 Public Sector Banks in FY 16-17. According to a Ministry of Finance release, the capital infusion is based on “needs as assessed from the CAGR of credit growth for the last 5 years, banks’ own projections of credit growth and an objective assessment of the potential for growth of each PSB.”

Now the question is, how will a government assess the potential for growth of a Bank and on what basis will it infuse capital? Why not infuse equal capital among all the Banks? How will the government decide whether a Bank needs more capital than the other or whether it possesses the potential to raise the same from other sources?

Let’s take an example. Consider there are only 2 Banks in a country ‘Z’ – ‘Bank X’ and ‘Bank Y’ and both of them specialize in Housing Loans. The government of ‘Z’ decided to allocate Rs 1000 crores to the banking sector as a part of its financial budget, to infuse more liquidity and improve credit growth in the economy. But, it is unable to decide which bank would perform better in the coming years. The government ‘Z’ gives a timeline of 5 years to each Bank to prove their worth by giving them a target housing loan portfolio of ₹10,000 cr.

Bank X and Bank Y framed their own strategies to entice customers, for selling their Housing Loan Products.

Bank X adopted an aggressive strategy to build its loan book starting from selling big-ticket Housing Loan products to its existing corporate customers, massive restructuring of the existing housing loans and tie-ups with the residential housing builders. In order to increase the volume of its housing loan portfolio, the Bank focused on borrowers where the loan amount was above ₹75 lacs.

Bank Y adopted a niche strategy and concentrated on its low-end salaried customers. In order to increase the volume of its housing loan portfolio, it focused on increasing the number of borrowers and where the loan amount would be less than ₹30 lacs.

After 5 years, the housing loan portfolio of the both the Banks was ₹10,000 Cr. and their respective loan books are shown as below:

Bank Name	Bank X	Bank Y
Total Portfolio Size	₹ 10,000 cr.	₹ 10,000 cr.
No of borrowers	12,000	40,000
Average Loan Size	₹ 83 lacs	₹ 25 lacs

The government ‘Z’ congratulated both the banks for their performance in accomplishing their targets since both of them had attained the ₹10,000 cr. mark in their housing loan portfolio, but still the question remained how to allocate the capital?

## Solution:

The government ‘Z’ opted for an objective assessment technique to analyze the business of the respective banks. The housing loan portfolio of each bank was weighed as per its risk weight or riskiness factor to arrive at the risk weighted assets. ‘Z’ referred to the following table to arrive at the risk weighted assets:

Category of Loan	Risk Weight
Upto ₹30 lacs	35%
Above ₹30 lacs and upto Rs 75 lacs	50%
Above ₹75 lacs	75%

After weighing the loans with their respective risk weights, the table looked like this:

Bank Name	Bank X	Bank Y
Total Portfolio Size (Total Asset Size)	₹10,000 crores	₹10,000 crores
No of borrowers	12,000	40,000
Average Loan Size	₹83 lacs	₹25 lacs
Risk Weighted Assets	75% * 10,000 = ₹7500 crores	35% * 10,000 = ₹3500 crores

**Scenario 1:** Suppose, if ‘Z’ decides to allocate equal capital among both the banks.

Bank Name	Bank X	Bank Y
Risk Weighted Assets	₹7500 crores	₹3500 crores
Capital allocated	₹500 crores	₹500 crores
Capital Adequacy Ratio = Capital Allocated/RWA	6.67%	14.29%

If the minimum regulatory requirement is 8%, then Bank X is low on capital and does not fulfill the regulatory requirements and Bank Y will be excess on capital.

**Scenario 2:** Suppose, if ‘Z’ decides to allocate proportionate capital among both the banks based on the risk weighted assets.

Bank Name	Bank X	Bank Y
Risk Weighted Assets	₹ 7500 cr.	₹ 3500 cr.
Capital allocated	₹ 650 cr.	₹ 350 cr.
Capital Adequacy Ratio = Capital Allocated/RWA	8.67%	10.00%

In scenario 2, both the Banks are able to meet the minimum regulatory requirements. This is because Bank ‘X’ has higher concentration of risk and thus requires higher capital. On the other hand, with the same asset size, Bank Y has diversified its portfolio with more number of borrowers and therefore can manage with less capital.

As rightly said - “Capital is always eager and ready to work for anyone who is ready to employ it”. It is not a conundrum after all!

**Ankita Ghosh**  
RMD, C.O., Mumbai



# सतर्कता

## &

## मेडिकल इंश्योरेंस

टीवी के एक कार्यक्रम में प्रस्तुतकर्ता कहते हैं- 'जुर्म के प्रति सतर्क रहिए', सही बात है. समय-समय पर बैंक में भी विभिन्न परिस्थितियों में कर्मचारियों को सतर्क रहने हेतु दिशानिर्देश दिये जाते हैं. साथ ही प्रति वर्ष सतर्कता सप्ताह का भी आयोजन किया जाता है. किन्तु क्या सतर्कता केवल समाज में हो रहे जुर्म अथवा बैंक के काम-काज तक ही सीमित है? घर हो या बाहर, सतर्कता हर परिस्थिति में आवश्यक है. घर में अबोध बालक के रहते काँच की समस्त वस्तुएँ, धारदार वस्तुएँ, दवाइयाँ, अन्य क्रीमें एवं रसायनिक वस्तुओं को बालक की पहुँच से दूर रखना ही एक माँ के लिए सतर्कता है. किशोरवय बच्चों की शिक्षा के अतिरिक्त, उनकी मित्र मंडली की ओर ध्यान देना भी सतर्कता का उदाहरण है. वृद्ध माता-पिता की बीमारी को गंभीरता से लेते हुए समय पर उचित चिकित्सा करवाना बच्चों की सतर्कता है. बस स्टॉप में आधा घंटा प्रतीक्षा करने के पश्चात् मोहित को ध्यान आया कि वह गलत बस हेतु प्रतीक्षा कर रहा था. बैंकर होते हुए भी रूमी कभी छुट्टे पैसे नहीं रखती, जिससे उसे कई जगह असुविधाओं का सामना करना पड़ता है. सुजाता को कभी भी याद नहीं रहता कि वाहन में पेट्रोल कब भरवाया था, फलस्वरूप कई बार उसका वाहन बीच रास्ते में बंद हो जाता है. यह सब सतर्कता की कमी के कारण होता है, जिसे हम सामान्य भाषा में गैर-जिम्मेदार होना कहते हैं. आग लगने की स्थिति में क्या करें और क्या न करें, यह हम सभी को ज्ञात होता है, किन्तु कितने लोग होंगे जो अपने इस ज्ञान पर अमल कर पाएँगे. किसी विपरीत परिस्थिति में उचित कदम उठाना भी सतर्कता है जिसे हम सामान्य भाषा में 'हाज़िर दिमागी' होना कहते हैं.

सतर्कता तो एक मानवीय गुण है जो किसी में अधिक, तो किसी में कम होता है, और रोज़मर्रा के कार्यों में सभी के लिए आवश्यक हो जाता है. स्वयं की ओर भी एक प्रकार की सतर्कता होती है, खासकर जब बात स्वास्थ्य की हो, और अगर आपका मेडिकल इंश्योरेंस है तो फिर क्या कहने. मेडिकल इंश्योरेंस अपने आप में एक बहुत बड़ी सतर्कता है. बैंक कर्मचारी होने के नाते हम सभी को मेडिकल इंश्योरेंस प्राप्त है पर प्रश्न यह उठता है कि हममें से कितने लोग मेडिकल इंश्योरेंस की सुविधा ले पाने में सक्षम हैं. कितने सतर्क हैं हम अपनी इस सुविधा की ओर? तो आइये इस वाक्य के भावार्थ को समझें.

**सतर्कता और मेडिकल इंश्योरेंस-** कर्मचारियों हेतु वर्ष 2015 से प्रारम्भ मेडिकल इंश्योरेंस, बैंकिंग के क्षेत्र में एक नई अवधारणा है. समान्यतः यह पाया गया है कि कर्मचारी अज्ञान अथवा अल्पज्ञान के कारण विपरीत परिस्थितियों में

इस योजना का पूर्ण लाभ नहीं ले पाते. आइये देखें, कुछ सच्ची घटनाएँ, जिससे वस्तुस्थिति कुछ स्पष्ट हो सके.

- 1) श्रीमान 'क' की माताजी को अचानक ही चिकित्सा की जरूरत पड़ी. उन्हें तत्काल अस्पताल ले जाया गया. उनका मेडिकल इंश्योरेंस था और माताजी की सभी जानकारी चूँकि यूनियन परिवार में तथा इंश्योरेंस कंपनी के पास भी उपलब्ध थीं, अतः अस्पताल में 'कैशलेस' में कोई समस्या नहीं हुई और समय से चिकित्सा हो गई.
- 2) श्रीमान 'ख' की माताजी को अचानक ही चिकित्सा की जरूरत पड़ी. उन्हें तत्काल अस्पताल ले जाया गया. श्रीमान 'ख' का मेडिकल इंश्योरेंस तो था किन्तु आश्रित के रूप में माताजी की जानकारी चूँकि यूनियन परिवार में उपलब्ध नहीं थी इसलिए इंश्योरेंस कंपनी के पास भी वह जानकारी उपलब्ध नहीं थी. अस्पताल ने कैशलेस से मना कर दिया. तब श्रीमान 'ख' को अपने संबन्धित कार्मिक विभाग से संपर्क कर माताजी की जानकारी यूनियन परिवार में आनन-फानन में दर्ज करवानी पड़ी. फिर इसकी जानकारी इंश्योरेंस कंपनी को देनी पड़ी. तब कहीं जाकर अस्पताल में उनके लिए कैशलेस की प्रक्रिया प्रारम्भ हो पाई.
- 3) श्रीमान 'ग' की माताजी को अचानक ही चिकित्सा की जरूरत पड़ी. उन्हें तत्काल अस्पताल ले जाया गया. श्रीमान 'ग' का मेडिकल इंश्योरेंस तो था किन्तु आश्रित के रूप में माताजी की जानकारी यूनियन परिवार में उपलब्ध नहीं थी. सो इंश्योरेंस कंपनी के पास भी वह उपलब्ध नहीं थी. अस्पताल ने कैशलेस से मना कर दिया. रविवार का दिन था और बैंक की छुट्टी थी, इसलिए यूनियन परिवार में नाम दर्ज करवा पाना भी संभव नहीं हो पाया. अस्पताल में स्वयं की राशि जमा कर चिकित्सा प्रारम्भ की गई.

एक ही प्रकार की स्थिति, किन्तु अलग-अलग परिणाम. परेशानी और चिंता वह अलग. तो क्या थोड़ी सी सतर्कता बरतने से श्रीमान 'ख' और 'ग' को भी श्रीमान 'क' जैसा ही परिणाम नहीं मिल सकता था?

**आइये देखें कि कैसे और किन बिन्दुओं पर बरतें सतर्कता:**

- **आश्रितों के नाम न होना** - सबसे अधिक सतर्कता की आवश्यकता इसी बिन्दु पर है. अक्सर यह पाया जाता है कि अस्पताल में भर्ती के समय

आश्रितों के नाम यूनियन परिवार में डाले ही नहीं गए हैं। ऐसी विपरीत परिस्थिति में जहां एक ओर अस्पताल 'कैशलेस' हेतु मना कर देता है, वहीं कर्मचारी को तत्काल ही नाम अपडेट करवाने हेतु मानव संसाधन से संपर्क करने की आवश्यकता आ पड़ती है।

- **आश्रितों के नाम दर्ज हैं, किन्तु जन्म-तिथि नहीं है** – यह एक अन्य प्रकार की परिस्थिति को जन्म देता है। जब भी किसी आश्रित को चिकित्सा की आवश्यकता होती है तो 'कैशलेस' हेतु आश्रितों के केवल नाम ही नहीं वरन् सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करनी पड़ती है। अगर यूनियन परिवार में आश्रित की जन्म तिथि नहीं है, तो कर्मचारी को तत्काल ही आश्रित के जन्मतिथि के साक्ष्य देने पड़ते हैं। इससे 'कैशलेस' में भी विलंब होता है।
- **जन्मतिथि है किन्तु त्रुटिपूर्ण है** – यूनियन परिवार में दी जाने वाली जन्मतिथि और साक्ष्य के रूप में जो दस्तावेज उपलब्ध हैं, अगर उनकी तिथि में मेल नहीं है तो यह एक बड़ी विसंगति मानी जाती है। यूनियन परिवार में दी गई जन्मतिथि वही होनी चाहिए जो आश्रित के आधार कार्ड/वोटर आईडी कार्ड पर अंकित हो।
- **आश्रितों के विवरण एवं हॉस्पिटल बिल में असमानता** – जैसे- 'मीना कुमारी' और 'मीना रानी'। ये दो पृथक नाम हैं। अगर यूनियन परिवार में मीना कुमारी है और चिकित्सा बिल मीना रानी के नाम पर बना है, तब इंशोरेंस कंपनी इस पर प्रश्न करती है और यह वाजिब भी है। इस प्रकार की त्रुटि को दूर करने हेतु कर्मचारी को पुनः आश्रित का पहचान पत्र जमा करवाना पड़ता है।
- **आश्रितों की गलत सूचना प्रेषित करना** – कुछ घटनाएँ ऐसी भी हुई हैं, जब कर्मचारी ने अपने विवाहित पुत्र अथवा पुत्री हेतु चिकित्सा-बिल का आवेदन किया है। मेडिकल इंशोरेंस संबंधी स्टाफ परिपत्र में स्पष्ट शब्दों में आश्रित की परिभाषा दी हुई है। अतः चिकित्सा बिल का आवेदन करते समय इन सभी बिन्दुओं के प्रति सतर्क रहना आवश्यक है।
- **बिल की मूल प्रति खो जाना** – अस्पताल में चिकित्सा के दौरान जो भी व्यय कर्मचारी द्वारा स्वयं वहन किया जाता है, उसकी अदायगी के लिए बिल की मूल प्रति जमा करवाना अनिवार्य है। अतः सभी बिलों की मूल प्रति सहेज कर रखना अत्यंत आवश्यक है।
- **जमा किए गए बिल एवं आवेदन की राशि में असमानता** – अगर कर्मचारी ₹10000/- की अदायगी हेतु आवेदन कर रहा है, तो इतनी ही रकम के बिल की मूल प्रति भी जमा करवाना अनिवार्य है। कई घटनाओं में यह पाया गया है कि आवेदनकर्ता कम राशि के बिल जमा करते हैं, तथा भुगतान हेतु ज्यादा राशि का आवेदन करते हैं, जिससे भुगतान की प्रक्रिया में विलंब होता है।
- **इंशोरेंस के नियमों के प्रति अज्ञानता** – इंशोरेंस की पॉलिसी के कुछ आधारभूत नियम हैं, जैसे पॉलिसी में नामित बीमारियों के लिए ही आवेदन कर सकते हैं। 24 घंटे या अधिक समय के लिए अस्पताल में भर्ती होने पर ही आवेदन हेतु पात्रता मानी जाती है। नियमों की जानकारी के अभाव में कर्मचारी कई बार इंशोरेंस हेतु पात्र ही नहीं होते।
- **बिल की राशि में हेरा-फेरी** – आश्चर्य किन्तु सत्य। कुछ ऐसी भी घटनाएँ हो सकती हैं कि कर्मचारी ने बिल की राशि को ₹600/- से बदलकर

₹6000/- कर भुगतान हेतु आवेदन कर सकता है। ऐसी परिस्थिति में जांच के दौरान यह हेरा-फेरी पकड़ी जा सकती है एवं कर्मचारी पर औद्योगिक संबंध विभाग के नियमों के तहत कार्यवाई हो सकती है।

- **सूचना में विलंब** – अगर कर्मचारी किसी ऐसे अस्पताल से चिकित्सा लेने का इच्छुक है जहां कैशलेस की सुविधा उपलब्ध नहीं है, तब अस्पताल में भर्ती होने की सूचना, 7 दिनों के भीतर टी.पी.ए. को प्रेषित करना अनिवार्य है। अधिकतर कर्मचारी सूचना प्रेषित करने में विलंब करते हैं, जिससे भुगतान की प्रक्रिया के समय विलंब के कारणों की जानकारी प्रेषित करने की आवश्यकता पड़ जाती है। इससे प्रक्रिया की गति धीमी पड़ जाती है।

यूनियन परिवार केवल एक सॉफ्टवेयर ही नहीं, वरन् हर कर्मचारी का दर्पण है। उपरोक्त प्रसंगों से यह ज्ञात होता है कि यूनियन परिवार में दी गई स्वयं की एवं आश्रितों की जानकारी की ओर अत्यधिक सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। यूनियन परिवार का पृष्ठ खोलते ही एक संदेश आता है, जो आश्रितों की जानकारी की जांच करने के लिए कहता है। यह संदेश इसीलिए आता है कि अगर सही एवं सम्पूर्ण जानकारी यूनियन परिवार में उपलब्ध हुई, तो मेडिकल इंशोरेंस हेतु किसी भी समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। यह तो आप भी मानेंगे कि जब परिवार के सदस्य को चिकित्सा की आवश्यकता है, तब आश्रितों के साक्ष्य लेकर मानव संसाधन विभाग के चक्कर काटना बहुत दुखदायी प्रतीत होता है।

सतर्कता की परिभाषा देना तो संभव नहीं, किन्तु अगर यह कहा जाए कि सतर्कता हेतु जागरूकता एवं ज्ञान के दायरे का विस्तार आवश्यक है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। ज्ञान विस्तार हेतु व्यक्ति को अपना समय देने की आवश्यकता है, जो अधिकतर लोगों के पास है नहीं। आज का युग ही ऐसा है कि लोगों को सांस तक लेने की फुर्सत नहीं। किन्तु उपरोक्त बिन्दुओं पर बरती गई थोड़ी सी सतर्कता भविष्य में कठिन परिस्थितियों में, कर्मचारी का बहुत समय तथा परेशानी से बचाने में सहायक होगी। स्वयं एवं आश्रितों की जानकारी को सही-सही यूनियन परिवार में देना एक ही बार का काम है। उसके पश्चात् सॉफ्टवेयर द्वारा हर बार यही जानकारी प्रेषित की जाएगी, जब तक कोई बदलाव न हो। तब जानकारी देने हेतु कर्मचारी को भाग दौड़ नहीं करनी पड़ेगी तथा बिल का भुगतान तत्काल होगा।

शिल्पा शर्मा सरकार

मा.सं.वि.कें.का., मुम्बई



## शुभमस्तु



श्री अरविंद मोहन  
उप महाप्रबंधक



श्री एस. के. डे  
उप महाप्रबंधक

हम आपके सुखद एवं स्वस्थ सेवा निवृत्त जीवन की कामना करते हैं

विभिन्न ग्राम सभाओं में बैंक द्वारा सतर्कता जागरूकता एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन में जनसहभागिता हेतु आयोजन





# what's new?



## as a password?

Most of us have been using passwords for our various kinds of activities, be it on social media accounts, email accounts, tickets booking or even online banking etc. The passwords even having strong combination of alpha, numeric, special characters which once considered as a secure and easy way of conducting the transaction have of late been becoming a major hassle given to the fact that with the multiplicity of platforms that we use today to transact different kind of transactions, number of passwords have to be remembered as each platform has its own requirement and logic for the type and size of password you have, added to it the chances of password theft, storage by the passwords by the systems we use to transact and many more such issues. In order to make life simpler and making the passwords easier to remember, people have been keeping the passwords either stored in their diaries, computers, laptops or even share with their loved ones but at some point of time, these all tend to land them in one problem or other and passwords as such look more a nuisance than a pleasure to transact with.

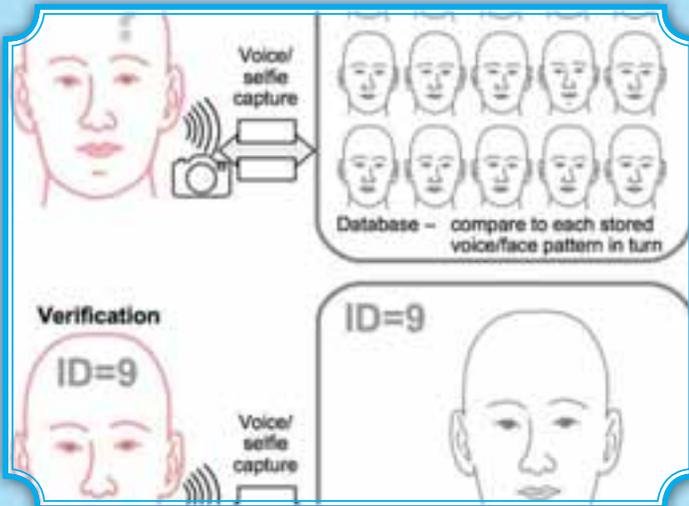
**Biometric Authentication:-** As a more secured way of authentication than passwords, use of biometrics has been prevalent in many areas of transaction and in many countries across the world. Be it at airport or entry to a very high security zone like data center, defense installations, areas of strategic importance, biometrics have proven to be an authentic and reliable tool to authenticate the user. Use of fingerprints, thumb impression, Iris scan, voice recognition, Pulse rate, Heartbeat etc have been in vogue to ensure the genuineness of the credentials of the person before allowing the access.

Even in banking also for login to CBS like software, use of thumb impression as part of login process has been made mandatory by some banks. Although as a matter of policy, banks provide biometric ATM cards to illiterates who cannot make use of numeric PIN and install biometric ATMs so that such card holders can use it but in view of incidences of card cloning and PIN sharing on the rise exponentially, the days are not far when banks may be constrained to install biometric ATMs and issue biometric enabled cards to even literates.

Even at many places like private organizations and offices, it has been made compulsory for the employees to mark their attendance through biometric systems. The importance of biometrics have been truly acknowledged in the government's initiative for more and more number of enrollments for Aadhaar cards—the biometric enabled identification proof which the government of India has taken as project to issue to all its citizens. Through this rigorous initiative, already 70 to 80 % populations have been covered and others are being enrolled through an ongoing major drive of the government. The process will not only help the government to identify the true beneficiary of any government added scheme for government benefits but also will help the government to keep a check on the fraudsters as well as bogus or ineligible beneficiaries and even weed out the middlemen. The process has even helped the institutions like banks

to get the KYC of the applicants done with more authenticity and reliability. Even certain banks in India have also launched mobile banking app wherein the customers instead of logging in through PIN can use their thumb impressions for login. Even the new gen smartphones are being developed with the biometric tools which in itself reflect the potential and possibility that is about to be in the days to come. Days may not be far when most of the transactions will be carried through the biometric tools as with the ever increasing volume of transactions and multiplicity of channels available on the digital platform, cyber frauds have also been increasing. Safety and security of the data as well as maintaining the reliability of channels has been a major concern for all the institutions as well as the cyber security group of the government.





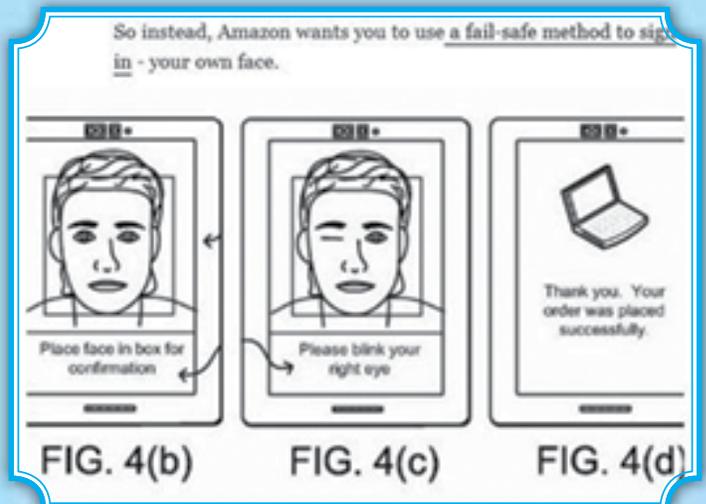
“Selfie” as a password:- Alike other biometric authentication tools, “Selfie” has also been gaining popularity across the world. “Selfie” which in itself has gained a lot of obsessions among people across the globe, has been considered as even more safer way of authentication of a person. Some banks in India have already been offering its customers the option to open their savings accounts through “Selfie” mode.

Companies like Amazon and Mastercard are already in the process of offering its customers to use “Selfie Pay” as a mode of authentication instead of using conventional methods of authentication i.e the passwords. The passwords due to its various added hassles are now being considered as a thing of past and is been dying fast. The companies relying on the facial measures find “selfies” of people more authentic tool to check the frauds of impersonification, identity theft as well as unauthorized access. Certain financial firms like one USAA (United Service Automobile association- a Texas Based Fortune 500 company) ask their customers to use “Selfie” as their login credential to the mobile banking app instead of usual methods of PIN or passwords. Further the “selfie” can provide even the illiterates and others with different kinds of disabilities, the easier and more authentic tool of authorization. At some places, the tax authorities have made it mandatory for the tax payers to file their return with “Selfie” as authentication process.

How the process works:- The FRT (Facial recognition Technology) technology assigns a value to each person’s face, the size and length of nose, size and structure of eyes etc and whenever a person goes for online shopping or tries to login to his bank’s mobile banking app, the system captures the “selfie” and matches the same with the already stored data. In order to avoid the possibility that the person’s photo may be clicked

and used as identity, the app may also require the person to smile or blink so that a real time image is captured and ensured that the person logging in is not the static photograph but a real person logging in. As for any person to capture a selfie is more easier than entering a PIN or password, the use of selfie as a authentic mode of identification has got more favours than anyother mode.

Issues and Challenges:- Like any other technological tool, the “ Selfie” mode of authentication has also certain security and privacy concerns. It is still not clear as how the well the apps will tackle the issue where a person’s face changes on account of weight gain, wearing of glasses or growing of beard etc. However the companies like Morpho Trust USA who provide identity services, says that their technology focuses on the features that are unlikely to change over long period of time like shape of someone’s eyes, nose etc. There may be issues with persons having identical twins. The smartphones people use may not have the required apps to capture the selfie to be used as a mode of authentication. However the use of selfie is not the only and ultimate mode of authentication. A person not convince or conversant with the mode, may opt other biometric modes of authentication like fingerprint or thumb impression or palm screen, IRIS scan etc.



Nonetheless given the pattern, scope, dimension and volume involved in ever increasing cyber frauds across the globe, the mode of “Selfie” as yet another strong yet easier mode of authentication can certainly go a long way in the days to come.

**Sandeep Gupta,**  
S.T.C., Lucknow 



# WHISTLE BLOWERS PROTECTION ACT, 2011

## Background

In August 2010 the Government of India tabled a Bill in the Lok Sabha seeking approval for a legal framework whose objective is to protect persons making a disclosure about wrong doing in State agencies. The Government of India drafted the Public Interest Disclosure and Protection to Persons making the Disclosures Bill, 2010, popularly known as "Whistleblower Bill".

Whistle blowing or Public interest disclosure refers to the act of disclosing information by an employee or any stakeholder about an illegal or unethical conduct within an organization so as to serve the interest of the public at large, and increase accountability within Government. It would serve as the country's first law to protect whistleblower.

## Objectives:

- To safeguard those exposing corruption or malpractice by public servants.
- To initiate public participation for keeping corruption in check.

## Highlights of the Bill

- The bill seeks to protect Whistleblowers i.e. persons making public interest disclosure related to an act of corruption, misuse of power, or criminal offence by public servant
- Any public servant or any other person including non-governmental organization may make such disclosure to the Central or State Vigilance Commission
- Every complaint has to include the identity of the complainant
- The vigilance commission shall not disclose the identity of the complainant except to the head of the department if it deems necessary

## Penalties:

The bill lays down penalties for various offences.

- For not furnishing reports to Vigilance Commission, a fine up to Rs. 250 shall be imposed for each day till the report is submitted. The total amount cannot exceed Rs. 50,000.

- For revealing the identity of complainant negligently or due to mala-fide reasons, the penalty is imprisonment for up to 3 years and a fine of up to Rs. 50,000.
- For knowingly making false or misleading disclosure with mala-fide intentions, the penalty is imprisonment up to 2 years and fine up to Rs. 30,000.

Any person aggrieved by an order of Vigilance Commission relating to imposition of penalty for not furnishing reports or revealing identity of complainant may file an appeal to High Court within 60 days. India's Whistleblowers Bill is unique in the world as it recognizes any individual or NGO as a whistleblower. This means, RTI activists, anti-corruption crusaders and human rights defenders can be potential whistleblowers.

## Whistle Blower in our Bank:

As per RBI guidelines, all public sector banks, private sector banks that appropriate mechanism need to be under the purview of GOI scheme.

RBI has advised banks that appropriate mechanism need to be established in banks including transaction monitoring teams & to investigate them (dispute or suspicious raised by stakeholders) thoroughly.

According to RBI, Banks should have a well publicized whistle blowing mechanism, the complaints under the scheme cover the areas such as corruption, misuse of office, criminal offences, suspected/ actual fraud, failure to comply with existing rules & regulations such as RBI Act, 1934, Banking Regulation Act 1949 etc. and acts resulting in financial loss/ operational risk, loss of bank concerned, customers, stake holders and NGOs can lodge complaints.

Based on the guidelines issued by RBI, Whistle Blower policy is being implemented in our bank. Bank appreciates the moral courage shown by the whistle blowers & appropriate indirect incentives/ benefits are provided to employees:-

- Genuine informants are given due weightages in career growth and placements as deemed fit.
- A dossier will be personally maintained by GM (HR) in strict confidence for the purpose. CVO will ensure full protection against disclosure of identity of Whistle Blower.

## Further Reference:

<http://10.0.22.180/webdesktop/CustomJobs/eCircular/Circular.jsp>

**Rajan Waikul**

Vig. deptt. C.O. Mumbai

# Online Whistle Blowing Mechanism in Union Bank

Staff members/Directors, many a time, are hesitant to come forward and report to higher authorities about wrong doings, malpractices around them fearing disclosure of identity and probable retribution/victimization from the official/s concerned. In order to instill confidence in the staff members as well as to prevent the malpractices at the initial stage itself, a need was felt for leveraging of technology in this area and accordingly **Union Bank has set up Whistle Blower Module on Union Vigil portal on Bank's intranet (i.e. UBINET) to facilitate lodging of Whistle blowers complaints online.** The access rights to view these online complaints are restricted only to the Chief Vigilance Officer/ (Chairman of Audit Committee of the Board in exceptional cases as per SEBI(Listing obligation & disclosure requirements) Regulations 2015, in order to ensure confidentiality of the identity of the complainants.

**An element of incentive has also been introduced in this mechanism for genuine Whistle Blowers, as follows:**

1. In case a complaint results in detection of unethical/abuse of authority/fraud/ other wrong doings and thereby averts or minimizes the financial/ reputational loss to the bank, the moral courage shown by the Whistle Blower is to be recognized and rewarded by the bank as under:
  - CVO in consultation with Chairman & Managing Director ensures that genuine informants are given due weightages in Career growth and placements as deemed fit.
  - A dossier is personally maintained by the CVO in strict

confidence for the purpose.

## Mechanism in brief

An employee who intends to lodge a complaint under Whistle Blower may visit **Union Vigil portal (<http://172.31.1.6/vigilance/#>)** & click on **"Blow Your Whistle"** under Online Services. In compliance with a Vigil Mechanism for **Directors** was enabled into our Whistle Blowing Portal with an objective -

- To report concerns about unethical behaviour, actual or suspected fraud or violations of company's code of conduct or ethics policy.
- Also to provide adequate safeguards against victimization of director(s)/employee(s) who avail the mechanism & **also to provide direct access to the Chairman of the Audit Committee in exceptional cases.**

On clicking; next screen is displayed with Whistle Blower Policy. Subsequent to this, another screen prompts for PF number & Mobile Number (both mandatory) of the complainant. On entering the same, OTP is generated and complainant receives it on his mobile. He, then enters OTP in the portal, next screen is displayed prompting the details of the complaint along with provision of uploading documents/evidences, if any. After completion of the process, CVO receives alert in real time in the form of e-mail.

**Steps are as under:-**

## 1 Blow Your Whistle

Opening of Union Vigil Portal  
(<http://172.31.1.6/vigilance/#>)

## 4 Submission of OTP

received on Whistle Blower's Mobile number

## 2 Reading Whistle Blower Policy

On confirmation Page

## 5 Submission of Data

i.e. Name against whom one wants to lodge complaint, Designation, Department, Location etc. Provision for uploading documents/evidence

## 3 Generation of OTP by filling Requisite Data

i.e. PF Number & Mobile Number

## 6 Completion of Process

of Online lodgement of complaint under Whistle Blower

# दैनिक जीवन में भ्रष्टाचार

## निवारण में

### हमारी भूमिका

पीर पर्वत सी हुई अब तो पिघलनी चाहिए,  
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए,  
मेरे सीने में न हो तेरे ही सीने में सही,  
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए,  
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,  
मेरी कोशिश है कि यह सूरत बदलनी चाहिए.

भ्रष्टाचार का नाम आते ही हिन्दी गजल सम्राट **दुष्यंत कुमार** की ये पंक्तियां बरबस ही हमारी नजरों के सामने तैरने लगती हैं. देश का एक प्रबुद्ध नागरिक होने के नाते प्रत्येक व्यक्ति के मन में एक सवाल अवश्य उठता होगा कि देश के निर्माण में हमारी भूमिका क्या है? फिर मन से यही आवाज आती है कि देव-भूमि से बहुत दूर निकल कर आज हम विश्व गुरु के स्वप्न में जागे हैं. परंतु पुनरावलोकन करने पर हम पाते हैं कि अपनी इस प्रगति-यात्रा में शायद मानवीय मूल्य एवं नैतिकता हमसे बहुत पीछे छूट गए हैं तथा आज भ्रष्टाचार ने पूरी तरह हमें अपने पाश में जकड़ लिया है.

**इस सड़क पर इस कदर कीचड़ बिछा है  
हर किसी का पांव घुटनों तक सना है.**

वे लोग, जो व्यावहारिकता की झूठी चादर में छिपकर बड़ी आसानी से इससे अपना पल्ला झाड़ लेते हैं, शायद यह नहीं जानते, कि यदि आज हम इतने खोखले हो गए हैं, तो सिर्फ इसलिए, कि यही व्यक्तिगत सोच आज सामूहिक सोच बन चुकी है तथा व्यावहारिकता के आवरण में पनपती इसी सोच में भ्रष्टाचार का दानव छिपा हुआ है.

**'हमसे है समाज, समाज का सम्मान  
है तो हमारी पहचान है'.** इस उक्ति को आज एक नया स्वरूप मिल गया है, कि **'हमारी पहचान है तो समाज का सम्मान है.'**

भ्रष्टाचार आज हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है तथा यह नाग हर पल हमें डस रहा है. प्राथमिक, माध्यमिक या उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार के उदाहरण देखे जा सकते हैं.

दुकानों पर अक्सर छोटे बच्चों के साथ हो रहे अत्याचारों पर बहस होती है परंतु फिर आवाज आती है-रामू, दो चाय. बैंक से लोन लेने में एक अशिक्षित को महीने कम पड़ जाते हैं, वहीं अमीरों को धन रखने हेतु जगह कम पड़ जाती है. सुबह घर से निकलो, तो आटो वाले का मीटर खराब-मनमाने पैसे लेना. अपनी गाड़ी से निकलो, तो जगह-जगह परेशानियाँ आपके शिकार के लिए तैयार खड़ी होती हैं. फिर चाहे ट्रेन आरक्षण की बात हो, या आरक्षित कोच में अनधिकृत यात्रियों का प्रवेश. इन सबसे बढ़कर खाने की वस्तुओं में मिलावट! आखिर व्यक्ति जिये तो जिये कैसे. कहने का अर्थ यह कि आज शायद ही कोई ऐसी जगह हो जो भ्रष्टाचार से अछूती हो, अन्यथा यह दानव अपने इतने पंख पसार चुका है कि जाने-अनजाने इसकी गिरफ्त से बचना मुश्किल होता जा रहा है तथा हम कदम-कदम पर इसकी ठगी का शिकार हो रहे हैं. किसी शायर की ये पंक्तियां यहां सटीक बैठती हैं;

**कत्ल हो रहा हमारा, इस तरह किशतों में,  
कभी खंजर बदल रहे, कभी कातिल बदल रहे.**

कारण एक, पर बीमारियां अनेक. परंतु ज्वलंत प्रश्न यह है कि निरंतर फैल रही इस बीमारी का इलाज क्या है तथा इसका निवारण कौन करेगा?

तो, इसका उत्तर भी हम ही हैं. अब यह सोचने से काम नहीं चलेगा, कि एक हम क्या कर सकते हैं? यहां यह ध्यान रहे, कि सुधार का रास्ता स्वयं से शुरू होता है. यहां अपने बचपन की एक बात का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा.

अपनी शिक्षा के प्रारंभिक काल में स्कूल में प्रार्थना के समय लगाई जाने वाली लाइन सीधी करवाने के लिए अध्यापक महोदय द्वारा एक बात कही जाती थी, कि अपनी-अपनी जगह पर इस प्रकार सीधे खड़े हो जाओ कि अपने से तीसरे बच्चे का सिर दिखाई न दे. और ऐसा करने पर लाइन सीधी हो जाती थी, जबकि यदि हम दूसरे बच्चे को सीधा करने का प्रयास करेंगे तो लाइन कभी सीधी नहीं हो सकती है.

कहने का अर्थ यह, कि सुधार का रास्ता हमसे ही शुरू होता है. हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा. अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्तर से इस दिशा में पहल करनी पड़ेगी यह सोचकर कि, **'हर रह गुजर पर शमा जलाना है मेरा काम, तेवर क्या हैं हवा के यह मैं देखता नहीं'** क्योंकि यदि हम दूसरे कारणों के बारे में सोचते रहे तो शायद सोचते ही रह जाएंगे तथा कार्य कभी आरंभ नहीं कर पाएंगे. यहां यह उदाहरण प्रासंगिक होगा.

**एक बार एक व्यक्ति समुद्र के किनारे बैठा प्रत्येक लहर के साथ किनारे आ जाने वाली मछलियों में से एक मछली को उठाकर समुद्र में फेंक आता था. पास ही बैठा एक अन्य व्यक्ति काफी देर से यह नजारा देख रहा था. उससे न रहा गया तथा उसने व्यक्ति से पूछ लिया कि आप इतनी देर से किनारे आने वाली इतनी सारी मछलियों में से एक मछली को समुद्र में फेंक आते हो, इससे क्या फर्क पड़ेगा? तो उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि इससे उस मछली को अवश्य फर्क पड़ेगा जिसे मैं वापस समुद्र में फेंक आता हूँ.**

यदि हममें से प्रत्येक व्यक्ति इस दिशा में जागरूकता फैलाते हुए सार्थक प्रयास करे तथा मेहनत एवं लगन से अपनी भूमिका निभाए तो भ्रष्टाचार रूपी दानव को रोकने में हम अवश्य कामयाब होंगे. बस, हम अपने दैनंदिन कार्यकलापों में यह सुनिश्चित करें कि हम भ्रष्टाचार को पनपने नहीं देंगे तथा इस दिशा में पूरी निष्ठा से कार्यरत रहें तो सच मानिये, हमारा यह छोटा प्रयास समूची सूरत बदलने में कामयाब होगा. अतः आइए, अपने इसी संकल्प के साथ कि

**जागते रहिये, जमाने को जगाते रहिए,  
मेरी आवाज में आवाज मिलाते रहिए,  
नींद आती है तो तकदीर भी सो जाती है,  
कोई अब सो न सके गीत वो गाते रहिये.**

एक ठोस एवं सार्थक पहल करें कि हम भ्रष्टाचार को अपने जीवन में पनपने नहीं देंगे. तो सच मानिए कि वह दिन दूर नहीं जब भ्रष्टाचारमुक्त एक स्वस्थ समाज का हमारा सपना अवश्य साकार होगा.

**गम की अंधेरी रात में, दिल को न बेकरार कर  
सुबह जरूर आएगी, सुबह का इंतजार कर**

**एन के दीक्षित**  
रा.भा.का.वि.कै.का, मुंबई



हमें गर्व है



स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र भोपाल में हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर श्री संतोष श्रीवास्तव को हिन्दी साहित्य सेवा एवं लेखन के क्षेत्र में सतत सक्रियता के लिए श्री अतुल कुमार, प्राचार्य, स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलुरु द्वारा "लाइफ टाइम अचीवमेंट" पुरस्कार से सम्मानित किया गया.



हमारी बी.टी. कवडे रोड शाखा, पुणे के पदस्थ खजांची श्री शिवराम शिंदे ने शाखा के ग्राहक द्वारा भूलवश अधिक जमा की हुई ₹50,000/- की राशि ग्राहक को लौटाई.



**यूनियन होम**  
कम ब्याज दर

(यथा संशोधित  
18.11.2016)

हमारी योजनाएँ

हमारे बैंक के विभिन्न खुदरा उत्पादों में से **यूनियन होम** एक महत्वपूर्ण उत्पाद है. योजना को बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाए रखने के इसमें कुछ संशोधन (18.11.2016 से) किए गए हैं जो इस प्रकार हैं :

- 1. अधिस्थगन अवधि :** अभी तक सभी उद्देश्यों के लिए अधिकतम 18 माह की अवधि (कुल चुकौती अवधि के दौरान) की अनुमति थी जो संशोधन हेतु जारी परिपत्र की तारीख से मंजूर नए ऋणों के लिए 36 माह (कुल चुकौती अवधि के दौरान) होगी.
- 2. मार्जिन :** वर्तमान मानदंडों के अनुसार 30 लाख रुपये तक ऋण के लिए न्यूनतम मार्जिन 20% जारी रहेगी तथापि क्षेत्रीय ऋण परामर्श समिति-1, जिसके अध्यक्ष क्षेत्र प्रमुख हैं, मामले को ध्यान में रखते हुए इसे 10% तक करने के लिए अधिकृत होंगे.
- 3. बिल्डर टाई-अप :**
  - a. अभी तक आवासीय परियोजना को अनुमोदित करने के लिए एक शर्त यह थी कि बिल्डर/प्रवर्तक स्थानीय या राष्ट्रीय बिल्डर संघ/फोरम जैसे क्रेडाई, एमसीएचआई, केबीए आदि का सदस्य होना चाहिए जो आगे भी जारी रहेगी तथापि क्षेत्रीय ऋण परामर्श समिति-1, जिसके अध्यक्ष क्षेत्र प्रमुख हैं, मामले को ध्यान में रखते हुए इस शर्त में छूट देने के लिए अधिकृत होंगे.
  - b. अभी तक विधिक मत/मूल्यांकन रिपोर्ट के लिए प्रभार को परिभाषित नहीं किया गया है परन्तु आगे से बिल्डर टाई-अप अनुमोदित करते समय विधि प्रभार बैंक द्वारा वहन किया जाएगा. बिल्डर टाई-अप की मंजूरी के समय आवास/परियोजना के निर्माण के मामले में आर्किटेक्ट/इंजीनियर/मूल्यांकनकर्ता द्वारा पहले मूल्यांकन/लागत को अनुमोदित किया जाता है, जिसे बाद में बैंक द्वारा स्वीकृत किया जाता है. आर्किटेक्ट/इंजीनियर/मूल्यांकनकर्ता द्वारा कार्य की प्रगति के आधार पर किए गए विधिवत प्रमाणन के बाद ही मार्जिन सहित संवितरण किया जाता है. अतः परियोजना की समाप्ति के वक्त मूल्यांकन करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इससे उधारकर्ता को अतिरिक्त लागत का वहन करना पड़ेगा.

एस के श्रीवास्तव  
वि. स.वि.,कें. का., मुम्बई





# आई चिड़िया..

भूभाग में फैला हुआ है. यहाँ का औसत तापमान दिसंबर में 6.8 डिग्री सेल्सियस  
नें तो कई कारणों से, जिनमें पानी की कमी महत्वपूर्ण है, के कारण यहाँ जल-

धेक संपदा के रूप में घोषित किया जा चुका है. इस पक्षी विहार में वर्ष भर  
ओं की 13 प्रजातियाँ निवास करती हैं. इसके अलावा छिपकली की 5,  
ओं की प्रजातियाँ भी इस पक्षी विहार के तालाबों, जंगलों और दलदलों  
गती है. प्रति वर्ष हजारों की संख्या में प्रवासी जल-पक्षी यहाँ जाड़े  
र्ष हो चुका साईबेरिया का सारस भी यहाँ दिखाई दे जाता है.

स वीरकर  
वृत्त, मुम्बई



# बच्चों के भविष्य निर्माण में माता-पिता की



सेवा निवृत्त जीवन से

## भूमिका

अधिकतर माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं। उनके दिल में यह भावना रहती है कि वे खुद तो जो बनना-बिगड़ना था, बन-बिगड़ चुके, लेकिन उनका बच्चा उनसे ज्यादा पढ़-लिख कर, उनसे ज्यादा उन्नति करे। चूंकि अभी तक पढ़ाई मापने का पैमाना अंकों का प्रतिशत ही बना हुआ है, इसलिए स्वाभाविक है कि माता-पिता भी यही चाहते हैं कि उनके बच्चे के अंकों का प्रतिशत अच्छा हो ताकि वे समाज में सिर उंचा कर के चल सकें।

बच्चों के सिलसिले में माता-पिता को चार भागों में बांटा जा सकता है:

- 1) वे माता-पिता, जो इतने गरीब हैं कि वे बच्चों को पढ़ाने के बारे में सोचते भी नहीं, क्योंकि उनका मानना होता है कि जिस प्रकार मजदूरी के माध्यम से वे खुद कमाई कर रहे हैं, उसमें उनका बच्चा भी लग जाएगा तो घर में आमदनी बढ़ जाएगी। वे बच्चे को उस सीमा तक बढ़ते हुए देखना चाहते हैं कि वह माता-पिता का हाथ बंटा कर घर की आय में सहयोग प्रदान कर सके। वे बच्चे की पढ़ाई पर ध्यान भी नहीं देते। वे मजदूरी को पढ़ाई की तुलना में वरीयता देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि, पीढ़ी-दर-पीढ़ी संतति अनपढ़ रह जाती है। मेरी इस बात की सत्यता को अपने आस-पास के क्षेत्र का अवलोकन कर आप जांच सकते हैं। यह पूरे देश की एक सामाजिक समस्या है, जिसके समाधान के लिए सरकार आगे आ कर प्रयास भी कर रही है।
- 2) बहुत से माता-पिता गरीब तो हैं लेकिन उनमें अपने बच्चों को पढ़ाने-लिखाने की दृढ़ इच्छा होती है। वे चाहते हैं कि उनके बच्चे पढ़ें ताकि समय आने पर इन बच्चों के कारण घर की गरीबी दूर हो सके। इसके लिए ये लोग अपनी खुशियों की बलि चढ़ाते हैं। उनके बच्चे जब पढ़ते हैं तो उन बच्चों में यह भावना उन्हें यह प्रेरणा देती है कि हमें किसी भी दशा में पढ़ाई को जारी रखना है और अंततः घर की गरीबी को दूर करना है। लेकिन इसमें एक कठिनाई सामने आती है। वह यह, कि गरीबी के कारण वह महंगी पढ़ाई नहीं कर पाते और अंततः वे उन्नति की दौड़ में पीछे रह जाते हैं। यद्यपि कुछ अपवाद भी सामने आते हैं कि इस प्रकार के लोग अपनी मेहनत से ऊंचे पदों की परीक्षा पास कर लेते हैं और उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं। उदाहरण के तौर पर, पिछले कुछ वर्षों में इस वर्ग के बच्चे आई.ए.एस भी बने हैं। यदि सामाजिक समस्याओं का समाधान करने में रुचि रखने वाले लोग या समूह कोई पॉलिसी बना कर इस वर्ग के बच्चों की भरपूर मदद करें तो निरक्षरता भी दूर होगी और इस वर्ग में खुशहाली भी आएगी।
- 3) तीसरा वर्ग, मध्यम वर्ग है। इस वर्ग के माता-पिता बच्चों को महंगी पढ़ाई भी करवाने की कोशिश करते हैं, चाहे उनको कितनी ही कुर्बानी क्यों न देनी पड़े। ऐसे माता-पिता हाई स्कूल के बाद पहले यह सर्वेक्षण करते हैं कि बाजार में किस विषय की शिक्षा की अधिक मांग है! क्योंकि इस वर्ग के लोगों का लक्ष्य केवल नौकरी होता है। कारण यह है कि इनके पास इतनी पूंजी नहीं होती, कि वे बच्चे को किसी व्यवसाय में लगा सकें। वे

ऐसी पढ़ाई पर ज्यादा जोर देते हैं जिससे कि बच्चे को अच्छी नौकरी मिल सके। इसके लिए वह बच्चे को इंजीनियरिंग या एम.बी.ए आदि की शिक्षा दिलाना चाहते हैं। उनको इससे कोई मतलब नहीं रहता कि उनके बच्चे को किस विषय को पढ़ने में ज्यादा रुचि है।

- 4) चौथा वर्ग, धनी लोगों का है। इनके पास पूंजी की कोई कमी नहीं। वह अपने बच्चे को उच्चतम शिक्षा दिलाना चाहते हैं, जिससे बच्चे के कारण उन्हें भी प्रसिद्धि मिल सके और वे गर्व कर सकें। इसके लिए वे डोनेशन की राशि की कोई परवाह नहीं करते। यह वर्ग भी बच्चे की रुचि को कोई महत्व नहीं देता।

यह आलेख वर्ग 3 और 4 से संबंध रखता है। इन दो वर्गों के बच्चों को बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ता है। इन दो वर्गों के माता-पिता इस बात पर तुले रहते हैं कि उनका बच्चा हर दशा में 90% से ज्यादा अंक लाये और वह कोर्स पढ़े जो उन्हें उन्नति और अच्छी आमदनी दे सके।

इन दो वर्गों के माता-पिता यह भूल जाते हैं कि हर बच्चे का मानसिक स्तर अलग-अलग होता है और यह संभव ही नहीं कि हर बच्चा ज्यादा अंक ही पाए। दूसरी बात यह, कि हर बच्चे को अलग-अलग विषयों में अलग-अलग रुचि होती है। तीसरे यह, कि यह आवश्यक नहीं कि अधिक अंक पाने वाला ही उन्नति के अवसर पा सके, क्योंकि अगर वह रट कर ज्यादा अंक लाया है तो चूंकि उसने उस विषय को समझने के लिए पढ़ा ही नहीं है, इसलिए बाद में वह भूल जाता है कि उसने क्या पढ़ा था। ऐसे में उसे किसी इंटरव्यू में झटका लग सकता है। ध्यान रहे कि कोई भी रिपोर्ट कार्ड किसी भी बच्चे की सही शैक्षणिक योग्यता को नहीं माप सकता।

एक स्कूल (नाम गुप्त) की प्रिंसिपल ने अपने फ़ेस बुक पेज पर परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों के माता-पिता को एक दिल को छू लेने वाला पत्र लिखा जिसमें इस बात पर विशेष बल दिया कि बिना इस बात की परवाह किए, कि वे बच्चे परीक्षा में क्या करते हैं, उनमें आत्म विश्वास पैदा करें। फ़ेस बुक पेज में लिखे पत्र का हिन्दी अनुवाद निम्नलिखित रूप से है:

सारे बच्चों की परीक्षाएं जल्द ही शुरू होने वाली हैं। मैं समझती हूँ कि आप इस बात को लेकर चिंतित होंगे कि आपके बच्चे परीक्षा में क्या करेंगे? आपकी इच्छा होगी कि आपका बच्चा परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो लेकिन, कृपया यह याद रखें, कि इन परीक्षा देने वालों की अलग-अलग रुचियाँ हैं। इनमें से एक आर्टिस्ट है जिसे गणित समझने की जरूरत नहीं है। इन्हीं में एक व्यापारी है जिसे इतिहास या अंग्रेजी साहित्य से कोई मतलब नहीं है। इन्हीं में एक संगीतकार भी है जिसे केमिस्ट्री के अंकों से कोई अंतर नहीं पड़ता। इन्हीं में एक खिलाड़ी है जिसके लिए फ़ीजिक्स से ज्यादा 'फ़िजिकल फ़िटनेस' महत्वपूर्ण है। अगर आपका बच्चा स्कूल में टॉप करता है तो बहुत अच्छी बात है लेकिन अगर ऐसा नहीं होता है तो ईश्वर के लिए उससे उसका आत्मविश्वास मत छीनिए। वह अपने जीवन में कोई और बड़ा काम करने वाला है। ऐसे बच्चे से कहिए कि आपको अंकों से कोई अंतर नहीं। आप तो बस बच्चे से प्यार करते

हैं. ऐसा कीजिए और अगर आप ऐसा करते हैं तो आप देखेंगे कि आपका बच्चा एक दिन संसार पर विजय प्राप्त करेगा. एक परीक्षा या 90% अंक उसके स्वप्न या उसकी क्षमताओं को नहीं छीन पाएंगे.

कितना शिक्षापद पत्र है यह! माता-पिता अगर इसके विपरीत तरीका अपनाने हैं तो बच्चों में मायूसी पैदा होती है. कितने ही उदाहरण ऐसे हैं कि 95% मार्क्स पानेवाले बच्चे ने आत्महत्या कर ली क्योंकि वह माता-पिता की 99% वाली अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा था. ऐसा न करें, क्योंकि यह बच्चे पर अत्याचार है.

यह तो थी मानसिक स्तर और अंकों की बात. अब रही बच्चों की पसंद-नापसंद या विशेष प्रवृत्ति (APTITUDE) की बात. ज्यादा आमदनी और झूठी शान को सब कुछ मान कर कुछ माता-पिता अपनी मर्जी बच्चों पर थोप देते हैं, जिससे बच्चों का बहुत नुकसान होता है. एक प्रसिद्ध स्कूल (नाम गुप्त) की प्रिंसिपल ने उक्त के संबंध में दो अनोखे उदाहरण अपने स्कूल के बच्चों के अभिभावकों को बताए जो आपके सामने प्रस्तुत हैं:-

- i) उनके स्कूल में एक लड़की पढ़ती थी जिसे लेख लिखने का बड़ा शौक था. वह बहुत अच्छे लेख लिखा करती थी, जो अक्सर स्कूल की मैगज़ीन में भी प्रकाशित होते थे. उसकी इस क्षमता को देखकर उसकी टीचर और प्रिंसिपल ने उसे पत्रकारिता या मास कम्युनिकेशन का कोर्स करने की सलाह दी लेकिन उसके धनी माता-पिता चाहते थे कि वह डॉक्टर बने. उनके बाध्य करने पर उसने तीन बार सीपीएमटी की परीक्षा दी लेकिन पास नहीं हुई. धनी पिता ने जिद करके उसे एम.बी.बी.एस (MBBS) करने नेपाल भेज दिया. डोनेशन के बल पर उसने एम.बी.बी.एस कर लिया. जब भारत वापस आई तो पता चला कि नेपाल के एम बी बी एस को यहाँ के समकक्ष नहीं माना जाता और उसे प्रैक्टिस की अनुमति तभी मिलेगी जब वह यहाँ का एक टेस्ट पास करेगी. वह चार बार प्रयास करने के बावजूद टेस्ट पास नहीं कर सकी. आज वह मायूसी का शिकार है क्योंकि न तो वह अपने शौक वाला कोर्स कर पाई और न ही अपने माता-पिता की उम्मीदों पर खरी उतरी.
- ii) उसी स्कूल में एक बहुत बुद्धिमान बच्चा था. माता-पिता के दबाव के कारण उसने आई.आई.टी.(I.I.T) पास किया और उसका टाटा में कैम्पस सलेक्शन हो गया. लेकिन उसे इस जॉब से खुशी नहीं थी. एक बार जब वह अपने पुराने स्कूल में आया तो उसने अपनी टीचर और प्रिंसिपल से अपनी बेचैनी के बारे में बताया. प्रिंसिपल ने उसे APTITUDE TEST देने की सलाह दी. इस टेस्ट में पता चला कि उसकी सबसे ज्यादा दिलचस्पी मैनेजमेंट में है. उसके बाद उसने एक अमरीकन यूनिवर्सिटी से एम.बी.ए. (M.B.A) किया और आज वह अमेरिका की ही एक बड़ी कंपनी में सोलह लाख रुपये मासिक पर कंपनी का मैनेजमेंट संभाल रहा है.

आप तमाम माता-पिता से विचार विमर्श का एक ही ध्येय है कि आप बच्चे की रुचि के अनुसार उसे शिक्षा दिलाएँ. उस पर अपनी मर्जी न थोपें और न ही प्रतिशत के चक्कर में पड़ें. हो सकता है कि आपका बच्चा सफलता की एक नई राह निकाले!

आलिम हुसैन  
(सेवा निवृत्त), वाराणसी

# भावबोध बनाम मुक्तिबोध

भावबोध से अलग है मुक्तिबोध  
भावों का कहाँ होता है अब सहज उच्छलन  
मानवता के पुर्जों में, भावों का होता है शोध  
अरे ये मानवता भी मशीनरी है,  
जो फायदा देखकर जागती है  
क्योंकि अभाव में कैसा भाव ?  
नहीं बिलखते हैं कोठियों में बच्चे अब !  
गले में लटकती 'डुप्लीकेट चाभी'  
बन चुकी है उनकी माँ की ममता का स्थानापन्न  
भाव है सागर, भाव है भँवर  
क्यों हो भला फिर भाव का अनुरोध  
यही भाव तो रोक देते हैं माँ की तरक्की का आवर्तन  
और अगर ये भाव न मरते  
भला कैसे होता मार्क्सवाद का दबदबा  
और कैसे होता 'आया' का 'माँ' में परिवर्तन  
भाव न मरते तो कैसे बढ़ता आधुनिकता का प्रभाव  
न होती तरक्की, घर की, घर से बने समाज की  
'ग्लोबलाइजेशन' में फिर कैसे जमाते अपना प्रभाव  
भाव मिटे और मिटा 'मानव से व्यक्ति' के सफर का हर पड़ाव  
लो हो गई मुक्ति, लो हो गई मुक्ति  
हर भाव से, हर अभाव की  
आ गया सच्चे खुलेपन का दौर  
हर चौराहे पर खड़ी टोली, हर चौराहे पर घिरी टोली  
है औरत होने का ठप्पा  
और उनके पीछे बचपन से बेदखल उनके बच्चे की  
माँ बनी आया की बेटी को है ममत्व का बोध!!  
तभी तो कहते हैं भावबोध से अलग है मुक्तिबोध.

नरेंद्र सिंह  
क्षे.का., दुर्गापुर



# ग्रामीण परिवेश

महिलाएं अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त हैं. गांव में मूलभूत संसाधनों का बेहद अभाव है तथा अन्य समस्याओं के साथ-साथ पूरा गांव पेय जल की भीषण समस्या से जूझ रहा है. पानी लेने के लिए महिलाओं को दूर तक जाना पड़ता है. इसी दौरान महिलाएं अपनी समस्याओं की चर्चा करती हैं.

ऐसे ही एक दृश्य में बिमला दो बड़े घड़े, एक सिर पर और एक बगल में दबाये पानी के सार्वजनिक नल की तरफ जा रही है. वह एक घड़ा नीचे रख नल की टोटी चालू करती है. पर उससे एक भी बूंद पानी नहीं गिरता है. लंबी सांस लेते हुए वह घड़ा उठाती है और अपनी किस्मत को कोसते हुए वहां से चल देती है.

**कमला:** क्या हुआ बिमला बहन.. पानी ज़्यादा है क्या घर में.. बिना पानी भरे ही लौट रही हो..

**बिमला:** नहीं कमला, पानी आए तब तो भरा जाए..

**कमला:** आज भी नहीं आया पानी.. हे भगवान.. एक तो पानी की किल्लत और ऊपर से सास की किटकिट.. समझ ही नहीं आता, कहाँ जाऊं? क्या करूं? ?

**बिमला:** अभी फिलहाल तो पानी की समस्या देख.. सास बहू की किटकिट तो घर-घर में है..

**कमला :** तो अब क्या करूँ ?

**बिमला:** गांव के बाहर जो कुआं है, चल उसी से पानी भर लाते हैं..

**कमला :** उतनी दूर.. मुझसे न हो पायेगा.. इतना समय हो गया है जल विभाग से अर्जी पास होने के बाद भी एक कनेक्शन नहीं दे पा रहे ये लोग.. इतना समय सिर्फ पानी भरने में लगेगा तो घर के बाकी काम कब होंगे.

**बिमला:** ठीक है.. अभी तो चल.. नहीं तो खाना नहीं बनेगा.. और फिर तेरी सास तुझे सुनाएगी..

कमला और बिमला दोनों पानी के बड़े घड़े एक अपने सिर पर व दूसरा बगल में दबाकर धीरे-धीरे चल रही हैं.

---\*\*\*---

सरला अपनी बेटी के साथ दाखिले के लिए एक प्राइवेट स्कूल आई है. सरला स्कूल को देखकर बहुत खुश होती है और इस कल्पना में खो जाती है कि इस स्कूल में दाखिला होने के बाद उसकी बेटी का भविष्य सुधर जायेगा.. मेरी पढ़ने की इच्छा अधूरी रह गई, लेकिन मेरी बेटी पढ़ेगी.. और तब तक चपरसी रिकू (सरला की बेटी) का नाम लेकर उसे अंदर आने को कहता है.. अंदर उसे पता चलता है कि अगर बेटी का दाखिला करवाना है तो उसे 10,000 रुपए जमा करने पड़ेंगे. इतना सुनते ही सरला की आँखों के आगे अंधेरा छा जाता है. वह सोचने लगती है कि जिस घर में महीने के अंत में खाने के लिए पैसे नहीं बचते, वह भला इतनी बड़ी रकम कहाँ से ला पाएगी. वह वहाँ के कर्मचारी से आग्रह करती है कि उसकी बच्ची का दाखिला कर ले. उसकी लाख गुहार के बावजूद भी वहाँ बैठा कर्मचारी टस से मस नहीं होता और सरला को धमकी देता है कि अगर वह यहाँ से नहीं गई तो उसे आगे से स्कूल के अंदर तक नहीं आने दिया जायेगा.



थकी हारी सरला रास्ते पर रिकू का हाथ पकड़े घर की ओर चलती है.

---\*\*\*---

सरला अपने घर के बाहर दरवाजे के पास सिर पर हाथ रखे हुए यह सोचती रहती है कि आगे क्या होगा. अगर बेटी का दाखिला नहीं हुआ तो.. वह भी उसकी तरह पढ़ नहीं पाएगी.. इतने में ही सावित्री (एसएचजी प्रमुख) उसके पास आकर बैठ जाती है और उसे बताती है कि कल स्वयं सहायता समूह(एसएचजी) की मीटिंग है.. और कल उसे भी वहाँ आना है.. बताते समय उसने देखा कि सरला किसी और सोच में गुम है.. उसके कंधे पर हाथ रख उसे हिलाते हुए वह उसका नाम पुकारती है.. सरला जब सावित्री को देखती है तो उसकी आँखें भर आती हैं..

सावित्री सरला से पूछती है कि क्या बात है.. सरला सारी बात सावित्री को बताती है.. सावित्री उसे दिलासा देते हुए कल की मीटिंग में आने का आग्रह करती है और बताती है कि मीटिंग में ही इस बात का भी हल निकालने की कोशिश की जाएगी.

---\*\*\*---

फातिमा सिलाई मशीन पर कपड़ा रखकर खिड़की के बाहर एकटक देख रही है. चेहरे पर उदासी और चिंता साफ झलक रही है. इतने में उसकी बेटी आकर कहती है माँ..अबू कहाँ गए हैं..कितने दिन हो गए वह मुझे बाजार नहीं ले गए.. यह सुनकर फातिमा की आँखें भर आती हैं, लेकिन हिम्मत करके वह अपनी बेटी से कहती है आएंगे बेटा, तुम अच्छे से पढ़ो- लिखो इसलिए वह शहर कमाने गए हैं यह बोलने के बाद वह फिर उन्हीं पुराने ख्यालों में खो जाती है..उसे वो समय याद आता है जब पति के होने से उसके घर में खुशहाली थी. उसे वह दिन भी याद आता है जब अस्पताल में समय से भर्ती न होने और पैसे की कमी के कारण बड़े अस्पताल में इलाज न हो पाने की वजह से एक महीने पहले ही उसका पति गुजर गया था, और..उसके मन में यह भी ख्याल आता है कि ऐसे जीवन से मौत ही बेहतर है.

---\*\*\*---

सारी औरतें इकट्ठा हैं..सब आपस में बातें कर रही हैं..शोर शराबा है..और इतने में सावित्री (एसएचजी प्रमुख) और यूनिनयन बैंक के मैनेजर साथ-साथ अंदर आते हैं. एसएचजी की चर्चा आरंभ होती है..और फिर सावित्री जी कहती हैं कि..."बहनो हमने एसएचजी बना लिया है और काफी हद तक हमने अपनी आर्थिक परेशानियां भी दूर कर ली हैं..लेकिन जो तकलीफ आप लोगों को मिल रही है, चाहे हालात के कारण अथवा कुछ भ्रष्ट लोगों के कारण ..उसी के विषय में आज यूनिनयन बैंक के शाखा प्रबन्धक श्री मोहन जी आपसे बात करेंगे.."

आप सब सही कह रही हैं, अनेकों समस्याएं हैं. इनका हल भी हमारे हाथ में ही है और किसने कहा सरकार कुछ नहीं करती? अरे सरकार की तो हर वर्ग के लिए योजनाएं हैं, बस हमें थोड़ा जागरूक होने की जरूरत है.

सतर्कता की शुरुआत घर से होती है और घर-घर में यह बदलाव लाने की क्षमता आप बहनों में ही है. महिलाओं पर भ्रष्टाचार का प्रभाव ज्यादा और गहरा पड़ता है. आप सब महिलाएँ मिलकर चाहें तो इस देश की मशाल धारक बन सकती हैं. आप चाहें तो अपने घर को ही नहीं बल्कि अपने मोहल्ले, गाँव और यहाँ तक कि देश को भी भ्रष्टाचार मुक्त कर सकती हैं.

**कमला-** पर इन सब में यह आपकी सतर्कता समिति हमारे क्या काम आएगी ?

**शाखा प्रबंधक-** आप सभी अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में भ्रष्टाचार का शिकार होती हैं. कभी बच्चों की शिक्षा को लेकर, कभी पानी की समस्या को लेकर या फिर कभी बीमारी में इलाज की चिंता को लेकर.

आप अपनी रोजाना की जिन्दगी में अपनी और अपने परिवार की बुनियादी जरूरतों के लिए अन्य कर्मचारियों और भ्रष्ट व्यक्तियों के संपर्क में आती हैं,

रोजगार पाने की इच्छा रखती हैं तो भी असमानता और भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ता है. पर यह सब कब तक चलेगा? आखिर कब तक?.. आप सबको अपने हक की लड़ाई स्वयं ही लड़नी पड़ेगी

इसलिए, यूनियन बैंक का यह सुझाव है कि सारे स्वयं सहायता समूह मिलकर, महिला सतर्कता समिति का गठन करें.

कार्य क्षेत्र के सारे एसएचजी/जेएलजी की सारी महिलाओं को महिला सतर्कता समिति हेतु एक सदस्य का नामांकन करने का अनुरोध किया जाएगा. समिति के सदस्यों की संख्या 5 से 10 के बीच होगी. नामांकन का सामान्य मानदंड एसएचजी/जेएलजी के सदस्यों की निरंतर वैचारिक कार्यनिष्पादन तथा सक्रिय भूमिका के आधार पर होगा.

**फातिमा-** पर इन सब में हमारा काम क्या होगा ?

**शाखा प्रबंधक-** महिला सतर्कता समिति की महिलाएं समाज में हो रहे गलत कार्यों की सक्रिय निगरानी करेंगी तथा उसके विरुद्ध आवाज उठाएंगी. दैनंदिन जीवन में किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार का उन्मूलन. और हाँ सब से ज्यादा जरूरी&... सरकारी योजनाओं का निष्पक्ष कार्यान्वयन जैसे स्वास्थ्य बीमा, जन धन योजना, अटल पेंशन योजना, स्वच्छता योजना, उज्वला योजना, नरेगा इत्यादि के निष्पक्ष निष्पादन पर नजर रखेंगी.

**कमला-** पर इन सबकी जानकारी हमको कैसे मिलेगी? कौन देगा यह जानकारी? कल को यह न हो कि हम निकले तो मोर्चा निकालने और रास्ते में ही हो जाएँ.. फुस्स..

**शाखा प्रबंधक-** आप बिलकुल सही कह रही हैं कमला बहन.. सही कह रही हो बहन, पर हम ऐसा कैसे होने दे सकते हैं? इसीलिए तो गेट फ्रॉन्टेशनल अंडरस्टैंडिंग ऑफ करप्शन एंड एथिक्स, फाइनेंसियल काउंसलिंग सेंटर्स ऑफ यूनियन बैंक ऑफ इंडिया रूरल सेल्फ एम्प्लॉयमेंट ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट (आरसेटी) महिला सतर्कता समिति की गतिविधियों की जांच करेगा. इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध कार्य करने वाली प्रसिद्ध महिला वक्ताओं द्वारा सत्रों का आयोजन किया जाएगा.

**सरला**

आरसेटी? क्या यहां पर हमारी पढ़ाई भी होगी? क्या इस उम्र में हम कुछ सीख भी सकेंगे?

शाखा प्रबंधक: क्यों नहीं सरला बहन, पढ़ने लिखने की या कुछ नया सीखने की कोई उम्र थोड़े ही होती है. हिचकिचाएँ मत. यह मौका आपकी परिस्थिति बदल सकता है और इसके द्वारा आप अपनी ही नहीं, बल्कि सारे देश को बदलने में और आगे बढ़ने में सहायता कर सकती हैं.

मैं तो आप सभी से अनुरोध करूंगा कि आप लोग एक बार हमारे आर-सेटी में आ कर देखिए.

और तो और, आप महिलाओं को कृषि, बागवानी, फूड प्रोसेसिंग, हैंडलूम, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, जरी इत्यादि, हैंडिक्राफ्ट, कंप्यूटर व आईटी संबंधी सेवाओं के साथ लोगों से बात व्यवहार जैसे हल्की फुल्की अंग्रेजी बोलना, जेम्स व ज्वेलरी, ट्रेवल एंड टूरिज्म, अतिथि सत्कार और बहुत सारे कौशल सिखाए जाएंगे.

इससे न सिर्फ आप जागरूक होंगी बल्कि आत्मनिर्भर भी बनेंगी और हमारे देश की प्रगति में हिस्सा ले सकेंगी.

सरला अपनी बेटी रिकू को स्कूल ले जा रही है, बेटी भी बहुत खुश है, स्कूल जाने के लिए हाथ में दो बैग हैं, उसे गेट पर छोड़ती है, चेहरे पर खुशी साफ झलकती है, रिकू को छोड़कर सरला हाथ में दूसरा बैग लिए आर-सेटी के गेट की तरफ जाती है.

विमला और कमला कई और महिलाओं के साथ नल से पानी भरती हुई.. कमला कहती है, दीदी! अब तो पानी की समस्या दूर हो गई.. अब तो उस कुएं तक केवल घूमने के लिए जाते हैं. दोनों हंसती हैं.

फातिमा बैठकर एक पेपर पढ़ रही है, यह पेपर कुछ और नहीं, उसकी और उसकी बेटी के हेल्थ इंश्योरेंस के पेपर हैं, जिससे उसका और उसकी बेटी का जरूरत पड़ने पर निःशुल्क इलाज हो जाएगा. यह देखकर वह अपनी बेटी को गले से लगा लेती है.

बिमला को ब्रांच की तरफ जाते वक्त गुप्ता जी (दलाल) आवाज देते हैं- विमला जी, विमला जी.. अरे कहां थीं? बड़े दिन से आप दिखाई नहीं दीं, कहीं बाहर गई थीं क्या? आखिर कब तक इस धूप में शाखा के चक्कर काटोगी, इतने दिन से एक बात समझा रहा हूँ कि मैं आपका काम करवा दूंगा, पर उसके बदले कुछ ज्यादा थोड़े ही लूंगा, शाखा प्रबंधक से मैं बात भी कर चुका हूँ, बस आप ही देर कर रही हैं, अब तक तो आपका काम हो भी चुका होता.

**सावित्री:** गुप्ता जी ! काम हो गया होता नहीं, हो चुका है, बहुत फंस चुके हैं आप जैसों के चंगुल में, बस अब और नहीं, अब यह बात तो मन से निकाल ही दीजिए कि हम कुछ जानते नहीं. शाखा प्रबंधक से विमला खुद ही मिल चुकी है और इतना विश्वास तो हम सबको है कि यूनियन बैंक के लोग आपकी तरह तो बिल्कुल नहीं हैं, देखिये ना! विमला का काम भी समय से पूरा हो गया और थोड़ा या ज्यादा कुछ भी देने की जरूरत नहीं पड़ी.

अब हम जागरूक हो गए हैं गुप्ता जी. और अब आपको भी एक सलाह है कि अब तो आप जल्द से जल्द कोई और काम ढूँढ लें. यहां अब आपको कुछ नहीं मिलेगा. चलो दीदी ब्रांच में चलते हैं.

छोटी जर्जर कॉलोनी अब अच्छी सड़क, साफ-सफाई व स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ एक समृद्ध क्षेत्र के रूप में तब्दील हो चुकी है. सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाएं बहुत ही पारदर्शी तरीके से लागू की गई हैं. जिसकी वजह से जर्जर कॉलोनी, मॉडल कालोनी के रूप में तब्दील हो चुकी है.

सही कहा था आपने सावित्री जी, सरकार की इन योजनाओं के चलते ही आज हमारे मोहल्ले में यह बदलाव देखने को मिल रहा है. महिला सतर्कता समिति(महिला

विजिलेंस कमेटी) के गठन के बाद हमें एक नई ताकत मिली है। आज जो भी बदलाव हम सब मिलकर लेकर आए हैं इसका पूरा श्रेय इस समिति को जाता है।

महिला (सरला)

सही कह रही हो बहन...स्कूल में अपने बच्चों के एडमिशन के लिए पहले हमें कितनी तकलीफें झेलनी पड़ती थीं... अब एडमिशन के काम में पारदर्शिता है... जिससे एडमिशन आसानी से हो रहा है. मेरी बिटिया रिकू का भी दाखिला आसानी से हो गया.

महिला (कमला)

हाँ हाँ सरला बहन...वही खुशी हमें भी है, तुम भी तो महिला सतर्कता समिति (एमईसी) में सावित्री दीदी के साथ नामांकित हो गई हो!! देखा तुम सब ने, सारी महिलाएं कैसे झूमझूम के आर-सेटी जाती हैं (सभी महिलाएं खिलखिला कर हँसती हैं). फिर गंभीर होकर कहती हैं: एक तो एसएचजी से मुझे आर्थिक मदद मिलने के कारण मेरी अपनी मिठाई की छोटी सी दुकान हो गई है... और जो मोहल्ले में पानी की किल्लत थी, उसे भी महिला सतर्कता कमेटी की पहल से... हमें नया कनेक्शन मिल गया.. और तो और, मेरी सासू माँ भी आजकल खुश रहती हैं, और हमारा हाथ भी बताती हैं.

आप लोग ही देख सकते हैं कि कुछ समय पहले यहाँ कच्ची सड़क थी.. कहीं आने जाने में कितनी दिक्कत होती थी.. परंतु प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत आज एक पक्की सड़क बन गई है.. जिससे हमारी कितनी तकलीफें दूर ही गई हैं

फातिमा

और तो और, जनता की भलाई के लिए जो सारी योजनाएं सरकार ने बनाई हैं...जो कि पहले हमें पता भी नहीं थी ...आज न केवल हमें उनकी जानकारी है बल्कि हमें उसका पूरा लाभ भी मिल रहा है...जगह-जगह स्वास्थ्य केंद्र भी खुल गए हैं...आज प्रधानमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत हम सबका हैल्थ इंश्योरेंस है जिसके कारण कॉलोनी में लोग अच्छे अस्पताल में अपना इलाज करवाने में सक्षम हो गए हैं.

सावित्री-

हाँ बहनो! आपके साहस, हौसले और मेहनत से ही महिला सतर्कता समिति (महिला विजिलेंस कमेटी) की बुनियाद है... पर हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इसके गठन में हमें यूनियन बैंक का बहुत बड़ा सहयोग मिला है... महिला विजिलेंस कमेटी ने हमें नई उम्मीद और दिशा दी है. अब हम बेफिक्र होकर हमारे हक की लड़ाई लड़ सकते हैं.

सब एक साथ- आओ बहनो, मिलकर बोलो, भ्रष्टाचार की पोल खोलो.

नारी शक्ति देश की असली शक्ति !!



Vigilance is necessary in human and for organizational life as well. Value and vision can be improved if both individual and organization remain vigilant in personal and organizational spheres. It not only improves brand image , but also human capital . "Honest to work fearlessly and corrupts have no place to hide" is the basic awareness the human society should promulgate. This will increase capacity and capabilities, credibility and trust, co-ordination, communication, camaraderie, curiosity and compassion.

As a matter of fact in our daily life, we remain and/or are suggested to be alert and vigilant. In reality, there remains a difference between being alert and vigilant e.g. while driving a vehicle and discharging duties. As of date, human life has witnessed massive changes in social, economic and cultural atmospheres, as well. We have introduced several mechanisms, process like CCTV – in home, office and on roads/railways, schools, hospitals etc. This implies that people have developed vigilance attitude. While alert is

***"Those who consider the inessential to be essential and see the essential as inessential don't reach the essential, living in the field of wrong intention"***

***...Dharmpada, Gautam Buddha***

defined to be attentive, awake & guard, being vigilant refers to be watchful especially for danger of any type or disorder. Alternately, keeping someone alert means to keep on alarm or warning; where as remaining vigilant necessitates to be watchful, alert, wary, aware.

Why is it necessary ? It's essentially preached for physical & personal safety and security. Similar is the case with financial, social, political, national & international safety & security that requires a nimble mind. It's an alert or awareness for a soldier, laborer, mathematician, parliamentarian, a priest in a Temple or Church, a customer or consumer etc. Such alertness, depends on & differs from person to person and organization too based on nature of function, roles and responsibilities, sector. It also requires more of a preventive measures as prevention is always better than cure. The next is study of behavior both of outsider and insider - their psychology & approach whether criminal or otherwise. Hence its necessary to provide reformative and ethical education at regular intervals. The honest, diligent & righteous persons of every organization should always be graded for continuously improving

their risk taking muscles while people of the play-safe nature should be categorized separately . This will help both individual and organization to face jointly the vast changes in technology , process & people with the pace of changing trend of new business and strategy - both at national and global sphere.

Good Governance leads to adoption of best practices and ultimately leads to next practices. Promoting good governance starts with self as an individual & thereafter with organization. Hence vigilance & Vigilance Dept of an organization should act as medicine & clinic respectively, who can diagnose the infirmities of people & of institution . Thus social evils, imbalance and, above all, the escalating corruption at present requires change in code, policy and especially Acts like IPC/CrPC/Evidence etc.... to match with the needs of time. Hence let's not watch but act to root out the corruption, corrupts and corruptive practices.

The system requires a mental, physical & technological fitness. Thus what is required is a personal/individual culture, focused approach, faith in system, fashion of transparency and an overall change in the life of people, process adopted and technology prevailing. However, we have miles to go before we sleep.

**P. C. Panigrahi**

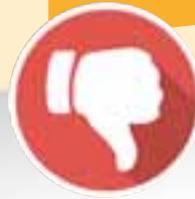
Financial Inclusion Dept., C.O.



# DO's AND DON'Ts at Branch



1. **Be Transparent:** In each and every decision one should involve his accountant / officer in charge of the Dept. One should "Not only be non-corrupt, but appear to be so", for that it is imperative that one should be totally transparent in all the business dealings.
2. **Use powers judiciously:** Delegation powers for advances and expenditure etc. are defined clearly through circulars of the Bank. It should be used judiciously, avoiding transgression and abuse of the delegated authority and action should be in the interest of the Bank.
3. **Move for confirmation of action immediately:** Being a business organization, it may not always be possible to stick to the delegated powers. However, for exceeding the powers, permission from the competent authority should be obtained beforehand and confirmation proposal is to be dispatched on the same day of such incidence. Oral/telephonic instructions should be confirmed from the competent authority.
4. **Justify action in writing:** Keeping in view the transparency aspect and also provisions of RTI Act, it is necessary that justification for a particular decision should be reduced in writing, thus also helping the Officer to recall the rationale for the decision at a later date, when called for to do so.
5. **Follow extant guidelines / prescribed procedures :** This is all the more necessary in regard to take over of accounts, following of KYC norms & carrying out pre-sanction appraisal / post-sanction follow up.
6. **Be alert on the Advocate's Opinion / Valuer's Report:** These reports are to be scrutinized carefully to ensure that nothing adverse is reported against securing the interest of the Bank.
7. **Be alert on the warnings given by the system:** One should not ignore the alarmings like "Cheque already paid" and "Cheque not issued in the account" given by the system.
8. **Keep secrecy of the password :** Do not reveal the password to anybody whosoever he may be and howsoever close he may be to you.



1. **Delay the decision:** Delay in taking decision not only shows the incompetence of the person but also smacks him with corrupt intentions. Hence any decisions are required to be taken within the prescribed time / a "reasonable time".
2. **Indulge in reckless finance :** It means loans given (even a single loan ) without following any norms (pre-sanction and / or post-sanction) and without obtaining proper documents.
3. **Hand over demand draft directly to the borrower / his representative :** In spite of being aware of the ills of this practice, certain branches are following this procedure which leads to suspected vigilance angle in their actions.
4. **Depend on the middlemen:** For selecting a borrower/pre-sanction appraisal / post-sanction follow-up, at no stage depend on a third person.
5. **Make false TA/ Medical bills:** These claims are to be made in terms of guidelines / eligibility and should not be used as source of profit.
6. It is said that **intention in doing a particular thing may be true but is should be justified.**



Computers have now become an inseparable part of our lives as innumerable tasks performed in the daily lives of people depend on computers and its network. The internet has become a mission-critical infrastructure for governments, companies and financial institutions. Computers and network are used for controlling and managing manufacturing processes, water supplies electric power grid, air traffic control system and stock market to mention a few important areas.

In 1960 internet was developed for better communication and research. With advancement of technology and expansion of internet every area becomes easy to access. However, at the same time it provides a pathway to commit crimes easily without any effort but by just sitting on a system. Internet has not grown in terms of users but also in functionality.

Some human minds of criminal nature use the internet as a tool of crime which is now known as cyber crime. Cyber crime mainly consists of unauthorized access to data, data alteration, data destruction and theft of funds or intellectual property. Cyber crime also includes phishing, credit card frauds, illegal down loading, industrial espionage, child pornography, kidnapping children via chat rooms, scams, cyber terrorism, creation/distribution of viruses, spam and so on.

Explained below are some of the different categories of cyber crime:

**1. Spam:** Spam are junk e-mails or unsolicited emails sent to users in bulk. These mails represent more than 50% of all email transmitted over the internet. Spam costs the sender very little. Most of the costs are paid by the recipient or the carriers rather than by the sender. These mails promote dubious products, get-rich-quick schemes, lottery, high paying sit at home jobs etc. which trap many innocent users. Judging it's impact new technologies have been created to curb its

sources. But at the same time the spammers have also become sophisticated and they generate unique messages and use subverted computers to send these messages.

**2. Extortion and Damaging Reputations:** In this category criminal gangs threaten companies with disruption of their networks through "denial of service" attacks or theft of valuable information unless they pay ransom into their offshore bank accounts.

**3. Fraud and Phishing:** "Phishing" is derived from word fishing and it means luring or enticing an unwary customer of a Banking or Financial Institution, to pass on sensitive information pertaining to their account. Scammers then use this information to siphon off funds or undertake transactions that are billed to the original customer. In phishing the customer of the Financial Institution receives an E-mail reportedly from the Institution, warning the customer that their internet banking privileges will be blocked due to a long period of inactivity-unless they confirm their login name, password, date of birth and other security details so that the same can be updated in the bank's server. Such an email contains an URL or a link, which promises to take the customer directly to the internet banking interface of the Institution. This real looking URL or webpage is created/designed by scammers on freely available web-hosting servers. For example if the actual URL of the bank is [www.oneindiabank.com](http://www.oneindiabank.com) the fraudsters would create a webpage in the fashion [www.oneindiabank.org](http://www.oneindiabank.org) or [www.oneindiabank.net](http://www.oneindiabank.net) etc.

The details submitted by the customers are then captured in the background by the fraudsters. Such spoofed website remain active only for a few hours, till the fraudsters have collected the login and password details of several customers who have taken the bait. The data captured is then used to log into the victims and transfer funds into an other account opened by them using forged documents or into the accounts of "mules"(middlemen) recruited by them with the lure of financial rewards through social networking skills. The account holder/ victim only realize that they are cheated when they receive their bank statements and see funds transfers that they did not do.

Another variant of phishing attacks credit card holders of various banks. Legitimate customers receive a warning mail reportedly from their bank advising them that a large number of suspicious transactions have been noticed on their credit card and they are required to confirm card details including the CVV (Card Verification Value) which is a 3 digit security code. Such credit card information is then used by the fraudsters for ordering many electronic items and other expensive items. Such shipments are delivered at a mail-drop address which are later on picked up by the fraudsters.

**4. Vishing:** It is a form of phishing only done through voice call. Somebody appearing to be from your bank either calls you or you are asked to dial a number of their "customer service" or "Fraud control" department. A hijacked phone

line then connects the caller to what appears to be the original Bank's phone banking unit. The customer hears a prompt to key in their card number and other details into the Interactive Voice Response (IVR) mechanism. These pip-tones are captured and converted into tangible information, which is used by criminals to make internet purchase and fraudulent transaction are later billed to the genuine customers.

- 5. Computer Viruses:** These are computer programs when opened, save themselves into the computer's hard drives without the user's consent thus creating computer virus. Virus may steal disk space, access personal information, ruin data on the computer or send information out to other computers.

The most common way to infect a computer with a virus is by way of e-mail attachment. When you receive these type of emails and open the attachment, the virus immediately spreads through your computer system. If the virus is successfully put into a network then all the computers connected in the network get infected with virus.

- 6. Cyber stalking:** This is done to stalk or harass an individual or organization by monitoring someone's activity on real-time. Cyber stalking can include harassment of the victim even obtaining financial information of the victim and/or threatening the victim in order to frighten them.

#### Some of the techniques used by cyber criminals:

- 1. Bots:** A bot (short for robot) is a computer on which a worm or virus has installed programs that run automatically and allow criminals access and control. Botnet means a network that automatically spread malware.
- 2. Keylogging:** these are programs that convert/ recover the keys typed by a computer user and either store the data for later use or secretly send it to other site. The advantage of key logging is that the cybercriminal need not play a trick with the customer to get the information.
- 3. Bundling:** Attaching a virus intentionally to a legitimate download such as a screen saver or a game. When a computer user downloads and installs the legitimate file, they are unwittingly also giving permission to install the criminal program.
- 4. Packet sniffers:** Packet means a discrete block of data sent over a network. Packet sniffers are software programs that monitor network traffic and capture and analyze targeted data transmitted via a network.
- 5. Rootkit:** A set of tools used by an intruder after hacking a computer. The tools allow the cybercriminal to maintain access, prevent detection, build in hidden backdoors and collect information.
- 6. Spyware:** Software that gathers information without the user's knowledge.
- 7. Worms and Trojans:** A Trojan is a malicious program unwittingly downloaded and installed by computer users. Trojans contain command that a computer automatically executes without the user's knowledge. Sometimes it can act as a zombie and send spam or participate in a distributed "denial of service" attack.
- 8. Zombie Computer:** A computer that has been hacked into and is used to launch malicious attacks or to become a part of botnet.

- 9. Skimmers:** These are devices that steal card information when cards are swiped through them. This can happen in stores, malls, restaurants when the card is out of the owner's view. Mostly the card information is sold online through a criminal community.
- 10. Social engineering:** In this method the criminals use lies and manipulations to trick people into revealing their personal information.

#### What to do to prevent such frauds:

- Keep in mind that your Bank will never ask for updating your sensitive information online or over phone. Banks employ secured back-up strategies for their entire server, holding important customer information, so that there is no question of any banking server failing and causing Bank to lose data.
- Never click on any link embedded in an e-mail which takes you to banking website or webpage. If at all you need to visit your bank's site do so by going to the banking home page or by typing the URL directly.
- If in doubt make an outbound call to a known customer service number of your bank and ascertain the details.
- Use version 7 of Mozilla Firefox version 2.0.0.1 to avoid falling victim to a spoofed website.
- Keep your operating system updated. Microsoft releases security updates regularly. Turn on automatic update option for your operating system.
- Activate firewalls which are the first line of cyber defence. Firewalls safeguard your computer from intrusion and block connection to unknown or bogus sites and also keep out some types of viruses and hackers.
- Use good anti-virus and anti-spyware software to prevent your computer from falling prey to malicious software.
- Get your computer scanned periodically to ensure that no outside threats are present in your system.
- Do not be enticed by offer of rewards and lotteries that you get in an email. Never respond to any unsolicited or spam mail. Never share your email address on the internet without reason. Never reply to emails that ask you to verify your information or confirm your user ID or password.
- Never give your card/account related information in an email or post it on any website.
- If you are an internet shopper reserve low limit credit card specifically for such purchases and check the statements are correct or not on a regular basis.
- Last but not the least, do not be scared unnecessarily. Use the alternate banking channels wisely and with due precaution. Even after taking all the suggested precautions if you suspect a computer crime, identity theft or a commercial scam do not panic but call and contact local police.

**S. C. Raut**

STC, Bhubaneswar



# डिजिटल बैंकिंग में बरती जाने वाली सावधानियाँ

डिजिटल बैंकिंग के तहत यूनिन बैंक ऑफ इंडिया ने इंटरनेट बैंकिंग (ई-बैंकिंग), मोबाइल बैंकिंग, टैबुलस बैंकिंग आदि सेवाओं के रूप में महत्वपूर्ण पहल की है। बैंकिंग के ये नवोन्मेषित तरीके, ग्राहकों में काफी लोकप्रिय होते जा रहे हैं, क्योंकि ये उपयोगकर्ता के बहुत अनुकूल और सुविधानुसार उपलब्ध हैं। वर्तमान में कुल बैंकिंग लेन-देनों के 60% लेनदेन इन वैकल्पिक सुपुर्दगी चैनलों के माध्यम से ही हो रहे हैं।

डिजिटल बैंकिंग का उपयोग निश्चित रूप से भविष्य में बढ़ने वाला है, पर साथ ही साथ एक अनुमान यह भी है कि भविष्य में प्रौद्योगिकी से संबंधित धोखाधड़ी के मामलों में भी वृद्धि होगी। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि मार्च 2013 में 1 लाख से अधिक खातों में प्रौद्योगिकी से संबंधित धोखाधड़ी के मामले पाये गये, जिनमें 300 करोड़ रुपये की राशि शामिल थी।

अतः यह आवश्यक है कि इन नए तरीकों का उपयोग करते समय सभी निर्धारित मानदंडों का पालन किया जाए। डिजिटल बैंकिंग के उपयोग के समय हम 'क्या करें' और 'क्या नहीं करें' से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य नीचे दिये जा रहे हैं, जो डिजिटल बैंकिंग से संबंधित धोखाधड़ी से बचाव में सहायक होंगे:

## इंटरनेट बैंकिंग सुविधा

### (करणीय)

- अपने यूजर आईडी तथा पासवर्ड का प्रयोग करने से पहले कृपया सुनिश्चित करें कि प्रदर्शित पेज <https://> पेज हो, <http://> पेज नहीं होना चाहिए। कृपया ब्राउजर की दाईं ओर नीचे के तरफ लॉक का चिह्न तथा सत्यापन प्राधिकारियों द्वारा प्रस्तुत प्रमाण पत्र भी देखें।
- ई-मेल में प्राप्त लिंक या किसी तृतीय पक्ष की वेबसाइट पर दिए गए लिंक को क्लिक करने के बजाय सीधे बैंक की वेबसाइट पर जाएं।
- हमेशा पोस्ट लॉग इन पेज पर अंतिम लॉग इन की तारीख तथा समय की जांच करें।
- यदि आपके द्वारा अनजाने में गोपनीय जानकारी का खुलासा हो गया है, तो तत्काल ही अपने पासवर्ड को बदल दें।
- अपने ब्राउजर को पासवर्ड याद रखने से रोकने के लिये ब्राउजर का 'ऑटो कंप्लीट' के कार्य को असक्षम कर दें।
- अपने सेशन को समाप्त करने के लिए ब्राउजर को सीधे बंद करने के बजाय हमेशा लॉग आउट करें।
- अपने द्वारा रखे गये पासवर्ड तथा अकाउंट लॉग इन की जानकारी की सुरक्षा सुनिश्चित करें।
- अपने खाते के ब्योरों की नियमित जांच करें तथा उनका सभी प्रकार से

त्रुटिहीन होना सुनिश्चित करें। यदि कोई अंतर लगे, तो तुरंत बैंक से संपर्क करें।

- अपने पीसी को नियमित रूप से नवीनतम एंटीवायरस तथा स्पायवेयर से अद्यतन करते रहें। अपने पासवर्ड की प्रबलता सुनिश्चित करें। एक प्रबल पासवर्ड (साधारणतया, परंतु सीमाबद्ध नहीं) में :
  - कम से कम 8 कैरेक्टर हो।
  - आपका यूजर नाम, वास्तविक नाम अथवा कंपनी के नाम वाला न हो।
  - कोई पूरा शब्द नहीं होना चाहिए।
  - पूर्व पासवर्ड से अनिवार्यतः अलग हो।
- अंकों (1,2,3 आदि), विशेष कैरेक्टर (:@ \$ आदि), बड़े अक्षरों (A,B,C) के संयोजन से बना हो।
- वास्तविक की-बोर्ड की अपेक्षा वर्चुअल की-बोर्ड का अधिक उपयोग करें।

### (अकरणीय)

- किसी भी ई-मेल अथवा फोन कॉल के माध्यम से पूछे जाने पर अपनी गोपनीय जानकारियों का ब्यौरा न दें। बैंक कभी भी कोई गोपनीय जानकारी देने हेतु कोई ई-मेल नहीं भेजता है।
- इस प्रकार के ई-मेल/एसएमएस या फोन कॉल प्राप्त होने पर phishing@unionbankofindia.com पर तत्काल सूचित करें।
- आपके यूजर आईडी/पासवर्ड/कार्ड नंबर/CVV आदि को अद्यतन या सत्यापित करने की मांग करने वाले ईमेल/इंबेडेड लिंक का उत्तर न दें।
- बैंक की वेबसाइट को एक्सेस करने वाले किसी भी मेल के लिंक पर कभी भी क्लिक न करें।
- कभी भी पॉप-अप विंडों में लॉग इन तथा संवेदनशील जानकारियों की प्रविष्टि न करें।
- सिम अदला-बदली का शिकार न बनें। कॉल तथा मैसेज न प्राप्त होने तथा सिम रजिस्ट्रेशन असफल रहने पर तुरंत जांच पड़ताल करें। (अपने फोन को चालू रखें तथा यूनिन बैंक से समय-समय पर मिलने वाली चेतावनियों पर ध्यान दें)

## मोबाइल बैंकिंग/एसएमएस बैंकिंग

### (करणीय)

- पासवर्ड का प्रयोग करें-अपने मोबाइल फोन की सुरक्षा करें तथा गलत पासवर्ड डालने की अधिकतम सीमा तीन बार से अधिक न हो, यह सुनिश्चित करें।
- मोबाइल सुरक्षा/एंटीवायरस साफ्टवेयर अपलोड करें।
- विश्वसनीय स्रोतों, जैसे आपके बैंक द्वारा भेजा गया लिंक या सीधे बैंक की वेबसाइट से या वैध एप्स स्टोर से ही एप्स अपलोड करें।

- फोन के गुम हो जाने या चोरी हो जाने पर तुरंत बैंक को सूचित करें तथा मोबाइल बैंकिंग सेवा को निष्क्रिय कराने का प्रबंध करें।

### (अकरणीय)

- अपने मोबाइल में उपलब्ध साफ्टवेयर से मोबाइल बैंकिंग अंतरण के दौरान भिन्न-भिन्न कार्य न करें।
- अपरिचित स्रोतों से एप्स अपलोड पर मुफ्त कॉलर ट्यून्, रिचार्ज आदि को कभी भी स्वीकार न करें।
- सार्वजनिक स्थान पर ब्लूटूथ के प्रयोग से बचने की कोशिश करें, क्योंकि कोई व्यक्ति आपके गोपनीय डाटा/ सूचना तक पहुंच सकता है।
- सार्वजनिक स्थान जैसे, हवाई अड्डा इत्यादि स्थानों पर उपलब्ध असुरक्षित वाई-फाई संपर्क से अपने मोबाइल फोन को कभी न जोड़ें।
- अपरिचित स्रोतों से आने वाले ई-मेल या संलग्नकों को अपने मोबाइल फोन पर कभी भी न खोलें/न ही डाउनलोड करें।

### एटीएम/डेबिट कार्ड

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अक्टूबर 2014 में प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार यह देखा गया है कि विक्रय पाइंट पर अर्थात् वस्तुओं को खरीदने के लिए पाँच करोड़ से अधिक बार क्रेडिट कार्ड का उपयोग किया गया तथा इसमें शामिल धनराशि एक लाख मिलियन रुपये से भी अधिक रही। यह संख्या सिर्फ एक माह की है, जो पिछले महीनों की तुलना में क्रेडिट कार्ड के प्रयोग की बढ़ती प्रवृत्ति को दर्शाती है।

ग्राहकों का यह अनुभव है कि नकदी साथ रखने के बजाय क्रेडिट कार्ड रखना अधिक सुरक्षित होता है। बिना तत्काल भुगतान के क्रय तथा इसके उपयोग की सरल प्रक्रिया इसे ग्राहकों को साथ रखने में अधिक सरल बनाती है। तथापि, जितनी बार कार्ड स्वाइप किया जाता है, कार्ड में निहित सूचनाओं के साथ उतनी ही अधिक छेड़-छाड़ की जा सकती है। भौतिक रूप से चोरी के अलावा धोखाधड़ी के अन्य भी तरीके हैं। यहाँ कुछ प्राथमिक उपायों का वर्णन किया जा रहा है, जो हमें इस प्रकार की धोखाधड़ी से बचने में सहायता कर सकते हैं:

### (करणीय)

- जैसे ही आपको कार्ड की प्राप्ति हो, उसके पीछे स्थित काली पट्टी पर हस्ताक्षर करें।
- एटीएम अंतरण तथा सुरक्षा सचेत सूचना की प्राप्ति के लिए अपने मोबाइल क्रमांक को बैंक में नोट कराएं।
- कार्ड का प्रयोग सर्वप्रथम एटीएम में ही होना चाहिए, अन्यथा इसकी स्वीकार्यता किसी पाइंट ऑफ सेल पर नहीं हो पायेगी।
- अपने पिन (व्यक्तिगत पहचान क्रमांक) को याद कर लें।
- जैसे ही आपको पिन की प्राप्ति हो, उसे बदल दें। अच्छा होगा कि हर तिमाही में इसे बदलें।
- शोल्डर सर्फिंग/स्किमिंग/की-फिक्सिंग या ग्लूइंग से सावधान रहें।
- कृपया सुनिश्चित करें कि पीओएस (पाइंट ऑफ सेल्स) पर कार्ड का स्वाइप आपकी उपस्थिति में हो।
- एटीएम/डेबिट कार्ड के गुम होने अथवा चोरी होने पर तुरंत अपने बैंक को सूचित करें। इसे ब्लॉक करा दें।

- किसी भी प्रकार के कपटपूर्ण अंतरण से बचने के लिए अपने खाते के ब्यौरों की समय-समय पर समीक्षा करते रहें।
- धोखेबाज कभी-कभी आपके कार्ड को ट्रैप करने के लिए नकदी मशीन में कोई डिवाइस लगा देते हैं और आप जैसे ही उस स्थान को छोड़ते हैं, उनके द्वारा वह कार्ड प्राप्त कर लिया जाता है। यदि किसी भी कारण से आपका कार्ड मशीन में रह जाता है, तो तुरंत ही कार्ड कंपनी को सूचित करें। अच्छा होगा कि मशीन के सामने रह कर ही फोन करें। सुनिश्चित करें कि आपके मोबाइल फोन में कार्ड कंपनी का 24 घंटे का संपर्क नंबर है।
- लेन-देन पूरा होने के बाद एटीएम छोड़ने से पहले अपनी रकम तथा कार्ड सुरक्षित रख लें।
- नकदी मशीन पर्ची, मिनी विवरण या शेष जांच पर्ची को फेंकने से पहले उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़ दें या नष्ट कर दें।
- एटीएम मशीन के नजदीक खड़े रहें। पिन डालते समय की-पैड को अपने दूसरे हाथ तथा शरीर से छिपाये रखें, ताकि कोई उसे देख न पाए। यह आपके पिन की रक्षा उन लोगों से करेगा, जो आपके कंधे के ऊपर से झांक सकते हैं। साथ ही यह उन धोखेबाजों से भी सुरक्षित रखेगा जिनके द्वारा छुपाये हुए कैमरे से की-पैड की फोटो ली जाती है।
- सचेत रहें तथा पहले अपनी निजी सुरक्षा करें। यदि कोई व्यक्ति गड़बड़ करे या आप पर नजर बनाए रखे, तो लेन-देन को निरस्त कर दूसरी मशीन पर जाएं।

### (अकरणीय)

- आसानी से अंदाजा लगाया जा सकने वाला पिन न सेट करें।(जैसे 0000, 1234 आदि)
- इसे किसी भी कागज पर न लिखें और ना ही मोबाइल फोन में संचित करें।
- अपने पिन को किसी व्यक्ति के समक्ष या मेल/ इंटरनेट के माध्यम से उजागर न करें।
- जब आप लेन-देन कर रहे हों, तो किसी भी अन्य व्यक्ति को एटीएम कक्ष में आने की अनुमति न दें।
- एटीएम कक्ष में हेलमेट, टोपी आदि पहन कर प्रवेश न करें।
- एटीएम मशीन में कुछ भी असामान्य प्रतीत हो या हेर-फेर के लक्षण महसूस हों तो उसका इस्तेमाल न करें, बैंक को तत्काल काल सेंटर 1800222244 पर सूचित करें।
- अपने कार्ड को कभी भी अपनी कार, होटल के कमरे या कार्य स्थल पर अकेला न छोड़ें।
- कभी भी परेशान न दिखें तथा सहयोग का प्रस्ताव करने वाले अपरिचितों से मदद न लें।
- मुंह ढके व्यक्ति को एटीएम परिसर में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

### क्रेडिट कार्ड और पीओएस (POS)

#### (करणीय)

1. अपने क्रेडिट कार्ड को सुरक्षित रखें।
- कार्ड के गुम होने के नुकसान को कम करने के लिए, कार्ड को पर्स से अलग रखें।

- यदि पर्स या बटुवे में कार्ड रखा गया है, तो उसे अपने शरीर के करीब रखें, ताकि उसे आसानी से छीना न जा सके।
  - सुनिश्चित करें कि आपके पर्स की चेन बंद है। यदि आप अधिक आवागमन के क्षेत्र में खरीददारी कर रहे हैं, तो छोटे पर्स का प्रयोग करें।
  - सिर्फ एक या दो ही क्रेडिट तथा डेबिट कार्ड उपयोग के लिए साथ रखें।
  - खरीददारी के बाद तुरंत अपने कार्ड संभाल कर रख लें। चोरों द्वारा कैमरा या सेल फोन से आपके कार्ड की तस्वीर ली जा सकती है।
  - दुकान या रेस्टोरेंट से निकलने से पहले यह सुनिश्चित कर लें कि आपके द्वारा कार्ड वापस रख लिया गया है।
2. उन सभी चीजों के टुकड़े कर दें, जिन पर आपके क्रेडिट कार्ड की संख्या दर्ज हो।
    - अपने क्रेडिट कार्ड के बिल का ब्यौरा सीधे कूड़े में न फेंके। उसके टुकड़े कर दें।
    - पुराने क्रेडिट कार्ड, जो समाप्त या निरस्त हो गए हैं, उनके साथ भी समान प्रक्रिया अपनाई जाए।
    - आप विभिन्न टुकड़ों को अलग-अलग कूड़ेदानों में डालकर संभवतः उन बुद्धिमान चोरों के प्रयास को विफल कर सकते हैं, जो बाद में उन टुकड़ों को इकट्ठा कर मिला सकते हैं।
  3. कोरी क्रेडिट कार्ड रसीद पर हस्ताक्षर न करें।
    - हस्ताक्षर करने से पहले हमेशा क्रेडिट कार्ड की धनराशि की जांच कर लें।
    - यदि क्रेडिट कार्ड की रसीद पर रिक्त स्थान मौजूद है, तो रसीद पर हस्ताक्षर करने से पहले उस स्थान पर शून्य लिखें अथवा स्थान को शुरू से अंत तक काट दें।
  4. अपने कार्ड की जानकारी देने से बचें।
    - क्रेडिट कार्ड चोरों द्वारा चकमा देकर आपके क्रेडिट कार्ड के नंबर की जानकारी प्राप्त करने के लिए क्रेडिट कार्ड जारीकर्ता अथवा अन्य कारोबारी होने का दिखावा किया जाता है।
  - यदि आप द्वारा पहले संबंधित कंपनी के साथ कारोबार नहीं किया गया है, तो सबसे पहले उसकी समीक्षा या शिकायतों की ऑनलाइन जांच कर लें।
  - अपने क्रेडिट कार्ड के पीछे अंकित नंबर से प्राप्त ग्राहक सेवा केन्द्र को ही अपने क्रेडिट कार्ड के नंबर तथा अन्य संवेदनशील सूचनाओं की जानकारी दें।
5. क्रेडिट कार्ड के ऑनलाइन उपयोग के समय सुरक्षित रहें।
    - खुद को आपका बैंक, क्रेडिट कार्ड कंपनी या आपकी निजी सूचनाओं का उपयोग करने वाला कारोबारी बताने वाले से प्राप्त ई-मेल लिंक को भी क्लिक न करें, भले ही वह वैध लगे।
    - सावधान रहें, सिर्फ सुरक्षित वेबसाइट पर ही अपने क्रेडिट कार्ड नंबर की प्रविष्टि करें, जिनकी वैधता पर आप शत-प्रतिशत आश्वस्त हों।
  6. कार्ड के गुम एवं चोरी होने की तत्काल सूचना दें।
    - कस्टमर केयर नंबर/हेल्पलाइन नंबर अपने पास हमेशा रखें।
    - गुम हुए क्रेडिट कार्ड की रिपोर्ट जल्द से जल्द करें।
  7. अपने बिल के ब्यौरों की हर माह जांच करें। ऐसा कोई प्रभार, जिसका लेन-देन आप द्वारा नहीं किया गया है, उसकी रिपोर्ट तुरंत ही अपने क्रेडिट कार्ड जारीकर्ता को करें, चाहे उसकी राशि कितनी ही कम क्यों न हो, क्योंकि क्रेडिट कार्ड संबंधी धोखाधड़ी का यह प्रथम सूचक है।
  8. विवरण के साथ मिलान के लिए अपनी रसीदों को संभाल कर रखें।
  9. अपने बिलों को तुरंत देखें या यथा समय अपने बिलों की ऑनलाइन जांच कर अपने द्वारा की गई खरीददारी के साथ उनका मिलान करें।
  10. पता बदलने पर अथवा किसी यात्रा पर जाने से पहले कार्ड जारीकर्ता को सूचित करें।
  11. क्रेडिट कार्ड के लिफाफे के ऊपर अपना खाता क्रमांक न लिखें।
  12. अंतर्राष्ट्रीय यात्राओं से वापसी के उपरांत तुरंत नया कार्ड जारी करने हेतु आवेदन करें।



**शारदा नागरे**  
सतर्कता विभाग, कें, का, मुंबई

मन का क्या भरोसा है,  
वह तो कहीं भी चला जाता है,  
लेकिन मेरे मन का क्या कहना,  
वह तो सिर्फ तुम्हारी ओर जाता है  
नहीं तो, मन का क्या भरोसा है,  
वह तो कहीं भी चला जाता है।

मैं कहता हूँ, दो क्षण  
ईश्वर का स्मरण करो,  
कुछ पल किताबों में भी लगाओ,  
लेकिन इसे फिक्र नहीं, इन सब बातों की,  
वह तो सिर्फ तुम्हारी ओर जाता है,  
नहीं तो, मन का क्या भरोसा है,  
वह तो कहीं भी चला जाता है,

कहता है बड़े फख्र से,  
पैगम्बर और खुदा से मिला हूँ,  
यहाँ तक कि ईश्वर से भी मिला हूँ,  
सबने राह दिखाई है तो  
सिर्फ और सिर्फ प्रेम की,  
इसलिए तुम्हारी ओर चला आता हूँ,  
नहीं तो, मन का क्या भरोसा है,  
वह तो कहीं भी चला जाता है

**म  
न  
की  
बा  
तें**

**रमन कुमार चौधरी**  
लुधियाना मुख्य शाखा

# SPIRITED

(Based on a true Incident)



Wilma remembered spending most her time by the windows, when she was four. She would clutch the windowpane and eagerly watch the children playing on the street. Children running and yelling at each other, falling down, bruising themselves. She also wanted to run, with her eyes closed, with the wind blowing through her hair, raindrops falling on her cheek. she wanted to chase the birds, her feet pushing the hard earth beneath her, faster than all those other children, her pajama rustling in the wind.

She was a small black girl, not too beautiful not too ugly. They lived in Tennesse, the U.S. in a small house, unlike her friend Mia, whose father worked at some office. Wilma's father just worked in the railway station, lifting huge baggage for travelers in exchange of coins. Her mother helped other women in cleaning the dishes. Wilma thought her mom was the best. For whenever Wilma was sad, it was her momma who lent her immense strength. "you are a special child and you will hit the road one day, my dear, you just have to wait and believe in your self". Wilma could not see how, but she remained silent for her momma was always so nice to her.

They paid a regular visit to the nearby medical college, for black people. Her momma had asked her to be good to the doctor, as he was a good man. Wilma had nearly agreed to her mother until one day she decided she did not like him very much. She even stopped beaming at him while greeting "hello". Not because he prescribed too many medicines for her. But he had put a pair of braces to her legs though she did not like it very much. And contrary to her mother, he always said she would never walk again.

Not because she had pneumonia. She was a good child and had all her medicines on time.

But the fever left her with a twisted leg. And the doctor called it POLIO. And Wilma did not like the name either.

"by jove! You will walk one day my love" her mom always told her when she looked at other children longingly "these legs of yours are your God Gifted strength". And Wilma waited for that miracle to happen.

When she went to school, limping on her braces. The children surrounded her and exclaimed "oii! whats wrong with your feet"

"why nothing is wrong" she tried to be brave.

"why is it twisted like a vine" the boys mocked at her.

"its coz I am a special child" she defended.

The boys laughed aloud and ran away. When she asked her mother if she was not a special child "you are special if you believe in your abilities and make the most of what the holy ghost has given ye!" was all she said. That night she dreamed she was running free and wild and was chasing down the bad boys. The next morning when she woke up, she decided she will wear no braces, for her legs were her God gifted strength and she believed that one day she will run. Her momma hesitated and the bald doctor said No.

But Wilma was a stubborn child. So she went without braces. Limping....slowly.....yet without braces.

When She was twelve she thought God must be a strange old man, for she could not understand his ways. If she was so special why she had to struggle for something, that came naturally to not so special people. She was mulling over it, when she was caught by the Scarlet Fever followed by Whopping cough, then measles, then Chicken Pox. Momma said "Don't you let these nothings bother you. This is just his way of testing you".

And so Wilma tried to walk on her own two feet. Without the metal rods to her support. She was no runner yet. Neither could she walk properly. But she walked never-the-less with one feet straight and the other one trying to be.

Eyebrows were raised, girls giggled, teachers chuckled and the bad Boys laughed , when she put her name on the list of the annual sports meet. For the list was not for humming in the choir, but for running on track. But Wilma was thirteen and a big girl now. She knew she could take her own decisions, and she had decided to run on the track.

The chuckles were more audible and the boys laughed even harder, when she came last in the race. But she promised to herself she will come first one day. She tried again and again and came last every time, but she continued.

And a day came to every ones utter dismay she came first, and the bad boys were silent this time, for they had been outrun by Wilma. Wilma, who once suffered from Infantile paralysis could now run like other children.

Ed Temple was the coach of Tennesse state university. One look at Wilma and he could tell he was seeing a fighter spirit. Wilma was fifteen now and she could run. She could run far better than the average masses. She wanted to be the fastest woman on earth. And Ed trained her.

In 1960 she was selected for Olympics games in Rome, and it was no school function. It was a platform where she had to compete with the best of the world. She had been matched against Jutta Haine who had a notorious history of never being beaten.

They ran their 100 meters. Wilma closed her eyes and thought about how she was a special child with her God gifted leg. She ran like a dream and won her gold medal beating Jutta.

They competed for 200 meters. Wilma won another gold medal beating Jutta.

Now it was time for 400 meters. She beat Jutta for the third time, completing the track in 44.5 seconds which was a world record then. She won her third gold medal.

And she was known as the fastest woman on track throughout the world. That paralytic girl, had booed the doctors, and her fate, to prove that she was really special, as she believed in herself.



**Rosa**

R.O., Bhubaneswar

## बैंक का स्थापना दिवस

बैंक के 98वें स्थापना दिवस के अवसर पर मुंबई में ग्राहकों एवं स्टाफ के लिए 11 एवं 23 नवंबर, 2016 को भव्य कार्यक्रम आयोजित किए गए. गायकद्वय श्री अमाल और श्री अरमान मल्लिक ने अपने संगीत से सभी उपस्थितों का मन मोह लिया. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा बैंक के नये उत्पादों - 'यूनियन स्टार्ट-अप', 'ग्रीन पिन', 'रुपे सेलेक्ट क्रेडिट कार्ड', 'विसा प्लेटिनम (इंटरनेशनल) डेबिट कार्ड' तथा 'क्लासिक डेबिट कार्ड' का शुभारंभ किया गया. दिनांक 11 नवंबर, 2016 को एनसीपीए, मुंबई में आयोजित कार्यक्रम के दौरान "मिशनरीज ऑफ चैरिटी (सेंट टेरेसा) (समाजसेवा); डॉ. देवी प्रसाद शेट्टी (मेडिसिन); सुश्री मेरी कॉम (खेल - बॉक्सिंग); डॉ. अनिल काकोडकर (विज्ञान) एवं पंडित हरीप्रसाद चौरसिया (संगीत)" को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया. 23 नवंबर, 2016 को एमएमआरडीए ग्राउंड, बी.के.सी., मुंबई में स्टाफ एवं उनके परिजनों के लिए रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया. दोनों कार्यक्रमों में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, कार्यपालक निदेशक तथा ग्राहकों, स्टाफ एवं उनके परिजनों ने बड़ी संख्या में भाग लिया.







# INTEGRITY

Is the foundation of character

Never separate the life you live from the words you speak.  
~Paul Wellstone

C.S. Lewis once said, **"Integrity is doing the right thing, even when no one is watching."** Often times we talk about this idea of integrity without grasping what it truly means. Integrity is born in the mind and heart of a person. It comes from who you really are as a man or woman, and what you really believe about right and wrong, good and evil. And integrity is exhibited not in just one act of goodness, but in your whole character. In your many efforts to be successful, seek to grow in competence AND character. Your talent and skills may take you to the top, but only your character will keep you there.

The single most important quality you can ever develop that will enhance every part of your life, is the value of integrity. Integrity is the core quality of a successful and happy life. **Having integrity means being totally honest and truthful in every part of your life.** By making the commitment to become a totally honest person, you will be doing more to ensure your success and happiness in life than anything else you can ever do.

Integrity is a value, like perseverance, courage, and intelligence. It is your choice of values and resolution to live by those values that form your character and personality. And it is integrity that enhances all your other values. The quality of person you are is determined by how well you live up to the values that are most important to you.

**Integrity is the foundation of character.** A person who has integrity also has an unblemished character in every area of his or her life. One of the most important activities you can engage in, is developing your character. And one of the best ways to develop your character is by consistently doing the same things that a thoroughly honest person would do in every area of his or her life.

To be totally honest with others, you first have to be totally honest with yourself. You have to be true to yourself. You have to be true to the very best that is in you. Only a person who is consistently living a life with the highest values and virtues is

a person truly living a life of integrity. If you are always honest and true to yourself you cannot be false to anyone else.

The mark of people who have high integrity is, they always do the highest quality of work in everything they do. They are the people who are always totally honest with themselves in everything they do, and strive to excel in their work on every occasion. **People with high integrity realize that everything they do is a statement about who they are as a person.**

The Universal Law of Attraction says that you inevitably attract into your life people and circumstances that are in harmony with your dominant thoughts and values. This means that everything in your life you are attracted to is because of the person you are. If there is anything in your life, your relationships, or your work that you are not happy with, you need to begin changing the person you are, so that you stop attracting those people and situations into your life.

Your integrity is manifested in your willingness to adhere to the values that are most important to you. It's easy to make promises but often very hard to keep them. But every time you keep a promise that you've made, it is an act of integrity, which in turn strengthens your

character. As you act with integrity in everything you do, you will find that every part of your life will improve. You will begin to attract the best people and situations into your life. You will become an outstanding person as well as achieve success in everything you do.

Seek to grow in character and integrity. Build a foundation that can support a lifetime of success and achievement. Remember: real wealth is what you have left after all the money is gone. Live every day in such a way that you will never be ashamed to look in the mirror.

**Kamal Krishna Das**

R.O., Guwahati



# शिखर की ओर

उच्च कार्यपालक वेतनमान VII में पदोन्नति पर बधाई!



श्री पी. के.साहा  
महाप्रबंधक



श्री केशव बैजल  
महाप्रबंधक

उच्च कार्यपालक वेतनमान VI में पदोन्नति पर बधाई!



श्री एन. आर. जैन  
उप महाप्रबंधक



श्रीमती राजश्री बगलरी  
उप महाप्रबंधक



श्री जे.एस.तोमर  
उप महाप्रबंधक



श्री टी.सरवनई  
उप महाप्रबंधक



श्री राजीव मिश्रा  
उप महाप्रबंधक

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं.



## आज़ादी.....

ये जो आज़ादी का जश्न हम हर साल मनाते आए हैं,  
कई किससे वीर शहीदों के हमें बुजुर्गों ने सुनाये हैं,  
वो वीर जवान भी तो किन्ही माँ-बाप की आँखों के तारे होंगे,  
किन्ही सुहृदों का सुहाग, किन्ही बच्चों के जीने के सहारे होंगे,  
न जाने उनकी शहादत पर कितनी आँखों में आँसू बहाये हैं,  
ये जो आज़ादी.....

अपने घरों से वो सही सलामत निकलते होंगे,  
कई अरमान उनके दिल में अपनों के लिए मचलते होंगे,  
मगर तिरंगे में लिपट के अक्सर घर वापिस वो आए हैं,  
ये जो आज़ादी.....

उनके बलिदान से ही हमारे रौशन दिन हुये हैं आज़ाद,  
हमारा ये मुस्लिस्तों दुश्मन की नजरों से बचकर रहा है आबाद,  
उनके बलिदान से ही महफूज हुए हमारी रातों के साये हैं,  
ये जो आज़ादी.....

आज खास दिन है उन वीरों की शहादत को याद करने का,  
उनके किए के लिए शुक्रिया और खुदा से फरियाद करने का,  
शुक्र करे 'शर्मा' तेरा खुदा, जो ये फरिश्ते तूने हिंदुस्तान में भिजवाए हैं,  
ये जो आज़ादी के.....

अमित कुमार शर्मा  
जालंधर मु. शाखा

## बधाई



कुमारी एन.जी.एस.कीर्तना, सुपुत्री श्रीमती एन.वी.एन.आर.अन्नपूर्णा, क्षे.का. विजयवाड़ा ने स्थानीय 'रोटरी मिड टाउन क्लब' द्वारा आयोजित 'नगर स्तरीय गीत गायन प्रतियोगिता' में 90 प्रतिभागियों में प्रथम स्थान प्राप्त कर वॉइस ऑफ विजयवाड़ा शील्ड, गोल्ड मेडल एवं ₹5,000/- का नकद पुरस्कार अर्जित किया.



कुमारी बी. सिंधुजा, सुपुत्री श्रीमती बी.आर.आर. देवी, सहायक प्रबंधक, क्षे.का., विजयवाड़ा ने 'यूनिवर्सिटी ऑफ अटलांटा' से एम. एस. डिग्री (कंप्यूटर साइंस) प्राप्त की.

कुमार नितेश, सुपुत्र श्री रामराज सिंह, सहायक प्रबंधक, करोलबाग शाखा, दिल्ली ने सी.बी.एस.ई. बोर्ड की 10वीं कक्षा की परीक्षा 9.8 सीजीपीए ग्रेड के साथ उत्तीर्ण की.





## MACHINERIES OF VIGILANCE

In order to deal with issues of corruption which had spread to various departments, the British government passed '**Delhi Special Police Establishment Act**', which was again amended in 1946 to keep a check on the corruption issues involving all the employees of the Central Government. The powers involved; registering an FIR under the relevant sections of the IPC and later, Prevention of Corruption Act (1988) wherein it was registered only after Preliminary Enquiry established that prima facie an offence of corruption had been committed. In 1963, on the recommendations of **Santhanam Committee** and through a resolution passed by the Government of India, the agency acquired the name 'Central Bureau of Investigation' and came into formal existence.

There are various bodies for implementing anti-corruption policies and raising awareness on corruption issues. At the federal level, key institutions include the Supreme Court, the Central Vigilance Commission (CVC), the Central Bureau of Investigation (CBI), the Office of the Controller & Auditor General (C&AG), and the Chief Information Commission (CIC). At the State level, there are local anti-corruption bureaus such as the Anti-corruption Bureau of Maharashtra. The assessment of the legal and institutional anti-corruption framework points to a combination of robust institutions and lack of accountability in key areas.

### Role of Lokpal

The Lokpal is supposed to be a watchdog over the Ministers and the Members of the Parliament. The Lokpal was intended to be similar to the institution of Ombudsman existing in the Scandinavian countries. The Lokpal Bill provides for constitution of the lokpal as an independent body to enquire into case of corruption against public functionaries, with a mechanism for filing complaints and conducting enquiries etc.

### DIFFERENT LEGISLATIONS RELATING TO PREVENTION OF CORRUPTION

#### ⊙ Prevention of Corruption Act, 1988 (PC Act, 1988)

PC act (POCA) is India's principal legislation against corruption. Its main thrust is to prohibit public servants from

# CORRUPTION SAY NO

accepting or soliciting illegal gratification in the discharge of their official functions. In addition, bribe-givers and intermediaries may be held liable under POCA for bribing public officials. However, prosecution under POCA requires prior approval of high authorities which severely limits its usefulness particularly where there is collusive activity within government branches.

#### ⊙ Indian Penal Code (IPC)

In addition to POCA's prohibitions, various sections of the Indian Penal Code (IPC) provide criminal punishment for public servants who disobey relevant laws or procedures, frame incorrect or improper documents, unlawfully engage in trade, or abuse their position or discretion.

#### ⊙ Prevention of Money Laundering Act 2002(PMLA 2002)

The PMLA 2002 seeks to prevent money laundering including laundering of property through corruption and provides for confiscation of such a property. It mainly targets banks, financial institutions and intermediaries such as stock market intermediaries. They must maintain records of all transactions exceeding ₹10 lakhs. Later amendment has also brought non-profit organizations under PMLA.

#### ⊙ Right to Information (RTI) Act 2005

The RTI Act represents one of the country's most critical achievements in the fight against corruption. Under the provisions of the Act, any citizen may request information from a "public authority" which is required to reply within 30 days. The Act also requires every public authority to computerize its records for wider dissemination and to proactively publish certain categories of information for easy citizen access. This act provides citizens with a mechanism to control public spending.

#### ⊙ Justice Verma recommendations

The directions passed by Justice Verma are following:

1. The CVC should be given a statutory status and be entrusted with responsibility to supervise the work of the CBI ensuring its efficiency and impartiality;
2. Its head be selected by a team of the Prime Minister, Home Minister and leader of the opposition in Parliament from a panel of eminent people and the CBI Director be appointed for a minimum tenure of two years by a committee headed by the CVC including the Union Home Secretary and the Secretary, Personnel;

3. A report on the activities of the CBI be submitted in three months;
4. A nodal agency be set up for dealing with the emerging political-criminal-bureaucratic nexus;
5. A directorate of prosecution be set up

### MAIN ISSUES PREVAILING TODAY

#### Political interference

Political interference leads to the officials succumbing to political pressures, from time to time. Even the control over CBI keeps shifting from one Ministry to another, leading to a void filled with instability.

#### Autonomy

- Investigation of crime and accountability to a bipartisan committee of the Parliament will call for a full functional autonomy balanced with accountability.
- Proper Cooperation and coordination of other agencies is required for successful and high-profile trans-national investigations.
- Personnel ministry is responsible for sanctioning the funds and it exercises a direct control over CBI's financial autonomy, which needs to be curbed. Certain rules and restrictions need to be imposed in order to reduce government's interference.

#### Leadership and HR issues

The institutional anti-corruption framework suffers from lack of coordination, overlapping and conflicting mandates between institutions addressing corruption. Key institutions often lack the staff and resources to fulfill their mandate adequately and struggle to protect themselves from political interference.

- The Director of CBI should carefully tread the path of political manipulations and his responsibilities by standing up to the pressure and making sure that he and his team are insulated by always being prepared with the written instructions passed and proof of the actions initiated from his end.
- Justice Verma's recommendations ought to be put in place and a judicious mix consisting of a permanent CBI cadre, expertise from outside, opposition's and judiciary suggestion needs to be considered for recruitment of staff with high integrity.

- There is a need to put up a cadre of supervisory officers to suppress the uncertain system of inductions through deputation from the State Police Forces and Central Police Organisations.
- There needs to be a proper file system in order to track every detail, orders and periodical progress reports. This will help in shielding the agency from unwanted allegations and help in maintaining high transparency.
- There is a need to consider the views of the Select Committee's directives like:
  - o CBI officers investigating cases referred by the Lokpal will be transferred with the approval of the Lokpal; and
  - o For cases referred by the Lokpal, the CBI may appoint a panel of advocates (other than government advocates) with the consent of the Lokpal.
- Amendments in the CBI Act is needed in order to do away with the archaic Delhi Special Police Establishment Act and the role, jurisdiction and legal powers of the agency need to be clearly laid down for the effective functioning of its delegated powers.
- There is a need to establish relevance of RTI Act, 2005 over the functioning of CBI to maintain transparency and increase public trust in its operation. Sensitive matters and selective cases should be kept inaccessible and confidentiality of involvement of whistle-blower needs to be maintained.

**Aditya Mittal**

R.O., Delhi (South)

**कार्टून कोना**





Open Your  
Eyes...



Speak Out...



The ACB  
Listens To You.

## "Keeping Eyes and Ears Open - way to prevent frauds in Advances"

No one can deny that present era of banking is full of challenges. Let us follow the risk mitigants available with us rather than be a risk avoidant totally by keeping our eyes and ears open at all stages.

### STEPS INVOLVED IN DEALING WITH LOAN PROPOSAL

**PRESANCTION** - Obtaining Relevant Application with Annexure with Credit information • Compliance with KYC details- Identity and Residential proof • Photograph of borrowers/guarantors/partners/directors etc • Proof of Present Business/proposed business • Proof of Registration with District Industry centre or under MSMED act • Obtaining CIN and DIN in case of company accounts • Experience certificate on the line of activity if any • VAT returns in case of traders/ Sales and Establishment Act • Audited & Projected Financial papers- Balance sheet/P&L/IT returns/Annual Report- CMA data in case of 1.00 crore and above • Rent/Lease Agreement (if Applicable)- check validity • Credit Information(Individuals/proprietor/partners/ Directors separately) • Valid License on the line of activity – expiry date • Quotation/ orders on Hand – Comparison with market price • Project Report and its validity • Past experience with other banks- Statement of accounts • Confidential opinion from other bank- IBA format • Interview with the Applicant • Details of Guarantors- their KYC documents and verification • CIBIL Report Generation • RBI defaulter's list/SAL/ECGC defaulters list • Pre-inspection report including ABCD analysis of market enquiry • Compiling Due Diligence report • Due diligence on the suppliers • Details of collateral Security offered- Inspection of property • Due diligence on Property offered as security/Agricultural lands verification with online site available • Compilation of credit report • All legal papers-deeds/chain of deeds • Encumbrance certificate for 30 years • Valuation of the property with our approved valuer • Obtaining Legal Opinion certificate from our Panel advocate • Statutory approvals compliance- pending verification • Pollution control Board- Certificate(clearance certificate- Project dependent)

**PROCESSING OF PROPOSALS** - Thrust area/Stable area/Low priority areas/Prohibited areas • Identification of appropriate Method of Loan Assessment • Fund Based/ Non fund based/ Working capital/term loan • Industry Analysis report –Big ticket advance • Rating of proposal- hurdle rate • Technical Feasibility aspects • Economic Viability aspects • Acceptable levels of Financial Parameters as per loan policy • Precautions in case of Takeover of advances • Compliance of take over norms • Deviations if any • Sanction terms and conditions Refer IC NO 9287 dated 16.05.2013 • Delegated authority to be exercised properly

**POST SANCTION & DISBURSEMENT** - Conveying sanction terms and conditions to the borrower • Acknowledgement & Acceptance of sanction terms and conditions from borrower/s • Creation of Simple mortgage/Equitable mortgage • Registration of Memorandum with sub-register's office • Registration with CERSAI • Obtaining Subsequent EC and verifying our bank's name • Execution of Documents with proper stamping • Vetting of Documents • Credit Process Audit • Compliance of all sanction terms and conditions before disbursement • Disbursement- Ensure availability of vehicle/ machineries/ stocks with supplier/dealers and according to the stage/progress of the project/activity implementation

**POST DISBURSEMENT** - Verifying End use of Bank's fund • Obtaining stamped receipt and bills • In case of vehicles, registration with RTO with bank's clause • Post Disbursement audit • Periodical follow up inspection and compiling inspection report • Stock statements/ Book debtors statements • Renewal of Insurance policies & entry in SRM • Review/Renewal of accounts • Obtaining periodical DBCs

**U Sethupitchai**  
Staff College, Bengaluru





सतर्कता का सरल अर्थ है सावधानी. लेकिन इसका गूढ़ अर्थ बहुत विस्तृत व दूरदर्शी है. इसमें हमारी हर गतिविधि को बारीकी से समझने और उस पर निगरानी रखने का अर्थ शामिल है. जो सावधानी से सतर्क है, वही सफल है. केवल सतर्क रहना और सावधानी न रखना भी अधूरी उपलब्धि है. अतः अपने जीवन में सतर्कता बरतिए, मगर सजगता से, सावधानी से.

एक प्रसिद्ध कहावत है 'प्रिवेंशन इस बेटर दैन क्योर' (Prevention is better than Cure). यह एक वैश्विक संदेश है. हमें अपना कर्तव्य निभाते हुए सदैव सतर्क और चौकन्ना रहना है. तभी हम अपने बीच पनपने वाली किसी बुराई पर पहले से ही अंकुश लगाने में समर्थ हो सकते हैं. काम के साथ सतर्कता किसके लिए बरतनी है? सीधा जवाब है—धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार की स्थितियों को रोकने के लिए.

धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार धिनौने शब्द हैं. ये हमारी संस्था, समाज व राष्ट्र को दुर्बल बनाते हैं. ये दुष्प्रवृत्तियां समाज व राष्ट्र विरोधी हैं, हमारी उन्नति में बाधक हैं. ऐसी सामाजिक बुराइयों से निपटने के लिए सबका परस्पर सहयोग जरूरी है. इसलिए यह जानना जरूरी है कि हमारे इर्द-गिर्द ऐसे संभावित खतरे कौन से हैं, वे क्यों और किन परिस्थितियों में पनपते हैं? ऐसे इरादों वाले लोग किस तरह हमारी कार्यप्रणाली पर शिकंजा कसते हैं? इन सबसे सचेत होने के लिए हमें क्या करना चाहिए, किस तरह प्रतिक्रिया करनी चाहिए, यह सब हमारी सूझ-बूझ पर निर्भर करता है.

धोखाधड़ी व भ्रष्टाचार की घटनाओं से न केवल बैंक की लाभप्रदता प्रभावित होती है, बल्कि स्टाफ के मनोबल, ग्राहकों के विश्वास तथा आम जनता की नजरों में बैंक की छवि पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है. धोखेबाजों का घूम-फिर कर एक ही उद्देश्य होता है—खुद का फायदा. इससे या तो बैंक को आर्थिक हानि पहुंचती है या ग्राहक की जमाराशि के साथ खिलवाड़ होता है. ऐसे व्यक्ति या तो अपना मकसद सीधे साध लेते हैं या गलत तरीके से गलत आदमी को आर्थिक लाभ पहुंचाते हैं और उनसे अपना कमीशन गांठते हैं. धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार रातों-रात अमीर होने या तमाम भौतिक सुविधाओं का मजा लेने के दिवास्वप्न पालने की विक्षिप्त मानसिक हरकत है. जबकि इसका दुष्परिणाम अवश्यंभावी है. इसके दुष्प्रभाव किसी न किसी रूप में उजागर होने लगते हैं. बस इसे संयम व धैर्य से परखने की जरूरत है.

बैंकिंग का सारा कारोबार मानव और मुद्रा की परिधि के बीच घूमता है. मुद्रा धोखाधड़ी या भ्रष्टाचार का केंद्र बिन्दु है, साध्य है और मानव इसका साधन. हम मुद्रा से सीधे जुड़े होने के नाते एक संवेदनशील क्षेत्र में काम कर रहे हैं. अतः धोखाधड़ी की संभावनाओं को तेजी से हवा लगाने लगती है. हम जानते हैं कि बैंक में ईमानदार व्यक्तित्व होना पहली योग्यता है. जब भी ईमानदारी संदिग्ध हुई, इन दुष्प्रवृत्तियों का जन्म हुआ. ईमानदारी ईंसान का नैसर्गिक गुण है पर बेईमानी

उसका सीखा हुआ नुस्खा है. जब तक उसे बेईमानी के लोभ-लालच से न जोड़ा जाए, ईंसान स्वभावतः ईमानदार बना रहता है. सच कहें तो इस दुनिया में पैदा हुए अच्छे-भले ईंसान को बुराई के रास्ते पर ले जाने की प्रवृत्ति परिवार के माहौल, दोस्तों की संगत व शॉर्टकट रास्ते से अमीर हो जाने की विकृत मानसिकता से उपजती है. अनजाने में हुई त्रुटियां, भूल हैं पर जानबूझकर की गई गलतियां मक्कारी और गलत इरादों की द्योतक हैं. हम किसी भी शख्स को इंगित कर ईमानदार नहीं कह सकते. ईमानदारी और सत्यनिष्ठा वक्त और स्थितियों से भी परखी जाती हैं.

हमारे बीच यदि किसी भी तरह की आशंका से घिरा व्यक्तित्व नजर आए तो हमें सामूहिक रूप से, टीम भावना से उसके प्रति सचेत हो जाना चाहिए. उसकी गतिविधियों पर पैनी नजर रखनी चाहिए. यह कार्य सिर्फ प्रबंधन का नहीं है बल्कि हमारे हर कर्तव्यपरायण व निष्ठावान कर्मचारी का है. तभी हम ऐसे गलत मंसूबे पालने वालों से संस्था, समाज व देश को बचा सकते हैं.

इस प्रकार की संदिग्ध गतिविधियां उजागर करने वाले व्यक्तियों के संरक्षण हेतु भारत सरकार ने जन हित प्रकटन एवं प्रकटनकर्ता व्यक्तियों हेतु संरक्षण विधेयक 2010 पारित किया, जिसे विसिल ब्लोअर संरक्षण अधिनियम 2011 के रूप में जाना जाता है. 'विसिल ब्लोइंग' अथवा जन हित में प्रकटन से आशय किसी कर्मचारी या हितधारक द्वारा संगठन के अवैध या अनैतिक कार्यों के बारे में जानकारी का खुलासा करना है, ताकि जनता के हितों का समुचित संरक्षण हो सके तथा प्रशासनिक जवाबदेही बढ़ाई जा सके. यह अधिनियम विसिल ब्लोअर के संरक्षण की दृष्टि से देश का पहला ऐसा कानून है, जो शिकायत दर्ज कराने वाले व्यक्ति को संभावित प्रताड़ना के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करता है. सरकार की इस नीति को प्रोत्साहन देने हेतु सरकार/संस्थाओं. द्वारा विसिल ब्लोअर की पहचान गुप्त रखी जाती है, उनके नैतिक साहस की सराहना की जाती है और उनकी गोपनीयता को अक्षुण्ण रखते हुए उनके करियर के विकास और पदस्थिति में समुचित महत्व दिया जाता है तथा विसिल ब्लोअर की पहचान के प्रकटीकरण में पूरी सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है.

भ्रष्टाचार का उन्मूलन किसी संस्था या विभाग के बस की बात नहीं है. इसके लिए सामूहिक जागरूकता और सतर्कता चाहिए. समय की मांग है कि हम इसके लिए उन सभी संभावित उपायों की जानकारी हासिल करें जिससे हम अपनी ज्यूटी निभाते हुए सचेत व सजग रह सकें. इन सबका एक ही निचोड़ है कि हम एक अच्छे नागरिक बनें व देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाएं.

बैंक में धोखाधड़ी की घटनाएं असावधानी, लापरवाही, जल्दबाजी या अतिविश्वास जैसे कारणों से घटती हैं. कभी भी ऐसी असामान्य घटनाएं, स्टाफ की त्वरित सावधानी, चौकन्नेपन एवं परिशुद्ध कार्यशैली के कारण नहीं होतीं. निश्चित रूप से ऐसे स्टाफ के प्रयासों की सराहना की जानी चाहिए.

व्यक्ति स्वयं परिपूर्ण नहीं है. हरेक में गुण दोष हैं. हर व्यक्ति गलती करता है. पर गलतियां दोहराना गंभीर है और नियमों व निर्देशों को अनसुना करना उससे भी अधिक गंभीर बात है. हम गलतियों को सुधार सकते हैं, दोषों का दूर कर सकते हैं पर दूषित मन में पनपने वाली संगीन दुष्प्रवृत्तियों को नहीं समझ पाते. अतः हमें ऐसी विलक्षणता हासिल करनी है कि इनकी भनक का एहसास या आहट हम महसूस करने लगे और वहीं से हम सतर्क होकर किसी भी वारदात को होने से पहले टालने हेतु सावधान हो जाएं.

आज हमें यदि अपनी संस्था को प्रगतिरत रखकर शिखर तक ले जाना है तो अन्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धाओं के साथ-साथ इन तनावयुक्त दुष्प्रवृत्तियों की चुनौती भी स्वीकार करनी होगी. धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार हमारे सामने सबसे कठिन चुनौतियां हैं तथा इनका उन्मूलन ही हमें उन्नति की ओर ले जा सकता है. यह जरूरी नहीं कि इसका शिकार केवल बैंक ही हों, हम में कोई भी इससे प्रभावित हो सकता है. इसका सारा ताना-बाना हमारे हितों से जुड़ा है. अतः हम संकल्प लें कि इन बुराइयों को जड़ से खत्म करने में अपनी भूमिका में कमी नहीं आने देंगे.

राम गोपाल सागर  
रा.भा.का.वि.,कें.का.मुंबई



# भ्रष्टाचार और दैनिक जीवन में सतर्कता

भ्रष्टाचार ऐसा दानव है जो अपने रूप को निरंतर बदलता जाता है और व्यक्ति को चकमा देकर तथा जाल में फँसाकर अपना शिकार बनाता है। यदि परिभाषा की बात करें तो भ्रष्टाचार ऐसा आचरण है जो बुरा अथवा अनुचित है। दूषित आचरण, नियम विरुद्ध कार्य ही सरल शब्दों में भ्रष्टाचार कहा जाएगा। यह भी कहा जाता है कि मालिक से छुपाकर किया गया कृत्य भ्रष्टाचार है। यहाँ मालिक से अभिप्राय है नियोक्ता।

भ्रष्टाचार का प्रभाव अति व्यापक है और इससे जीवन का कोई भी पहलू अछूता नहीं है। बच्चे के जन्म होने पर जन्म का प्रमाणपत्र लेने में भ्रष्टाचार है तो किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर भी भ्रष्टाचार दिखाई देता है। इतना ही नहीं सामाजिक एवं नैतिक स्तर पर भी भ्रष्टाचार की जड़ें जमती जा रही हैं। दिये गये काम को न करना, उसमें टालमटोल करना भी भ्रष्टाचार का ही स्वरूप है। रिश्वतखोरी के रूप में भ्रष्टाचार का एक निंदनीय एवं प्रमुख स्वरूप आज हम सब के सामने है। रिश्वतखोरी दो प्रकार से होती है: (1) अनुचित कार्य को करवाने के लिए। (2) जागरूकता के अभाव के कारण।

जब कोई व्यक्ति अनुचित तरीके से कोई कार्य करवाना चाहता है तो वह संबंधित अधिकारी/कर्मचारी को रिश्वत प्रदान करता है। बदले में संबंधित अधिकारी/कर्मचारी उस व्यक्ति के अनुचित कार्य को उचित प्रदर्शित कर देता है और रिश्वत प्रदाता अपना काम बना लेता है। विभिन्न परीक्षाओं से संबंधित घोटाले इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। जब किसी व्यक्ति को किसी काम के विषय में जानकारी नहीं होती अथवा पूरी जानकारी नहीं होती तो अधिकारी/कर्मचारी द्वारा काम में समय लगाने अथवा दस्तावेजों की कमी का बहाना बनाकर रिश्वत की मांग की जाती है। यह जागरूकता की कमी से होने वाला भ्रष्टाचार है। दोनों ही प्रकार के भ्रष्टाचार में स्वार्थ सिद्धि ही एक मात्र लक्ष्य होता है जिसके वशीभूत होकर लोग अनुचित आचरण करते हैं, रिश्वत लेते और देते हैं। देश में काला धन इन्हीं कारणों से बढ़ता जाता है। यह काला धन भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, हत्याओं, लूट, हिंसा तथा और भी कई बुराइयों को जन्म देता है।

## भ्रष्टाचार—राष्ट्रीय प्रगति का शत्रु

बर्लिन, जर्मनी स्थित संगठन ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के सर्वे बताते हैं कि जो देश भ्रष्टाचार मुक्त हैं वे ही विश्व के विकसित देशों का दर्जा प्राप्त कर सके हैं। इस संगठन के 2015 के भ्रष्टाचार अवधारणा सूचकांक के अनुसार भारत 76वें स्थान पर है। हालाँकि यह विगत वर्षों से कुछ बेहतर है, किंतु हमारा आदर्शवादी देश जब तक प्रथम 10 में अपना स्थान नहीं बना लेता, स्थिति को बेहतर नहीं कहा जा सकेगा। स्कैंडेनिविया के छोटे-छोटे देश इस सूचकांक में शीर्ष पर बने रहते हैं। सिंगापुर भी बहुत अच्छी स्थिति में है। वहाँ के टैक्सी चालक स्वयं को अपने राष्ट्र का राजनयिक मानते हुए विदेशी सैलानियों के साथ न केवल विनम्र व्यवहार करते हैं, बल्कि स्वयं की गलती से टैक्सी के अधिक चल जाने पर वे मीटर में बिल की तुलना में कम धन लेकर एक उत्कृष्ट मिसाल प्रस्तुत करते हैं। भ्रष्टाचार मुक्त

होकर ही सिंगापुर आज सिंगापुर बन सका है। भ्रष्टाचार देश की प्रगति में बहुत बड़ी बाधा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आधुनिक विश्व में जिन मापदंडों पर कोई देश महाशक्ति बनता है उन्हें भ्रष्टाचार किसी घुन की भाँति खोखला कर देता है—

- भ्रष्टाचार के कारण शिक्षा प्रणाली में लागत बढ़ती है, जबकि नैतिक मूल्यों में गिरावट आती है। कोई भी देश बिना सुलभ शिक्षा एवं उच्च मूल्यों के आगे नहीं बढ़ सकता।
  - भ्रष्टाचार के चलते देश की बड़ी आबादी जो कि मेहनत करती है, पिछड़ जाती है। किसी भी देश की बड़ी जनसंख्या को पीछे रखकर केवल किसी एक वर्ग विशेष को आगे रखकर उन्नति संभव नहीं है।
  - शासन में पारदर्शिता का अभाव भी भ्रष्टाचार की ही देन है। यदि शासन में खुलापन होगा तो भ्रष्टाचार ही नहीं सकेगा। खुली व्यवस्था में काम करना आसान एवं सुविधाजनक होता है।
  - धन का असमान वितरण भी भ्रष्टाचार के कारण होता है। कुछ लोगों की तिजोरियाँ काले धन से भरी रहती हैं, जबकि असंख्य लोग मेहनत करके भी मूलभूत सुविधाएँ नहीं जुटा पाते।
  - धनवान एवं निर्धनों के मध्य खाई बढ़ती जाती है। यह भी एक प्रमुख कारण है जिसके कारण किसी राष्ट्र का विकास मंथर गति से होता है।
- इस तरह किसी देश की प्रगति में भ्रष्टाचार एक बड़े रोड़े के रूप में उपस्थित होता है।

## सतर्कता एवं जागरूकता

भ्रष्टाचार के दुष्परिणामों को जान लेने के पश्चात सतर्कता को समझना भी आवश्यक है। सतर्कता से अभिप्राय है सावधानी पूर्वक निगरानी करना, चौकन्ना होना। अब प्रश्न यह उठता है कि हमें किसकी निगरानी करना अथवा किसके प्रति चौकन्ना होना चाहिए? तो इसका सीधा सा उत्तर है कि अपने वातावरण, अपनी व्यवस्था के प्रति हमें चौकन्ना होने की आवश्यकता है ताकि हम अपने समाज एवं परिवेश को भ्रष्टाचार मुक्त बनाकर उन्नत समाज के निर्माण की ओर अग्रसर हो सकें। कई बार हमारे मन में प्रश्न उठता है कि एक साधारण नागरिक अथवा बैंक कर्मचारी होकर हम किस तरह सतर्कता बरतकर भ्रष्टाचार—मुक्त समाज की स्थापना कर सकते हैं? इसके उत्तर में हम कह सकते हैं कि एक जागरूक नागरिक व किसी बड़े संगठन के कर्मचारी होने पर हम कई स्तरों पर भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई में सक्रिय भूमिका अदा कर सकते हैं।

## व्यक्तिगत स्तर पर सतर्कता एवं भ्रष्टाचार निवारण हेतु हमारे प्रयास

व्यक्तिगत तौर पर जागरूक व्यक्ति सतर्कता की मिसाल प्रस्तुत कर सकता है। हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर जागरूक होने की आवश्यकता है—

- विभिन्न शासकीय नियमों, परिपत्रों की जानकारी होना।

## ड्राई चिकन

सामग्री-एक किलो चिकन, 6 चम्मच दही, लहसुन, अदरक, हरा धनिया, 4-5 हरी मिर्ची, नमक, लाल मिर्ची पाउडर, धनिया पाउडर, हल्दी पाउडर, 2 चम्मच तंदूरी चिकन मसाला (एवरेस्ट), अजवाइन, लाल रंग, नींबू

विधि-लहसुन, अदरक, हरा धनिया, हरी मिर्ची को खल-बट्टे में कूट कर उसे दही के साथ नमक, लाल मिर्ची पाउडर (स्वादानुसार), धनिया पाउडर, हल्दी पाउडर, तंदूरी चिकन मसाला, अजवाइन, लाल रंग के साथ मिला लें और फिर चिकन को अच्छे से साफ करने के बाद इस मसाले में भिगो कर (मैरीनेट करके) कम से कम 4-5 घंटे तक रख दें.

फ्राइंग पैन में केवल दो चमच तेल डालकर मैरीनेट किया हुआ चिकन डालें, ढककर धीमी आंच पर रख दें, इसे बीच-बीच में चलाते रहें. कम से कम आधे घंटे तक पकायें. आखिर में इसका रसा पूरी तरह सुखा दें.

एक ट्रे में प्याज और ककड़ी गोल-गोल काटकर उसके ऊपर यह तैयार चिकन रखें और ऊपर से थोड़ा हरा धनिया, नींबू डाल कर सर्व करें.

जिंदगी एक कठिन सफर है  
बिताना एक हमदर्द के संग है  
जरूरतें आती तो हैं जरूर  
कभी घर, कभी पढ़ाई तो कभी गाड़ी  
इसके लिए एक बैंक का साथ जरूरी है  
और इन मुश्किल पलों में ...  
यूनियन बैंक का साथ भी जरूरी है.

- सूचना के अधिकार आदि की जानकारी होना.
- बीसीएसबीआई की जानकारी स्वयं रखना तथा इस विषय में औरों को अवगत करवाना.
- समाचार-पत्रों में प्रकाशित होने वाली ठगी की घटनाओं पर दृष्टि रखना तथा उस पर औरों से भी चर्चा करना.
- किसी भी प्रकार की रिश्वतखोरी पर अपनी सहमति प्रदान न करना.
- भ्रष्टाचरण करने वाले माफिया तथा अन्य समाज विरोधी व्यक्तियों के महिमा मंडन से स्वयं को दूर रखना तथा इस ओर अन्यो का भी ध्यान आकृष्ट करना.
- किसी प्रतिष्ठित संस्थान के प्रतिनिधि के तौर पर अपने संगठन के नियमों का पालन करना तथा ग्राहकों को भी तदर्थ अवगत करवाना. बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान कर ग्राहकों का विश्वास ईमानदार प्रयासों की ओर आकृष्ट करना.

### जागरूक नागरिक के तौर पर हमारे प्रयास

जागरूक एवं जिम्मेदार नागरिक के तौर पर भी हम कई प्रयास कर सकते हैं. जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

- जागरूकता हेतु प्रयास करना, निरंतर जानते रहना.
- नकद भुगतान के स्थान पर भुगतान के अन्य माध्यम जैसे चेक, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों, गिफ्ट कार्ड आदि का उपयोग करना.
- चमक-दमक के स्थान पर सादागी पूर्ण पारिवारिक एवं सामाजिक आयोजन करना.
- रिश्वत न देने को एक पारिवारिक परंपरा के रूप में स्थापित करना.
- अपने बच्चों में प्रलोभन आधारित कार्य संस्कृति को न पनपने देना.
- बिना किसी कारण के उपहार लेने व देने से बचना.
- रिश्वतखोरी के विरुद्ध दृढ़ता पूर्वक खड़े होना तथा उसके विरुद्ध शिकायत करने की हिम्मत रखना.

इस तरह एक आम व्यक्ति भी जागरूकता एवं सतर्कता के साथ स्वयं को भ्रष्टाचार मुक्त कर सकता है. ध्यान रहे, अधिकांश मामलों में भ्रष्टाचार का कारण जागरूकता का अभाव है. जागरूक व्यक्ति सतर्क होता है और सतर्क व्यक्ति अपने साथ अन्याय नहीं होने देता है. इस लिए यह आवश्यक है कि हम स्वयं को तथा अपने परिवेश को जागरूक करें. सतर्कता की धारा को प्रवाहमान करके अपने समाज एवं राष्ट्र को अधिकाधिक ईमानदार एवं स्वच्छ बनाने का निरंतर प्रयास करें.

अर्पित जैन

स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र, भोपाल



कोमल बिजलानी

रा.भा.का.प्र., कें.का., मुंबई



# पुरस्कार और सम्मान



'यूनियन धारा' को 'चैम्पियन ऑफ द चैम्पियंस' पुरस्कार के साथ-साथ 'फोटो फीचर' एवं 'स्पेशल कॉलम (अंग्रेजी)' श्रेणियों में 02 रजत और 'फोटोग्राफी' एवं 'इंटरनल मैगजीन' श्रेणियों में 02 कांस्य तथा बैंक की हिंदी गृहपत्रिका 'यूनियन सृजन' को 'फीचर (लैंग्वेज)' श्रेणी में कांस्य और 'स्पेशल कॉलम (हिंदी)' श्रेणी में एक रजत और एक कांस्य - कुल मिलाकर 08 पुरस्कार प्राप्त हुए. पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि से "चैम्पियन ऑफ द चैम्पियंस" ट्रॉफी प्राप्त करते हुए बाएं से श्री एस.एस. यादव, मु. प्र. (राजभाषा), श्री रामगोपाल सागर, स.म.प्र. (राजभाषा); श्री योगेश जोशी, प्रेसिडेंट, एबीसीआई. श्रीमती सविता शर्मा, संपादक, यूनियन धारा एवं यूनियन सृजन, राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई;



Our Bank bagged the Express Intelligent PSU award for Big Data & Analytics in Technology Sabha PSU 2016 Award ceremony held on 19th November 2016 at Hyderabad, Telangana. Shri R. Kandasamy, General Manager, Department of Information Technology received the award from Shri Mohammad Mahmood Ali, Deputy CM of Telangana and Shri A S Ramasastri, Director, IDRBT.



भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2015-16 के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया. चित्र में माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री किरेन रिजिजू के कर कमलों से शीलड प्राप्त करते हुए श्री. एम. पी. सिंह, उप महाप्रबंधक गोरखपुर.

## The "Butterflying JAL-PARI"!

**Miss Alka**, the swimming enthusiast daughter of Shri Surender Singh, SWO-A of our Samalka Branch, New Delhi, is a class XII student.

This humble and down to earth swimmer dedicates all her success to Shri Sandeep Tokas and Gurdeep, her coaches in swimming, who identified her latent talent. Under their able guidance and daily practice, she honed her skills to bag awards not only at the state but also at the national levels too.



Winning accolades at the school and state level competitions like District & Haryana State, spurred her morale and with determination, more practice & hard work, she tied more feathers in her cap at the K. V. National aquatic meets also. Now with utter determination and hard work, she is preparing herself to boldly fight the real challenge of the international swimmers in near future.

Apart from swimming, this hardcore sportsman also loves music and dance. She is thankful to her parents who always stand beside her, specially her father, who is also her role model.

*'Union Dhara' wishes her all the success in her future 'aquatic' career! More power to her butterfly strokes!!*

## THE STEELY SWIMMER

**Master Gokul Raj R.**, the enthusiast of aquatic games, is son of Shri Ravikumar S., Branch Manager, Armenian Street Branch under R.O., Chennai.



Inspired by his role model Dr. A.P.J. Abdul Kalam, the great scientist and ably supported by his mother, he began his journey in the aquatic arena during his school days itself. With strong determination and training in the pool, slowly yet steadily he started mastering the aquatic games like breast stroke, back stroke, butterfly and freestyle and made his presence

felt in the swimming arena, mainly in inter-school and zonal level aquatic meets.

His hard work paid off and he represented at the CBSE - Nationals in Nov. 2015. Thanks to his coaches - Shri Mani and Shri Shanmugam under whose guidance he is honing his skills. He aspires to perform better at the nationals.

Having a good academic track record, he also participates in school drama and cricket. He is mad after solving the Rubic Cube puzzles of various sizes.

*'Union Dhara' wishes this swimmer all the best in his aquatic career!!*



नराकास, मद्रुरै द्वारा भाषिक क्षेत्र 'ग' के अंतर्गत वर्ष 2015-16 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य हेतु क्षे.का., मद्रुरै को प्रथम पुरस्कार दिया गया. मुख्य अतिथि डॉ. एम वी सुब्बुरामन, प्रो. अमेरिकन कॉलेज, मद्रुरै से क्षे.प्र. श्री जितेंद्र मणिराम, तथा श्री ऋषि शंकर चौधरी, राजभाषा अधिकारी राजभाषा शीलड ऑफ प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए.



नराकास, जालंधर से राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए क्षे.का., जालंधर को पुरस्कार प्राप्त हुआ. दिनांक 28.11.2016 को उप निदेशक, गृह मंत्रालय मा. प्रमोद कुमार शर्मा के कर-कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ. अजित मराठे, उ.म.प्र., एवं राजभाषा अधिकारी सुश्री रीना.



वर्ष 2015-16 में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट योगदान के लिए नराकास सम्बलपुर द्वारा क्षे.का. सम्बलपुर को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 29 नवंबर 2016 को श्री ओ.पी. सिंह, निदेशक, महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड के कर कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री एस.पी.कर, क्षे.प्र., सम्बलपुर तथा राजभाषा अधिकारी सुश्री तूलिका बिश्वास.

FACE IN THE UNION BANK CROWD



## Biking for the noble cause - MANOJ KUMAR CHOUDHARY

*Leh-Ladakh is a place for exploration and discovery particularly by road and hence always lure bikers. Here are the most amazing experiences for the adventure hungry bikers. Friends, I wish to introduce you all to one such Biker colleague who has diverted his biking skills for a social cause. He is **Mr. Manoj Kumar Choudhary**, Assistant Manager, CMRD, RO, AGRA. Hailing from a lower middle class rural family, he had no access to any motorbike even during his college days. Though no one from the family is a bike lover, his strong longing for a bike of his own, fascination towards cruise bikes and sense of adventure made him attracted towards biking. Initial opposition from family soon faded out when they all came to know that his adventure biking is dedicated for a social cause. Alongwith the adventure sports like trekking, hiking, riding, he also loves nature photography. This humble person is very thankful to his family, peers at the Bank and also the Regional Head who always inspire and support his biking adventures. In this candid interview, he details about his adventure bike rides for social cause.*

» **Who encouraged you on this noble mission? Who is your inspiration?**

My elder brother, who is from the Air Force, has been the supporting pillar for me. I am always inspired by the valour and courage of our armed forces and not by any particular individual.

» **What was the first reaction on your home front - any opposition?**

My parents were very hesitant initially. But my elder brother did support me and we succeeded in persuading them.

» **While going on such mission, did you have something "Bharat Jodo Mission" type feelings in your mind?**

Yes, of course. The ultimate aim is to spread the message of peace, unity and solidarity amongst people of different races and regions in the country. Every mission is an opportunity for self-experience, self-education and self-exploration.

» **How do you chalk out and prepare for such a herculean task? Any hurdles you face mid way? How do you overcome them?**

Pre-planning is not my cup of tea. For me, it is a spontaneous decision taken along with my biker-friends from the Bikers' Club. But I usually do ensure availability of basic spare parts of my bike, minimal food supplies for a couple of days, arrangements for night stays and appropriate clothing, shoes & riding gears. ID cards, documents of the bike, maps, Mobile power banks etc. are also kept with us.

» **Which one was your first mission?**

Trip to Badrinath soon after the devastating floods due to cloud burst was my first mission.

» **Tell us about your Uttarakhand trip on bike.**

Uttarakhand Trip was planned in the aftermath of the floods that ravaged the coastal Tamil Nadu districts affecting huge property and lives. This destination was chosen since the people of Uttarakhand had already witnessed the large scale devastation during the floods there in 2013 and I thought they would better understand the plight of the people of Tamil Nadu. The main aim was to create awareness about the plight of the flood affected people of Tamil Nadu and raise money and collect clothes as a primary helping hand at the time of distress. The trip to Baijnath was of approx. 1080 kms which took us 5 days to cover. I was accompanied by another Biker - an IT Professional from Agra.

» **How were you received by the common people?**

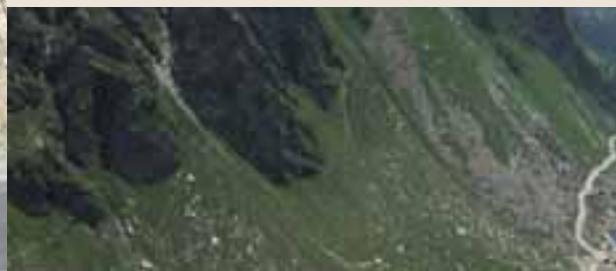
The response from the local people has been great and appreciable all along, usually encouraging and at times inspirational. They offered us night stay, free food apart from contribution to the noble cause.

» **What about the night stay during such missions?**

Night stays are arranged mostly in own tents as it is economical and adventurous. But at times, home stays, motels have to be chosen considering conditions and other factors.

» **What was their reaction?**

It has been my experience that common man is always the first one to share the concerns of people from other part of the country. They are willing to lend a helping hand to alleviate their plights. They always identify themselves with the greater cause and be in unity. However small, but they always do contribute even from their meagre income/resources. This is the attitude that is highly appreciable.





» **How do you cope up with the changing climatic condition and also language barriers?**

Changing climatic conditions are challenges during the biking expeditions- but these are part and parcel of the mission. Sometimes we take time to get ourselves acclimatise, but usually we take it in our stride and have to move on with the trip schedule. Language has never been a barrier so far, may be because all my trips are in the northern part of the country, where Hindi is spoken and understood by all and sundry. I think language is only one of the tools. If you try to communicate with gestures/signs, it also works.

» **Tell us about your Laddakh mission.**

It was a 16 days long trip, covering about 4500 kms from Agra to Laddakh through 6 states viz. Uttar Pradesh, Delhi, Haryana, Punjab, Jammu & Kashmir and Himachal Pradesh. Here, I was accompanied by one of my Biker friends. Arranged in June-July 2016, the trip was aimed at maintaining Peace and Unity at home turf at a time when our soldiers were fighting with enemies, both from across the border and the inhospitable weather conditions, at the highest battlefield in the world. During the trip we met our brave soldiers and offered them the famous "Petha" of Agra and conveyed them the message of solidarity of the common man, with our armed forces. Here I would like to share that during this trip, we had stayed overnight at Chang La, the second highest motorable road in the world at approx 17600 ft. above sea level, (where it is not ordinarily permitted, due to lack of sufficient oxygen). This was the most adventurous period of my life. We placed some camphor in a cloth and smelled it throughout the night to suffice our oxygen requirement.

» **What are the effects of such mission on the society as a whole and on youths in particular?**

A great sense of satisfaction and fulfilment from within, for me. When I realise that some of the objectives of my missions are met, even partially, it gives me

accomplishment for having done something good for the society and my countrymen, leaving behind caste, creed, community or boundaries. I would like the youth of my Country to be inspired by the message of peace and unity that my country has been symbolising since the ages and stay away from hatred.

» **What's new in the mind now? Any future plans?**

At this point of time, something like a longer trip of "Kashmir to Kanyakumari", "North-East expedition", "trekking upto the Everest Base Camp" are in my mind.

» **What's your philosophy of life? Has it any impact on your work?**

Zindagi Na Milegi Dobara. So till my last breath, I would strive to make my country a better place to live in, on the planet earth. My philosophy of life has been the guiding factor of my work culture. My passion for adventure rides with a cause have shaped me to be an honest, sincere, responsible, considerate and compassionate personality.

» **List out your awards.**

No formal awards as such. But many appreciations are received from the civil society organisations engaged in social service; apart from the applause of the people I meet during my various trips, which are more important for me.

» **Any message for our youths/young bikers? Young blood always go after the speed, how can we channelize this speed for a noble task?**

Biking is not just an adventure; dedicate it for a cause. Discipline and safety are must for a responsible biking. I strongly feel that self confident youths of our country with courage, conviction and dynamism can reshape the destiny of our Motherland. Speed is harmonious with discipline and safety. Young blood should be engaged in a meaningful way so that the passion for speed is translated to betterment of the country and society as a whole.

» **Any other information you would like to share with our readers?**

There was an incident of my encounter with a leopard, at Sattal, Nainital, Uttarakhand, during my Baijnath trip. The leopard came very close to our tents, but fortunately, perhaps he already had his dinner !! Also above all, I have made so many friends outside the Bank, throughout the country, only because of the "Bikers' Club". It is a pan India network of like-minded peers and any help, assistance at any corner of the country is just a couple of hours away.

'Union Dhara' wishes him all the best in his future biking endeavours. More power to his noble missions!

**- Supriya Nadkarni**

Union Dhara, C.O., Mumbai.



## केंद्रीकृत कार्यक्रम



Shri Arun Tiwari, Chairman and Managing Director, Union Bank Of India, flanked by Shri R K Verma and Shri A K Goel Executive Directors, Union Bank Of India at the press conference on the occasion of announcement of Financial Results for quarter/half year ended September 30, 2016.

On the eve of the National Unity Day, all the executives of Central Office, Mumbai along with the staff members participated in a rally.



## कॉरपोरेट सौशल रिस्पॉन्सिबिलिटी



29.10.2016 को गाजीपुर में वृहद मुद्रा ऋण एवं स्टैंड अप इंडिया शिविर का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि माननीय श्री मनोज सिन्हा, संचार (स्वतंत्र प्रभार) व रेल राज्य मंत्री, भारत सरकार, श्री मोहम्मद मुस्तफा, संयुक्त सचिव, वित्तीय सेवाएं विभाग, भारत सरकार और श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, यूनिनियन बैंक ऑफ इंडिया उपस्थित रहे. साथ में हैं श्री लाल सिंह, क्षेत्र महाप्रबंधक वाराणसी अंचल.

दिनांक 26.11.2016 तथा 27.11.2016 को टीपीगूडेम शाखा, नोक़ेका, विजयवाड़ा द्वारा वित्तीय समावेशन अभियान के अंतर्गत शिविर का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में बैंक के ग्राहकों तथा आम जनता ने भाग लिया.



## ग्राहक संबंध



Light commercial Vehicle / PMMY loan distribution camps were organized at Ashram Road Branch on the eve of the inauguration of the second 24X7 e-lobby of Ahmedabad Region Shri K P Acharya, Field General Manager, FGMO Ahmedabad and Shri Ashok Kumar Sirohi, Regional Head Ahmedabad in presence of esteemed customers as well as staff members of Ashram Road.

क्षेत्रीय कार्यालय हावड़ा में दिनांक 18.11.2016 को ग्राहक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें अंचल प्रमुख, श्री सुनील गुप्ता; क्षेत्र प्रमुख, श्री वी के एस साखी; नए क्षेत्र प्रमुख, श्री राजेश कुमार; मुख्य प्रबन्धक, सुश्री पूनम सहाय, ऋण विभाग तथा अन्य स्टाफ सदस्य क्षेत्र के गणमान्य ग्राहकों के साथ उपस्थित थे.





दिनांक 09 सितंबर, 2016 को आयोजित वित्तीय समावेशन सम्मेलन में श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने भाग लिया, जिसमें आरबीआई के डिप्टी गवर्नर श्री एस.एस. मुंदड़ा, सिडबी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. क्षत्रपति शिवाजी, मध्य प्रदेश के मुख्य सचिव श्री एंटनी डीसा मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे।



दिनांक 27.10.2016 को माननीय प्रधानमंत्री महोदय द्वारा अंगीकृत गाँव जयापुर, वाराणसी में अपराहन 01:00 बजे से यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन यूनियन बैंक जयापुर शाखा द्वारा शिविर के माध्यम से किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता यूनियन बैंक ऑफ इंडिया वाराणसी के क्षेत्र प्रमुख श्री योगेंद्र सिंह द्वारा की गई। इसमें श्री रंजीत सिंह, अग्रणी जिला प्रबन्धक, वाराणसी, श्री अजय प्रसाद, मुख्य प्रबन्धक सतर्कता विभाग, क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारी, जयापुर शाखा प्रमुख एवं ग्राम प्रधान श्री नारायण पटेल द्वारा सक्रिय रूप से भाग लिया गया। शिविर में जयापुर, जखिनी एवं आस पास के गाँवों से बड़ी संख्या में ग्राहक उपस्थित थे, जिन्हें श्री योगेंद्र सिंह, क्षेत्र प्रमुख वाराणसी द्वारा भ्रष्टाचार के विरुद्ध सतर्क रहने तथा भ्रष्टाचार का जड़ से

उन्मूलन करने के लिए सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई गई। बैंकिंग संव्यवहार या लेन-देन के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में ग्रामीणों को अवगत कराया गया। मुख्य प्रबन्धक, सतर्कता विभाग द्वारा लोगों को ऋण आवेदन/ जमा-निकासी के समय सतर्क रहने की सलाह दी गई।



## राजभाषा निरीक्षण - गृह मंत्रालय



क्षे.का. हैदराबाद में दिनांक 25.10.2016 को हुए निरीक्षण के दौरान श्री एम वेंकटेश, क्षेत्र प्रमुख हैदराबाद ने श्री टेकचंद, उपनिदेशक(का) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, बंगलूर का स्वागत पुष्पगुच्छ देकर किया. डॉ. विष्णु भगवान,सदस्य सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) हैदराबाद तथा श्री ए के अग्रिहोत्री,उप क्षेत्र प्रमुख हैदराबाद भी इस अवसर पर उपस्थित थे.



स्टाफ महाविद्यालय, बंगलूर में सतर्कता जागरूकता एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु आयोजित समारोह में अपने स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए प्राचार्य श्री अतुल कुमार.

## नये कदम

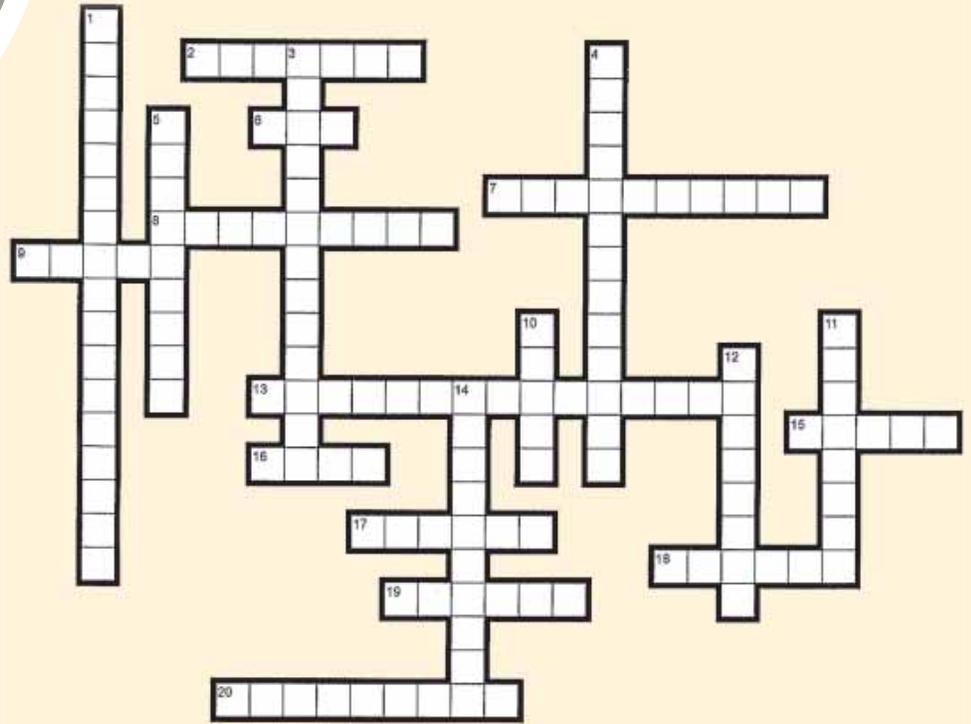


बैंक के स्थापना दिवस पर क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद के अंतर्गत "शाहीबाग शाखा" में ई-लॉबी का शुभारंभ करते हुए संयुक्त पुलिस कमिश्नर, अहमदाबाद, श्री पीयूष पटेल व क्षेत्र प्रमुख श्री अशोक कुमार सिरौही. साथ में हैं शाखा प्रबंधक, सुश्री पुर्णिमा मेहता एवं अन्य गणमान्य.





# PREVENTIVE VIGILANCE PUZZLE-CLUES



## ACROSS

2. A program designed to perform malicious activities in the infected device is a -----(7)
6. Stipulated time limit for completion of a departmental enquiry is ----- months (3)
7. An employee arrested by the police and under custody for more than -----hours will be considered as under 'deemed suspension' (10)
8. The First State to enact Right To Information Act in India (9)
9. PVC meetings should be held at least once in a ----- (5)
13. The Right to Information Act came into force in the year (15)
15. PVCs to be constituted mandatorily in branches having staff strength of -----or more (5)
16. The process of catching corrupt public servants red-handed while they demand and take bribe is popularly called a -----(4)
17. Preventive Vigilance Committees are formed at the ----- Level (6)
18. A citizen centric initiative of CVC wherein citizens can join hands with the CVC in fighting corruption (6)

19. ----- % of staff members should be co-opted in the PVC at each Branch (6)
20. An agent recruited by antisocial elements to get access to his account is called a -----(9)

## Down

1. Central Vigilance Commission was set up in the year (17)
3. A person who exposes misconduct, alleged dishonest or illegal activity occurring in an organization in which he himself is a part of (13)
4. Who said "You must be the change you wish to see in the world" (13)
5. CVC was set up as per recommendations of - ----- Committee (9)

10. Any behavior by which one person intends to gain a dishonest advantage over another is termed as ----- (5)
11. The stage of vigilance that involves disciplining the employee is called ----- vigilance (8)
12. ----- are symptoms or indicators of frauds and white collar crimes (8)
14. A staff can lodge a complaint through 'whistle Blower module' on ----- portal on Bank's intranet (UBINET) (10)

**I.K. Venugopalan**

S.T.C. Bangalore



# दिसम्बर 2016 तिमाही के दौरान बैंक द्वारा जारी महत्वपूर्ण परिपत्रों की सूची

(क्रमांक के अनुसार)

क्र. सं.	परि. क्र.	जारी तिथि	विभाग	विषय
1	00613	13/10/2016	आरबीडी	सिंचाई के लिए सोलर फोटोवोल्टिक प्रणाली प्रारंभ करने के लिए योजना
2	00615	18/10/2016	सीएडी	फिनेकल में फॉर्म 60 पंजीकरण में परिवर्तन
3	00617	21/10/2016	पीबीओडी	संप्रभु स्वर्ण बॉण्ड योजना-2016-17-श्रृंखला III (24 अक्टूबर 2016 से 2 नवंबर 2016)
4	00618	21/10/2016	सीएएनआयडी	जोखिम आधारित आंतरिक लेखापरीक्षा (RBIA) – Submission and Closure of Flash
5	00624	27/10/2016	सीएएनआयडी	वर्ष 2016-17 के लिए जोखिम आधारित आंतरिक लेखापरीक्षा नीति
6	00625	29/10/2016	सीपीएमएसएमई	ऋण संविभाग का प्रबंधन – Revision in Marginal Cost of Funds based Lending Rate (MCLR) w.e.f. 01.11.2016
7	00626	29/10/2016	सीपीएमएसएमई	ऋण संविभाग का प्रबंधन – Modification in Policy on Framework for revival and rehabilitation of MSMEs 2016-17
8	00628	02/11/2016	आरएमडी	कारोबार निरंतरता योजना नीति 2016-17
9	00630	03/11/2016	पीबीओडी	अंतर्देशीय/एनआरओ मियादी जमाओं पर ब्याज दरों में संशोधन
10	00633	05/11/2016	एसएसडी	परिसर, संपत्ति एवं रखरखाव के लिए नीति: 2016-17
11	00635	07/11/2016	डिजिटल बैंकिंग	यूनियन कनेक्ट-सोशल मीडिया में अधिकाधिक उपस्थिति दिशानिर्देश एवं आचार संहिता
12	00639	08/11/2016	डिजिटल बैंकिंग	98th स्थापना दिवस 2016 की पूर्वसंध्या पर डिजिटल उत्पादों का अभियान
13	00638	08/11/2016	आरएमडी	धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन नीति 2016-17
14	00640	09/11/2016	डीआईटी	सीबीएस में कार्य हेतु ₹500 एवं ₹1000 के नोटों के निकासी पर भारतीय सरकार के दिशानिर्देश
15	00642	09/11/2016	डिजिटल बैंकिंग	निर्दिष्ट बैंक नोटों पर क्या करें क्या न करें
16	00637	10/11/2016	डिजिटल बैंकिंग	सोशल मीडिया नीति 2016-17
17	00644	10/11/2016	डिजिटल बैंकिंग	विनिर्दिष्ट बैंक नोटों पर स्पष्टीकरण
18	05046	10/11/2016	डीआईटी	जीबीएम मॉड्यूल में पीपीएफ और एसएसए के लिए स्थायी अनुदेश के कार्यान्वयन की सुविधा
19	00647	11/11/2016	डिजिटल बैंकिंग	मूल्यवान ग्राहकों के लिए वीसा प्लेटिनम इन्टरनेशनल डेबिट कार्ड
20	00648	11/11/2016	डिजिटल बैंकिंग	साझेदारी/एचयूएफ खातों को क्लासिक डेबिट कार्ड जारी करना
21	00649	11/11/2016	डिजिटल बैंकिंग	रुपे क्रेडिट कार्ड-रुपे क्रेडिट कार्ड को जारी करना
22	05051	12/11/2016	डीआईटी	OHD नोट के अदला बदली के लिए NOTEEX मेनू में परिवर्तन
23	00655	15/11/2016	आरएमडी	ऋण संविभाग का प्रबंधन – Addendum to Credit Risk Management Policy 2016-17
24	00654	15/11/2016	पीबीओडी	पुराने उच्च मूल्य वर्ग (1000 एवं 500) के नोटों के विनिमय के लिए विनिमय मानदंडों का अनुपालन
25	00655	15/11/2016	आरएमडी	ऋण संविभाग का प्रबंधन – Addendum to Credit Risk Management Policy 2016-17
26	00666	22/11/2016	सीपीएमएसएमई	ऋण संविभाग का प्रबंधन – Revision in Service Charges for Domestic Rupee Advances

अमित महतो  
यूनियन धारा, कें.का., मुंबई





**1 What is the theme of the 2016 Vigilance Awareness Week**

- A. Combating Corruption- Technology as an enabler
- B. Public Participation in promoting integrity and eradicating corruption
- C. Preventive vigilance as a tool of Good Governance
- D. Promoting Good Governance: Positive Contribution of vigilance

**2 Name of portal in Union Pariwar for vigilance is**

- A. Union Vigil
- B. Union Vigilance
- C. U Vigil
- D. There is no such portal on our intranet

**3 Watching activities of employees / customers, verification of property returns of employees comes under**

- A. Preventive vigilance
- B. Punitive Vigilance
- C. Detective Vigilance
- D. All the above

**4 Tendering first stage of advice is a part of**

- A. Preventive vigilance
- B. Punitive Vigilance
- C. Detective Vigilance
- D. All the above

**5 Whistle Blower policy of the Bank was introduced in the year**

- A. 2004
- B. 2005
- C. 2006
- D. 2007

**6 Who can be a whistle blower under whistle blower policy of an organization**

- A. An employee of the said organization
- B. Customer
- C. RTI Activist
- D. None of the above

**7 As per the Whistle Blower Policy, in order to protect the identity of the complainant, the envelope should be super scribed as**

- A. Strictly confidential and not to be revealed
- B. Right to Information
- C. For Public Information
- D. None of the above

**8 The Chief Vigilance officer of a Bank is appointed by**

- A. RBI
- B. Ministry of Finance
- C. Home Ministry
- D. Commission

**9 Important checklists relating to Credir including Retail, Agriculture, Other loans etc, Monitoring, Forex, Do's Don'ts etc. are available in UBINET in**

- A. E Manual
- B. E Doc
- C. Other Useful Links
- D. Knowledhe Hub in Union Vigil

**10 Email Spoofing is**

- A. Creation of email messages with a forged sender address
- B. Sending mail to one but due to virus reaches to many
- C. Email containing virus which once opened will steal all the personal data
- D. International mail containing malware

**11 Slogan of Vigilance Department is**

- A. Be Alert, Be Safe
- B. Be Alert, Create Value
- C. Pprotect the system, system will protect you
- D. Be Vigilant

**12 The CVC observes every year the "Vigilance Awareness Week" on birth anniversary of**

- A. Netaji Subhash Chandra Bose
- B. M K Gandhi
- C. Sardar Vallabhbhai Patel
- D. Lokmanya Tilak

**13 Jan Lokpal Bill is also known as**

- A. Citizen's Right Bill
- B. Citizen's Ombudsman Bill
- C. Citizen's Welfare Bill
- D. Citizen's Right to Information Bill

**14 Ponzi Scheme is**

- A. A scheme floated by MFIs
- B. A scheme in which investors are paid from the money collected from new investors instead of the scheme's earnings.
- C. A scheme in which returns is much higher than normal schemes
- D. A scheme which is not approved by RBI

**15 When was the observation of Vigilance Awareness Week started by the Central Vigilance Department**

- A. 1998
- B. 1999
- C. 2000
- D. 2005

**16 From where CBI derives its power & authority to investigate a corruption case**

- A. CVC Act
- B. DPSE Act
- C. Prevention of Corruption Act
- D. Indian Penal Code

**17 How many times Lok Pal Bill was been introduced in Indian parliament before it was finally passed in 2013**

- A. 8
- B. 9
- C. 10
- D. 11

**18 What needs to be filled in Annexure E in Assets Liability Statement format**

- A. Statement of Immoveable Property
- B. Statement of Moveable Property
- C. Statement of Shares/ Securities acquired under promoter quota
- D. Statement of Debt & Liabilities

**19 Lokayukat is a body for**

- A. States
- B. India
- C. Union Territories
- D. All of the above

**20 The cut off limit for monitoring transactions is**

- A. All transactions (irrespective of amount) of suspicious nature
- B. All transactions of Rs.10 lacs & above
- C. Both A & B
- D. None of the above

**21 Which is an intergovernmental body set to combat money laundering**

- A. Financial Action task force on Money laundering (FATF)
- B. Financial Action force
- C. Anti corruption Bureau
- D. Lokpal Body

**22 Who was the first Chief vigilance commissioner of India**

- A. Nittar srinivasan Rao
- B. Pradeep Kumar
- C. Rajiv Mathur
- D. Vinod Rai

**23 Who is the Permanent member of of the Preventive Vigilance Committee formed in a Branch**

- A. Head of the Branch
- B. Cashier
- C. Credit Officer
- D. None of the above

**24 Online complaint can be done by Whistle Blower by using**

- A. at email unionvigil@unionbankofindia.com
- B. At personal mail id of Chief Vigilance Officer
- C. Using separate link 'Blow Your Whistle' in Union Vigil in UBINET
- D. No online option available, only hardcopy in sealed envelope is allowed

**25 RTI Act was enacted in the year**

- A. 2003
- B. 2004
- C. 2005
- D. 2006

**Nishikant Goyal**

Staff College, Bengaluru



## इलायची (छोटी)

इलायची के फल एवं सुगंधित कृष्ण वर्ण के बीजों से भला कौन अपरिचित हो सकता है! भारतीय पाक-विधा में यह इस तरह से रची-बसी है कि इसका प्रयोग मसालों से लेकर मिष्ठानों तक में किया जाता है. इसके बीजों में एक सुगंधित तेल होता है, जिसमें 'सेनिओल' कि प्रचुर मात्रा होती है. यह कफ, वातशामक तथा पित्तवर्धक है. यह रोचन, दीपन तथा पाचन है.

- इलायची पीसकर मस्तिष्क पर लेप करने से एवं बीजों को पीसकर सूंघने से सिर दर्द में आराम मिलता है.
- मुखपाक में इलायची पीसकर शहद में मिलाकर छालों पर लगायें.
- इलायची और लौंग का तेल बराबर-बराबर मात्रा में लेकर दांतों पर मलने से दंत शूल में आराम होता है.
- दंत शूल में 4-5 इलायची के फल को 400 मि.ली. पानी में उबालकर शेष बचे कोढ़े से कुल्ला करने से दंत शूल में लाभ होता है.
- दमा (सांस की बीमारी) में इलायची का 10-20 बूंद तेल मिश्री मिलाकर नियमित सेवन करें.
- 2 ग्राम सौंफ के साथ इसके 8-10 बीजों का सेवन करने से पाचन शक्ति की निर्बलता मिटती है.
- अधिक केले खाने पर यदि अजीर्ण हो जाये तो इलायची खाने से हाजमा ठीक हो जाता है.
- इसके बीजों के चूर्ण में बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर दिन में 2-3 बार 3 ग्राम की मात्रा में इस मिश्रण को सेवन करने से गर्भवती को भूख खुलकर लगती है.
- इसके बीजों का 1ग्राम चूर्ण काले नमक के साथ लेने से पेट दर्द में लाभ होता है.
- इसके बीजों का चूर्ण और सोंठ का चूर्ण-दोनों की एक साथ 1 चम्मच फंकी लेने से मंदाग्नि मिटती है.
- उल्टियों में इलायची और पुदीना बराबर-बराबर 2 से 3 ग्राम की मात्रा में उबालकर सेवन करायें.
- इसके 1 ग्राम बीजों का चूर्ण 10 ग्राम बेल गिरी के साथ नियमित प्रातः-सायं सेवन करने से अतिसार (डिसेंट्री) में लाभ होता है.
- इलायची के बीजों का चूर्ण समान भाग मिश्री का बूरा मिलाकर 2-3 ग्राम की मात्रा का नियमित प्रातः-सायं सेवन करने से मूत्र संबंधी विकारों से निजात मिलती है. पेशाब तुरंत खुलकर होने लगता है.
- छिलकों के सहित इलायची 10 नग लेकर जौ कूटकर 250 ग्राम दूध और 250 ग्राम जल के साथ पकावें, दूध मात्र शेष रहने पर छानकर उसमें थोड़ी मिश्री मिला दिन में चार बार पिलायें. पेशाब की जलन व रुकावट दूर होती है.
- इसका चूर्ण खरबूजे के बीजों की मींगी और मिश्री मिलाकर 2-3 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से गुर्दे की पथरी में लाभ होता है.
- पिंसी हुई राई के साथ इलायची का चूर्ण 2-3 ग्राम की मात्रा में नियमित लेने से लिवर के विकारों में लाभ होता है.
- वात के कारण उत्पन्न वेदना में भी इसका 1-2 ग्राम चूर्ण का नियमित सेवन दिन में तीन बार करने से लाभ होता है.
- जीर्ण ज्वर आदि सब प्रकार के ज्वर में इलायची के बीज 2 भाग तथा बेल वृक्ष के मूल की छाल 1-1 भाग जौ कूटकर 1 चम्मच मात्रा दूध और पानी में मिला जब तक दूध शेष रहे पकावें और नियमित 20 मि.ली. सुबह दोपहर सायं सेवन करने से लाभ होता है.



## मधुयष्टि

मधुयष्टि अर्थात् मुलेठी से सब परिचित हैं. यह गैसनाशक, पित्तशामक, वायुदोष को शांत करने वाली, मीठी, रेचक, तथा रक्त-स्थापन होती है. पित्त-वायुनाशक, कफ, अरुचि, हृदय रोग, मूत्र उत्सर्जन की पीड़ा को दूर करने वाली होती है.

- किसी भी प्रकार की सिरदर्द में मुलेठी का चूर्ण एक भाग, चौथाई भाग कलिहारी का चूर्ण तथा थोड़ा सा सरसों का तेल मिलाकर नासिका में नसवार की तरह सूंघने से लाभ होता है.
- मुलेठी के काढ़े से नेत्रों को धोने से नेत्रों के रोग दूर होते हैं. इसकी जड़ के चूर्ण में बराबर मात्रा में सौंफ का चूर्ण मिलाकर एक चम्मच प्रातः-सायं खाने से आंखों की जलन मिटती है तथा नेत्र ज्योति बढ़ती है.
- मुलेठी को पानी में पीसकर, उसमें रुई का फाहा भिगोकर नेत्रों पर रखने से नेत्रों की लालिमा मिटती है.
- मुलेठी की जड़ का टुकड़ा शहद लगाकर चूसते रहने से मुह के छालों में लाभ होता है.
- स्वर-भंग में मुलेठी को मुंह में रखकर चूसने से लाभ होता है.
- मुलेठी को पानी में पीसकर शरीर पर लेप करने से शरीर की रंगत निखरती है.
- मुलेठी के काढ़े से बाल धोने से बाल बढ़ते हैं.
- मुलेठी एवं तिल को भैंस के दूध में पीसकर सिर पर लेप करने से बालों का झड़ना बंद हो जाता है
- 2 चम्मच मुलेठी का चूर्ण और 3 चम्मच शतावर का चूर्ण एक कप दूध में उबालें, जब दूध आधा रह जाये, आग पर से उतार लें. इसमें से आधा सुबह और आधा शाम को एक कप दूध के साथ सेवन करें. कुछ दिनों में ही प्रसूता माता को दूध अधिक आने लगेगा.
- मुलेठी को चूसने से प्यास मिटती है.
- खांसी में मुलेठी का टुकड़ा मुंह में रखकर चूसने से राहत मिलती है.
- इसका 20-25 ग्राम काढ़ा प्रातः-सायं पीने से श्वास नलिका साफ हो जाती है.
- सूखी खांसी में कफ पैदा करने के लिए इसकी 1 चम्मच मात्रा को मधु के साथ दिन में 3 बार चटाना चाहिये.
- उदर और आंत के घाव में इसकी जड़ का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में एक कप दूध के साथ दिन में तीन बार सेवन करते रहने से अल्सर कुछ ही हफ्तों में भर जाता है. (पथ्य-मिर्च मसालों से परहेज रखें.)
- मुलेठी को चूसने से हिचकी दूर होती है.
- पांडु रोग में एक चम्मच मुलेठी चूर्ण मधु के साथ मिलाकर, या इसका काढ़ा पीने से लाभ होता है.
- एक चम्मच मुलेठी का चूर्ण, आधा चम्मच शहद और एक चम्मच घी मिलाकर एक कप दूध के साथ सुबह-शाम रोजाना 5-6 हफ्ते तक सेवन करने से बल बढ़ता है.



अनीता उपेन्द्र भोबे  
यूनियन धारा.कै.का., मुंबई

# आप की पार्ती Opinion Gallery



"Let me first congratulate the team of "Union Dharma" for another fabulous June 2016 issue with focus on Indian Folk Culture. India is beautifully enshrined in its constitution as the Sovereign Socialist Secular Democratic Republic country. It is, perhaps, the longest written constitution of any sovereign country in the world. This is to state that the country is secular in absolute sense. The biggest treasure preserve of India is its rich and varied cultures and their harmonious integration binds the people together. The collective celebration of various festivals and beliefs across the country is a reflection of this glorious culture and bears ample testimony to this fact. What I like and also respect the most about "Union Dharma" is every issue that comes out is a special one either focusing on different states of Indian union and their glorious culture & heritage or on other issues of industry relevance or national importance, which is nevertheless a good attempt in the direction to bring to the readers a wealth of information before them so as to make a deeply engrossed reading. The important thing is that there has to be a constant urge from within to explore, develop, grow and prosper. It is evidently seen in "Union Dharma". Congratulations to the entire team of "Union Dharma".

**Srinivasan Umashankar,**  
Bank of Maharashtra, Nagpur.

"यूनियनाइट की मुखर अभिव्यक्ति स्वरूप 'यूनियन धारा' का जनवरी-मार्च 2016 अंक मिला। पत्रिका का विस्तार आपकी बैंककर्मी प्रियंका शर्मा की पल में हजार हिलोरें लेना चाहता है।' पत्रिका की वैविध्यपूर्ण छटा मन की उड़ान के लिए खुला आसमान देने को प्रस्तुत है, अस्तु विजय कुमार पाण्डेय की इन पंक्तियों को कोट करने का लोभ संवरण नहीं हो पा रहा है -

**सपनों की उड़ान हो, नीला आसमान हो  
परिंदों का-सा कौतुहल, हर जन में विद्यमान हो  
ना रहे किसी के पैरों में बंधन की बेड़ियां  
विश्व में हमारा भारत सर्वशक्तिमान हो।**

'संपादकीय' में नए भारत के स्वप्नद्रष्टा डॉ. ए.पी.जे. कलाम पर प्रस्तुत आपका यह चिंतन वरेण्य और समीचीन है कि डॉ. कलाम जैसी विभूति ही देश का नया इतिहास रच सकती है, क्योंकि उसमें पुराने इतिहास की महत्ता और उपयोगिता को पुनर्जीवित करने की सामर्थ्य होती है। वे धरती पर रहकर, उस पर चलकर आसमान की सोचने वाले महाव्यक्तित्व थे। पत्रिका में '2020 का भारत' पर विभिन्न कोणों से प्रचुर सामग्री दी गई है। डॉ. कलाम को श्रद्धांजलि देने के लिए यह उत्तम हो सकता था, आपने इसे सफलता के साथ संपन्न किया है। इस सराहनीय प्रयास के लिए आपको साधुवाद।

सामाजिक और आर्थिक विषमता के उन्मूलन पर केंद्रित 'जैम ट्रिनिटी' के माध्यम से दिबाकर लेका ने देश के विकास के लिए सरकार की संकल्पना एवं योजना को बड़ी कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है, उन्हें बढ़ाई, 'जल ही कल का हल है' बात बहुत भाई, भाई! राम गोपाल सागर बढ़ाई, बैंक में कार्यरत प्रसिद्ध फुटबाल खिलाड़ी एवं विश्लेषक श्री मचाट मोहन के साथ सुप्रिया नाडकर्णी का साक्षात्कार-वार्ता अत्यंत रोचक है, जिसमें पाठक को फुटबाल खेल की बारीकियों का भी परिचय मिलता है। कुल मिलाकर ऐसा रोचक एवं ज्ञानप्रद अंक निकालने के लिए आपको बढ़ाई. शुभकामनाओं सहित."

**ओम प्रकाश तिवारी**  
भारतीय स्टेट बैंक, कॉरपोरेट केंद्र, मुंबई

यह जानकर बहुत ही अच्छा लगा कि आपके बैंक को भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा अनेक राजभाषा शील्डों से नवाजा गया है। आपको न केवल उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु रिज़र्व बैंक शील्ड प्राप्त हुई है बल्कि 'यूनियन धारा' और 'यूनियन सृजन' दोनों ही पत्रिकाओं को भी रिज़र्व बैंक गवर्नर डॉ. रघुराम जी. राजन के कर कमलों से राजभाषा शील्ड प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह सब आपके कुशल नेतृत्व के कारण ही संभव हुआ है। इन उपलब्धियों के लिए आप कृपया मेरी बढ़ाई स्वीकार करें।

इस सुंदर और उच्चस्तरीय प्रकाशन के लिए भी आप कृपया मेरी बढ़ाई स्वीकार करें। पत्रिका के संपादक और संपादक मंडल के प्रत्येक सदस्य को भी बहुत बहुत बढ़ाई. आशा है भविष्य में भी पत्रिका इसी प्रकार प्रेषित करते रहेंगे. शुभकामनाओं सहित.

**राजिंदर सिंह बेगली,**  
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)  
पंजाब एंड सिंध बैंक, दिल्ली

Received Union Dharma on mail. Very colourful and beautiful magazine. Each and every artical is excellent and readable. Quality wise it is number one magazine. Keep it up. My best wishes to you.

**Dr Usha Sehgal**  
Rtd. Unionite,  
Chandigarh.

